अमूल्य शास्त्र दानदाता

जैन स्तम्भ दानवीर

स्व० राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी जौहरी

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकन्दराबाद (दक्षिण)

जैन समाजके धर्म धुरंधर

लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी

अमूल्य शास्त्र दानदाता
जैन स्तम्भ दानवीर
जैन प्रभावक धर्म धुरंधर
जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण)
S.JWALAPRASHAD
लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी

मुख्योपकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य सद तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझ मायले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बड़ा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये उनके सहायसे ही शास्त्रोद्धार रूप महा कार्य हैद्राबाद में हुए इस लिये इस कार्य के मुख्योपकारी आपही हुए जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे व आपही के कृतज्ञ होंगे

शिष्य अमोल ऋषि

उपकारी महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्य पाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!

आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आपके परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा

दास अमोल ऋषि

॥ अष्टमउपाङ्ग-निरयावलिका सूत्र ॥

तेण कालेण, तेण समएण, रायगिहणाम णयरे होत्था वण्णओ, गुणसिल चइए वण्णओ पुढविसिला पट्टए वण्णओ ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्मे नाम अणगारे जाइसपन्ने, जहा केसीकुमार समणे जाव पचहिं अणगार सएहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणु पुव्वि

उस काल उस समय में राजग्रही नाम का नगर ऋद्धी कर समृद्धी कर वर्णन करने योग्य था उस के ईशान कौन में गुणसिल नामक चैत्य यक्ष का मंदिर बगीचे युक्त था उस बगीचे के मध्य अशोक वृक्ष था उस के नीचे एक उत्तम रत्नों वाला पृथ्वी शिला का पट था, इन सब का वर्णन उववाई सूत्रानुसार करना ॥ १ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के शिष्य पंचम गणधर आर्य सौधर्म स्वामी नाम के अणगार जातिवंत यावत् केशी कुमार श्रमण के समान पांच सो साधु से परिवर्ये

जाव सवेत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं, एवं उवगाण पचवग्गा पण्णत्ता तंजहा—निरयावलियाओ, कप्पवडं-सियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलीयाओ, वण्हिदसाओ ॥ ४ ॥ जइण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेण उवगाणं पचवग्गा पण्णत्ता, तंजहा निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ पढमस्सण भंते ! वग्गस्स उवगाण निरयावलियाण जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ? एवं खलु जम्बु! समणेण उवगाण पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा (गाहा) काले, सुकाले, महाकाले, कण्हे, सुकण्हे,

श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने उपांगका क्या अर्थ कहा है ! यों निश्चय अहो जम्बू ! श्रमण भगवत श्री महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने उपांग के पांच वर्ग कहे हैं तद्यथा १ निरियावलिका, २ कल्प वर्तंसिका, ३ पुष्फिया, ४ पुष्पचूलिका, और ५ वण्हि दशा ॥ ४ ॥ यदि अहो भगवन् ! उपांग के पांच वर्ग कहे हैं निरियावलिका यावत् वण्हि दशा तो अहो भगवन् ! प्रथम वर्ग निरियावलिका का श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने कितने अध्ययन कहे हैं? यों निश्चय अहो जम्बू ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी उपांग के प्रथम वर्ग निरियावलिका के दश अध्ययन कहे हैं तद्यथा—१ काला कुमार का, २ सुकाला कुमार का, ३ महाकाला कुमार का,

चरेमाण जेणेव रायगिहे णयरे जाव अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ परिसा निग्गया, धम्मोकहिओ, परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी अज्ज जंबूणामं अणगारे समचउरंस संठाण संठिए जाव संखित्तविउल तेयलेसे, अज्ज सुहम्मस्स अणगारस्स अदूर सामंते उड्ढंजाणू जाव विहरइ ॥ ३ ॥ तएणं से भगवं जंबू जायसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—उवगाणं भंते ! समणेणं

विचरते हुवे पूर्वानुपूर्व चलते हुवे ग्रामानुग्राम उल्लंघन करते हुवे सुखसुख से विहार करते हुवे जहां राजग्रही नगर का गुणसिला नामक चैत्य था वहां आए, यथाप्रतिरूप अवग्रह ग्रहण करके सत्तरह प्रकार संयम बारह प्रकार के तप से अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे परिषद् आई, धर्म कथा सुनाई, परिषद् पीछी गई ॥ २ ॥ उस काल उस समय में आर्य सौधर्म स्वामी के शिष्य आर्य जम्बू स्वामी नामक अनगार समचतुस्र संस्थान से संस्थित यावत् विस्तीर्ण तेजो लेश्या को संक्षेप प्रगट हुवे हैं उसे गुप्त कर रखी थी व आर्य सौधर्म स्वामी से बहुत दूर नहीं तैसे ही बहुत ही नजीक नहीं ऊर्ध्व घुटने नीचे मस्तक युक्त धर्म ध्यान ध्याते हुवे विचर रहे थे ॥ ३ ॥ उस वक्त में भगवंत जम्बू स्वामी को प्रश्न पूछने की अभिलाषा हुई यावत् सौधर्म स्वामी को वंदना नमस्कार कर इस प्रकार प्रश्न पूछने लगे—अहो भगवन् !

कोणियस्सरण्णो पउमावईणाम देवी होत्था सकुमाल पाणिपाया जाव विहरई ॥ ८ ॥ तत्थण चंपाएणयरीए सेणियस्सरण्णो भज्जा, कोणियस्सरण्णो चुल्लमाउया, काली णाम देवी होत्था सुकुमाल जाव सुरूवा ॥ ९ ॥ तएण से काल कुमारे अन्नया कयाई तिहिंदन्ती सहस्सेहिं तिहिंआस सहस्सेहिं, तिहिंरह सहस्सेहिं तिहि मणुय-कोडीहिं, गरुलवूही एक्कारसमण खंडेण कोणिएण रण्णा सद्धिं रहमूसल संगामे उवयाए ॥ १० ॥ तएण तीसेकालीएण देवीए अन्नयाकयाई कुटुंबजागरिय

करता है ! वह महा मलयाचल महा हेमवंत पर्वत समान नरेन्द्र था ॥ ७ ॥ उस कोणिक राजा के पद्मा-वती नाम देवी थी, वह सुकुमाल हाथ पांव की यावत् पांचों इन्द्रियों के सुख भोगती विचरती थी ॥ ८ ॥ तहां चम्पा नामक नगरी में श्रेणिक राजा की भार्या कोणिक राजा की छोटी माता काली नाम की देवी रहती थी वह सुकुमाल यावत् सुरूपा थी ॥ ९ ॥ उस काल कुमार नामक कुमार अन्यदा किसी वक्त तीन हजार घोड़े, तीन हजार हाथी, तीन हजार रथ और तीन क्रोड मनुष्य, इतनी सेना के परिवार से परिवरा हुआ गरुड़ व्यूह (पीछे थोड़ा आगे बहुत) संग्राम में इग्यारवे हिस्से की अपनी सेना साथ कोणिक राजा के साथ रथमूसल नामक संग्राम में उपस्थित हुआ ॥ १० ॥ तब वह काली देवी अन्यदा किसी वक्त कुटुम्ब

तहा महाकण्हे ॥ वीरकण्हे पंचमे, रामकण्हे तहत्तेय ॥ १ ॥ पिउसेणकण्ह नवमे, दसम महासेणकण्हेअ ॥ २ ॥ ५ ॥ जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढम वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं केअट्ठे पण्णत्ते, ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे चंपाणामं णयरे होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धे ॥ पुण्णभद्दे चेइए ॥ ६ ॥ तत्थणं चंपाएणयरीए सेणियस्सरण्णोपुत्ते चेलणाए देवीए अत्तए कोणिएनामंराया होत्था महया ॥ ७ ॥ तस्सणं

४ काल कुमार का, ५ सुकाल कुमार का, ६ महाकाल कुमार का ७ कृष्ण कुमार का, ८ सुकृष्ण कुमार का, ९ महाकृष्ण कुमार का, और १० वीरकृष्ण कुमार का, ८ राम कृष्ण कुमार का, ९ पीउसेन कुमार का, और १० महासेनकृष्ण कुमार का ॥ ५ ॥ यदि अहो भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने उपांग के प्रथम वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं तो अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने निरियावलिका के प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र में चंपा नाम की नगरी थी वह ऋद्धि कर समृद्धिवंत थी उस के ईशान कोन में पूर्णभद्र नामक यक्ष का यक्षालय बगीचे युक्त था ॥ ६ ॥ उस चंपा नगरी मे श्रेणिक राजा का पुत्र चेलना राणी का आत्मज कोणिक नामे राजा राज्य

महावीरे पुव्वाणुपुव्विं इहमागए जाव विहरई त महाफल खलु तहारूवाण जाव विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए तगच्छामिण समण भगव महावीर जाव पज्जुवासामि इमचण एयारूव वागरण पुच्छिसामि तिकट्टु, एव सपहि २ त्ता कोडुंविय पुरिसे सद्दावति २ त्ता खिप्पामेव भोयवाणुप्पिय ! धम्मिय जाणपवरजु त्तामेव उवट्ठविता जाव पच्चापिणति॥ १ ३॥ततेण सा कालीदेवीण्हाया कयवालिकम्माकय काउय मगल पायाच्छित्ता जाव अप्पमहग्धाभारणालकियसरीरा बहुहिं खुज्जाहिं जाव वंद परिक्खित्ता अन्तउराओ णिगच्छइ २ त्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाण साला जेणव धम्मिए जाणपवर तेणेव उवा-

के फल कीतो कहना ही क्या ! इसलिए जाऊं में श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर स्वामी की यावत् पर्युपासना सेवा करूं और जो मेरे मन में संशय है उस का प्रश्न पूछ निर्णय करूं. यों विचारा, विचार कर आज्ञा पारक नोकर पुरुष को बोलाया बोलाकर कहने लगी—अहो देवानुप्रिय ! शीघ्रता से धर्म रथ जोतकर तैयार कर यहां स्थापन करो नोकर पुरुषने उस ही प्रकार किया ॥ १३ ॥ तब वह काली देवीने स्नान किया कुछ मादि कर पवित्र बनी मायश्चित निवृत्ति निमित्त तिलकादि किये यावत् अल्पभार बहुत मूल्यवाले वस्त्रालंकार कर अपना शरीर अलंकृत किया बहुत सोजा दासीयों के वृन्द से परिवरी हुई अन्तरपुर से निकलकर जहां बाहिर की उपस्थानशाला जहां धार्मिकरथ था तहां आई आकर धार्मिक प्रधान

जागरमाणी अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था, एवं खलु ममपुत्ते कालकुमारे तिहिं दन्तीसहस्सेहिं जाव मणुयाए समण किं जइस्सइ नोजइस्सइ जीविस्सइ ना जीविस्सइ पराजिणस्सइ पराजिणिस्सई? कालेण कुमारणं अहं जीवमाण पासिज्जा उहयमाणी जाव झियाई॥११॥तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरेति परिसाणि गया ॥ १२ ॥तएणं तीसे कालीदेवी इमीसे कहाए लद्धट्ठीए समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिन्तीए मनोगए सकप्पे जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु समणे भगवं

जागरणा जगती हुई—कुमार सम्बन्धी चिंता करती हुई इस प्रकार का अध्यवसाय उत्पन्न हुआ—यों निश्चय मेरा पुत्र कालकुमार तीन हजार हाथी यावत् तीन कोटि मनुष्य के परिवार से परिवरा हुआ रथमूसल संग्राम में गया है वह क्या जाने जीतेगा कि नहीं जीतेगा, जीवित रहेगा कि नहीं रहेगा, पराजय पावेगा कि पराजय करेगा, काल कुमारको मैं जीवता हुआ देखूँगी क्या? इस प्रकार आर्तध्यान ध्याती हुई ॥११॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे पूर्णभद्र चैत्य में यथा प्रतिरूप अवग्रह ग्रहण कर यावत् विचरने लगे, परिषद् वन्दने आई ॥ १२ ॥ तब काली देवी उक्त भगवंत का आगम श्रवण कर इस प्रकार का अध्यवसाय संकल्प विचार चिंतवन हुआ कि यों निश्चय श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर स्वामी पूर्वानुपूर्वी चलते हुये यहाँ पधारे हैं यावत् तप संयमकर आत्मा भावते विचरते हैं उन के नाम गोत्र श्रवण करने का ही महाफल है तो फिर उन से प्रश्नोत्तर करने

धम्मकहा भाणियव्वा. जाव समणोवासएवा समणोवासियावा विहरमाणा अणाए आराहए भवति ॥१५॥ ततेण सा कालीदेवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म जाव हियया समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव एवं वयासी एवं खलु भंते ! ममपुत्त कालकुमारे तिहिंदंतिसहस्सहिं रहमूसल संगाम उयाए, सेणं भंते ! किं जइस्सति नो जइस्सति जाव कालेण कुमारेण अहं जीवमाण पासिज्जा ? कालीति ! समणे भगवं कालीदेवीए एवं वयासी एवं खलु काली ! तवपुत्ते काले कुमारे तिहिंदंती सहस्सेहिं जाव कुणिएणरण्णासद्धिं रहमूसल

महापरिषद् को धर्म कथा सुनाई यावत् श्रावक श्राविका व्रताचरणकर जिनाज्ञा के आराधिक होते हैं यहां तक धर्म कथा कही ॥ १५ ॥ तब कालीदेवी श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास से धर्म श्रवणकर के अवधारकर यावत् हृदयमें हर्षितहुई श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीको तीन वक्त वंदना नमस्कार कर यावत् यों कहने लगी यों निश्चय अहो भगवन्! मेरा पुत्र काल कुमार तीन हजार हाथी के साथ यावत् रथ मूसल संग्राम में गया है, अहो भगवन् ! वह जीतेगा कि नहीं जीतेगा ? यावत् काल कुमार को मैं जीवता देखूगी क्या ? काली आदि रानी! से श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी ऐसा बोले यों निश्चय हे काली! तेरा

गच्छइ २ त्ता धम्मियं जाण पवरं दुरूहति २ त्ता नियग, परियाल संपरिवुडा चंपा नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ २ त्ता जणेव पुण्णभद्दे चइए तणेव उवागच्छइ २ त्ता छत्ताइए जाव धम्मियं जाण पवर ठवइत्ता धम्मियाओ जाण पवराओ पच्चो रुहइ २ त्ता बहुहिं जाव खुज्जाहिंवद परिक्खित्ता जणेव समण भगव महावीर तणेव उवागच्छइ २ त्ता समण भगव तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण वदइ नमसइ २ त्ता ठिइयाचेव सपरिवारा सुसमागी नमसमाणी अभिमुहा विणय पंजलीउडा पज्जुवासति ॥ १४ ॥ ततण समणे भगव महावीर जाव कालीए देवीए तीसय महति महालिया

रथ पर आरूढ हुइ अपने परिवार के साथ परिवरी हुई चम्पा नगरी के मध्य २ में हो निकलकर जहां पूर्णभद्र नामक चैत्य था वहां आई तीर्थंकर भगवन्त के छत्रादि अतिशय देखकर धार्मिक रथ को खडा किया, धार्मिक प्रधान रथ से नीचे उतरी, बहुत कुब्ज दासीयों के वृन्द परिवार से परिवरी हुइ जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे वहां आइ, श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को तीन वक्त दाहिने से प्रारंभ कर प्रदक्षिणावर्त किया कर वंदना नमस्कार किया वंदना नमस्कार करके अपने परिवार के साथ खडी रही हुइ ही भगवन्त की सुश्रुषा करती नम्र भूत बनी भगवन्त के सन्मुख विनय से हाथ जोडकर सेवा करने लगी ॥ १४ ॥ तब श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर स्वामी उनकी कालीदेवी और बह

धम्मकहा भाणियव्वा. जाव समणोवासएवा समणोवासियावा विहरमाणा अणाए आराहए भवति ॥१५॥ ततेण सा कालीदेवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म जाव हियया समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो जाव एवं वयासी एव खलु भते ! ममपुत्त कालकुमारे तिहिंदर्त महस्सहिं रहमूसल सगाम उयाए, सेण भत ! किं जइस्सति नो जइस्सति जाव कालण कुमारेण अहं जीवमाण पासिज्जा ? कालीति ' समणे भगवं कालीदेवीए एव वयासी एव खलु काली ! तवपुत्ते काले कुमारे तिहिंदती सहस्सेहिं जाव कुणिएणरण्णासद्धिं रहमूसल

महापरिषद को धम कथा सुनाई यावत् श्रावक श्राविका व्रताचरणकर जिनाज्ञा के आराधिक होते हैं यहां तक धर्म कथा कही ॥ १५ ॥ तब कालीदेवी श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास से धर्म श्रवणकर के अवधारकर यावत् हृदयमें हर्षितहुई श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीको तीन वक्त वंदना नमस्कार कर यावत् यों कहने लगी यों निश्चय अहो भगवन्! मेरा पुत्र काल कुमार तीन हजार हाथी के साथ यावत् रथ मूसल संग्राम में गया है, अहो भगवन ! वह जीतेगा कि नहीं जीतेगा ? यावत् काल कुमार को मैं जीवता देखुगी क्या ? काली आदि रानी से श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी ऐसा बोले यों निश्चय हे काली! तेरा

इय जीवियाओ ववरोवेति समाणे कालमासकालकिच्चा कहिंउववण्णे ? गोयमादि समण भगवं गोयम एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! काल कुमारे तिहिंदंती सहस्सेहिं जाव जीवियाओ ववरोवेति समाणे कालमासे कालंकिच्चा कहिंगए कहिंउववण्णे ? गोयमादि समणे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! कालेकुमारे तिहिंदंती सहस्सेहिं जाव जीवियाओ ववरोवेति समाणे कालमासे काल-किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभगरंग दससागरोवमट्ठिईसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ १९ ॥ कालेणं भंते ! कुमारे केरिसएहिं आरंभेहिं केरिसएहिं आरंभ-समारंभेहिं, केरिसएहिं भोगेहिं केरिसएहिं भोगसंभोगेहिं केरिसेणवा असुभ कड

वगा पड़ा हुआ जीवित रहित होकर काल के अवसर में काल पूर्ण करके कहाँ गया कहाँ उत्पन्न हुआ ? गोयमादि को श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी कहने लगे अहो गौतम ! यों निश्चय काल कुमार तीन हजार हाथी के साथ यावत् जीवित से रहित किये काल के अवसर में काल समाप्त करके चौथी पंकप्रभा पृथ्वी के हेमाभ नामक नरकावास में दस सागरोपम की स्थितिवाले नरीयपने उत्पन्न हुआ ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! काल कुमारने ऐसा क्या क्या काया का कुआरंभ किया, क्या क्या भोगादि का समारंभ मिलाकर जीव वध में प्रवृत्त, किस प्रकार के अशुभ कर्म का संचय किया।

कम्म पभावएण कालमासे कालकिचा चउत्थीए पकपभाए पुढवीए जाव नेरइयत्ताए उववन्ने ? ॥ २० ॥ एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहेनाम नयरे होत्था रिद्धित्थियसमिद्धे तत्थण रायगिहे णयरे सेणिएणाम रायाहोत्था महया ॥ तस्सण सेणियस्सरण्णो नंदनामदेवी होत्था सुकुमाल पाणिपाया जाव विहरति ॥ २१ ॥ तस्सण सेणियस्सरण्णो नंदादेवीए अत्तए अभएणाम कुमारे होत्था सुकुमाले जाव सुरूवे, सामदंड जहाचित्तो जाव रज्जधुराए चिंताययावि होत्था ॥ २२ ॥ तस्सण

कि जिन कर्म करके काल के अवसर में काल समाप्त करके चौथी पंक प्रभा पृथ्वी में यावत् नारकी पने उत्पन्न हुवा ? ॥ २० ॥ यों निश्चय अहो गौतम ! उस काल उस समय में राजगृही नाम का नगर था वह ऋद्ध समृद्ध युक्त था, तहां राजगृही नगरी में श्रेणिक राजा राज्य करता था वह महा हेमवंत पर्वत समान था उस श्रेणिक राजा के नंदा नामक रानी थी वह सुकोमल हाथ पांव की धारक यावत् भोग भोगवती विचरती थी ॥ २१ ॥ उस श्रेणिक राजा का पुत्र नंदा देवी का आत्मज अभय नामकुमार था वह सुकुमाल यावत् सुरूप था सामदंड भेदादि राजनीति का जान था जैसा चित्त नामक प्रधानका वर्णन राय प्रश्नी सूत्र में कहा वैसा था यावत् राज्यधुरा का चिंतक था ॥ २२ ॥ उस श्रेणिक राजा के और भी

सणियसरण्णा चलणाणामद्वी हत्था सुकुमाल जाव विहरति ॥ २३ ॥ तस्सण राचलणा दयी अन्नय कयाइ तंसिंतारिसगंसि वासघरंसि जाव सिंहसुमिणं पासित्ताण पडिबुद्धा जहापभावइ, जाव सुमिणपाठगा पडिविसज्जिया जाव चालणा सेसवयणपडिच्छित्ता जेणाव सएभवणे तणेव अणुपविट्ठा ॥ २४ ॥

चेलना नाम की रानी थी वह सुकमाल थी यावत् पांचोइन्द्रिय के सुख भोगवती हुई विचरती थी + ॥ २३ ॥ तब वह चेलना राणी एकदा पुण्यवन्त के शयन करने लायक शय्या में सोती हुई सिंह का स्वप्न देख जाग्रत हुई प्रभावती राणी की तरह सब पूछकर जानना यावत स्वप्न पाठक को स्वप्नार्थ पूछकर द्रव्यादि से सन्तोष कर विसर्जन किये श्रेणिक राजा चेलना राणी से कहा कुमार राज्य धुरंधर सिंह समान पुत्र होगा यह वचन प्रमाण किया अपने भुवन में आकर सुख से रहने लगी ॥ २४ ॥ तब

+ कहते हैं कि एक वक्त श्रेणिक राजा वनक्रीडा को जाते मास २ क्षमन तपस्या करने वाले तपस्वी को देख अपने घर पारना करने का आमंत्रणकर स्वस्थान आय राज्य काम में लग भूलगाय, दूसरी वक्त फिर वनक्रीडा को जाते तपस्वी को देख पूर्व बात स्मरण कर पश्चाताप किया और पारणा का आमंत्रण कर भूलगय, तीसरी वक्त भी ऐसा ही बना तीन महिने उपवासित गुजरने से तपस्वी क्रोधित हो नियाना किया कि जिस प्रकार यह राजा मरे को मारना चाहता है, इस ही प्रकार में आगमिक इस को मारनेवाला होवू यह तपस्वी मरकर कोणिक हुवा जिस का वृतान्त कहते हैं

तएण तीसे चेल्लणाय देवीए अण्णया कयाई तिण्हं मासाण बहुपडि पुण्णाणं अयमे या रूवे दोहले पाउमूए वण्णाण ताओ अम्मयाओ जाव जम्मजीविय फले जाओण सिणियस्सरण्णो उदरवलीममंहिं सोलेहिय तलहिय सरय जाव पसन्नच आसादे माणीओ जाव परिभाए, सुक्काभुक्खा निम्सा उलगासरीरा नितेया दीण विमण वयणा पडुइ तमुही उमणिय नायण वयण कमला जहोचियपुप्फ वत्थगधमल्लालंकार अपरिभुज्जमाणी करयलमलियव कमलमाला उहयमणसकप्पा जाव झियाति ॥ ततेण तीसे चल्लणाए देवीए अगपडियाओ चल्लणादेवीं सुक्काभुक्खा जाव झियाइमाणी

उस चिल्लना देवी को अन्यदा किसी वक्त तीन महिने प्रतिपूर्ण हुवे बाद इस प्रकार दोहला उत्पन्न हुवा धन्य है उन माता को यावत् जन्म जीवित फल सफल है कि जो श्रेणिक राजा का उदरावली-कालजका मांस का सोले करके तल करके मदिरा के साथ यावत् प्रसन्न के साथ आस्वादती हुई यावत् भोगवती हुई विचरती है, मैं अधन्य हूं इस प्रकार विचार में चिन्ताग्रस्त बन मांस रुधिर कर सूकगई शरीर की कांति कर लूखी होगई मांस रहित दुर्बल शरीर बना, निस्तेज दीन दयावनी दुःखवाली दीन वचन बोलने लगी जिस के मुख का पांडुर रंग पडगया है नयन कमल कुमला गये हैं, जो राणी के योग्य फूल वस्त्र सुगं

पासति पासित्ता जणेव सेणियराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयलपरिग्गहियं सेणिय रायं एवं वयासी एवं खलु सामी ! चिल्लणाए देवीए न याणामो कयणकारणेणं सुक्का भुक्खा जाव झियाइ ॥ २५ ॥ ततेणं से सेणियराया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे जेणेव चिल्लणादेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चिल्लणादेविं सुक्कं भुक्खं जाव झियायमाणिं पासित्ता एवं वयासी किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुक्का भुक्खा जाव झियासि ॥ २६ ॥ ततेणं

माला अलंकार इत्यादि को नहीं भोगवती हुई दोनों करतल को परस्पर मसलती हुई कमल की माला के समान कुमलाई हुई दीन हो मन में संकल्प विकल्प करती हुई आर्त ध्यान करने लगी ॥ २ ॥ उस वक्त उस चेलना देवी की अंगोपचार करनेवाली अंग रक्षक दासी चेलना रानी को सूकी भूखी यावत् आर्त ध्यान ध्याती हुई देख कर जहां श्रेणिक राजा थे वहां आई, आकर हाथ जोड़कर श्रेणिक राजा से यों कहने लगी अहो स्वामी चेलना देवी न मालूम किस कारन से सूकी भूखी यावत् आर्तध्यान ध्या रही है ॥२३॥ तब श्रेणिक राजा उन अंग प्रतिचारिका दासी के पास उक्त कथन श्रवणकर अवधार कर संभ्रांत बना हुआ ज़हां चेलना देवी थी वहां आया, आकर चेलना देवी को सूकी भूखी यावत् आर्तध्यान ध्याती हुई देख कर यों कहने लगा—अहो देवानुप्रिय ! तुम किस कारन से सूकी भूखी यावत् आर्त ध्यान ध्याती हो ? ॥ २४ तब॥

साचिल्लणा देवी सेणियसरण्णा एयमट्ठ णो आढाइ णोपरियाणाति तुसणिया सचिट्ठति ॥ २७ ॥ ततण से सेणिएराया चल्लणदेवीं दोचपि तच्चपि एवं वयासी किन्न अहं देवाणुप्पिए ! एयमट्ठस्स नो अरिहे सवणाए जन्न तुमं एयमट्ठं रहसि करिति ? ॥ २८ ॥ तत्तण साचिल्लणा देवी सेणिएणेरण्णा दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ता समाणी सणियराय एवं वयासी नत्थिण सामी ! से कयिअट्ठे जस्सणं तुब्भे अण रिहा सवणयाए नो चेवणं इमस्स अट्ठस्स सवणयाए ॥ एवं खलु सामी ! ममतस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हमासाणं जाव बहुपडिपुण्णाण अयमेय रूवे

चलना राणी उक्त श्रेणिक राजा के कथन का आदर नहीं किया अच्छा भी नहीं जाना, मौनस्थ (चुप) रही ॥ २७ ॥ तब श्रेणिक राजा चलना देवी से दो वक्त तीन वक्त इस प्रकार बोले—अहो देवानुप्रिये ! क्या मैं इतना कहता हूं सो तुम नहीं सुनती हो या मेरे से कहने जैसा नहीं है कि जिस लिये तुम तुमारे मनोगत विचार को मेरे से छिपाती हो ? ॥ २८ ॥ तब चेलना देवी श्रेणिक राजा का दो वक्त तीन वक्त उक्त कथन श्रवण करके श्रेणिक राजा से यों कहने लगी—अहो स्वामी ! ऐसा कोई भी अर्थ नहीं है जो आपको नहीं सुनाऊं परंतु मेरे मनोगत विचार आपके सुनने जैसे नहीं है (तो भी कहती हूं) यों निश्चय अहो स्वामी ! मेरे को उस उदार प्रधान स्वप्न को देखे तीन महिने व्यतीत हुवे हैं अब मुझे इस

दएन पाणमया धम्मआण ताओअम्माओ जाव जाआण तुम्ह उदरयलिमसहिं
माराहय नाव दाहड़ पणात मनग मामा ? अह सामि [illegible] अविज्ञमाणसि
मग्गा गम्मा नाव । पत्थानि ॥ २९ ॥ तएणं से सेणियराया चल्लणदेविं एव वयासी
माण तुम देवाणुप्पिए ! अहं जाव पत्थाहि अहण तहेवचहामि जहाणं तव
दाहलस्स संपत्ती भविस्सइ तिकट्टु चिल्लणं देविं ताहिं इट्ठाहिं कताहिं पियाहिं
मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं मगल्लाहिं मियमहुराहिं ससिरी
याहिं वग्गूहिं समासासेइ चिल्लणाए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जणेव

प्रकार का दोहद-डोहला उत्पन्न हुवा—धन्य है उन माता को जो तुमारे हृदय के मांस के सूले करके तल करके मदिरादि के साथ खाती खिलाती विचरती है तब मैं इस दोहद का अयोग्य जानकर सूकी भूखी यावत् आर्त ध्यान ध्या रही हूं ॥ २९ ॥ तब श्रेणिक राजा चेलना देवी से एसा बोला—अहो देवानुप्रिये! तुम चिन्ता मत करो, मैं वैसा ही करूंगा जिस प्रकार तुमारा दोहद संपूर्ण होगा ऐसा कहकर चेलना देवी का उन इष्टकारी कांतकारी प्रियकारी मनोज्ञ सुखप्रद प्रधान कल्पना करता उपद्रव हरता मन करता मंगल करता मृदु मधुर शोभायुक्त वचन कर संतोषी चेलना देवी के पास से निकलकर जहां बाहिर की उपस्थानशाला जहां स्वप का सिंहासन था वहां आये, आकर सिंहासन पर पूर्व सन्मुख मुख कर बैठे

बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेवसीहासण तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिंहासण वरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्त बहुहिं आएहिं उवाएहिं उप्पत्तियाए विनाथिका कम्मियाए परिणामियाए परिणामेमाण २ तस्स दोहलस्स आयवा उवायवा ठिइया अविंदमाण उहय जाव ज्झियाइ ॥३०॥ इमचण अभयकुमारे न्हाए जाव सरीरे सयाणा गिहाओ पडिनिक्खमति २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिएराया तणव उवागच्छइ २ त्ता सेणियराय उहय जाव ज्झियायमाण पासइ २ त्ता एव वयासी अन्नयाण ताओ

उस दोहद को पूर्ण करने के लिए बहुत से दाव उपाव उत्पातिक बुद्धि कर विनयिक बुद्धिकर कार्मिक बुद्धिकर और परिणामिक बुद्धि कर सोचते उस दोहद पूर्ण करने का दाव उपाव अप्राप्त होते स्वय चिंताग्रस्त बने, आर्त ध्यान ध्याने लगे ॥ ३० ॥ उस वक्त अभयकुमार ने स्नान किया यावत् शरीर से विभूषित बन स्वयं के घर से निकलकर जहां बाहिर की उपस्थान शाला जहां श्रेणिक राजा थे वहां आया श्रेणिक राजा को चिन्ताग्रस्त आर्तध्यान ध्याते देखकर यों कहने लगा अहो तात! अन्यदा आप मुझे देखकर हर्षित होते यावत् हृदय में प्रफुल्लित बनते अहो तात! आज क्या कारन से आप यावत् आर्त ध्यान ध्याते हो?

तच्चेणं सा चेल्लणादेवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा जाव झियाइ ॥ तच्चेणं अह पुच्छा तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिय जाव ठिंसिया अभिंदमाणे ओहय जाव झियाति ॥ ३२ ॥ तएणं से अभयकुमारे सेणिय रायं एवं वयासी—माणं तओ तुब्भे ओहिय जाव झियाह, अहण्णं तहा वत्तिहामि जहाणं मम चुल्लमाऊए चेल्लणाएदेवीए तस्स दोहलस्स संपत्ति भवीस्सइ त्तिकट्टु सेणियरायं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासेति २ त्ता जगेव सएगिहे तणेव उवागच्छइ २ त्ता अभिंतरएरहस्सितएठाणिज्जं पुरिसं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी गच्छहणं तुमे देवाणुप्पिया ! सूणाओ अल्लं मंसरुहिरं वत्थिपुडगंचगिण्हेइ ॥ ३३ ॥

उस दोहले का पूर्ण करने के लिये बहुत ही दाव उपाव चारों बुद्धि कर विचार यावत् उपाव न मिलता आर्त ध्यान ध्याते हो ॥ ३२ ॥ तब अभयकुमार श्रेणिक राजा से ऐसा बोले अहो तात ! तुम चिन्तामत करो मैं ऐसा ही उपाय करूंगा जिस प्रकार मेरी छोटी माता चेल्लणा देवी का उक्त दोहला पूर्ण होगा ऐसा कहकर श्रेणिक राजाको इष्टकारी यावत् वचनसे सतोषकर सही भये ॥ गृहथा वहाँ आये, अभ्यन्तर गुप्त कार्य करने वाले पुरुष को बोला कर यों कहने लगे अहो देवानुप्रिया ! तुम कसाई के घर जाओ मांस मांस रुधिर कर पूरित उदरस्थान की पसी (थेली) का लाओ ॥ ३३ तब वह मतीत कारी पुरुष

तएणं सेअभिए पुरिसा अभयकुमारेणं एवं वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव पडिसुणेत्ता अभयकुमारस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव सूणा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अल्ल मंसरुहिरंच वत्थिपुडगंच गिण्हंति २ त्ता जेणेव अभयकुमारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल तं अल्ल मंसरुहिरं वत्थिपुडगंच उवणेति ॥ ॥ ३४ ॥ तएणं से अभयकुमारे तं अल्ल मंसरुहिरं कप्पणिकप्पियं करेति २ त्ता जेणेव सेणियराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सेणियं रहसीगिहं सयणीजंसी उत्ताणयंति निवज्जावेति २ त्ता सेणियं उदरवलीसु तं अल्ल मंसरुहिरं विरचेति २ त्ता वत्थिपुडणं

अभयकुमार के उक्त वचन श्रवण कर के वे संतोष पाये हाथ जोड कर वचन प्रमाण किया, अभयकुमार के पास से निकल कर जहाँ कसाई का घरथा तहाँ आकर आला मांस रुधिर युक्त हृदयकोशी ग्रहण कर जहाँ अभयकुमार था तहाँ आया, आकर हाथ जोड कर पेशी देदी ॥ ३४ ॥ तब अभयकुमार उस आले मांस रुधिर युक्त पेशी को काटकर खण्ड २ किये खण्ड २ करके जहाँ श्रेणिक राजा थे तहाँ आया आकर श्रेणिक राजा को गुप्त घर में शैय्या पर बिछे सोथाप बिस शयन कराकर श्रेणिक राजा के हृदय पर रख आला मांस रुधिर युक्तवाली पेशी फिर अभय कुमार वस्त्र से उस का विदारन करने लगा

मेढेइ २ त्ता सवाति करणेण करेति २ त्ता चेल्लण दर्वि उप्पि पासाय आलोयण बरगय ठवायति २ त्ता चल्लणाएदवीए अहे सपक्खि सपडिदिसि सेणीयराय सयणगसी उत्ताणग निवज्जावेति सेणियस्सरण्णो उदरवलि मसइ कप्पणि कप्पि याइ करइ २ त्ता सय भायणसि पक्खेवेइ ॥ ततण से सणियराया अलिय मुच्छिय करइ २ त्ता मुहुत्तत्तरकरण अन्नमन्नणसद्धि सल्लवमाणे चिट्ठति ॥ ३५ ॥ ततण स अभयकुमार सेणियस्स रन्ना उदरवलि मसाइ गिण्हति जणेव चिल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चिल्लणा देवीए उवणेति ॥ ३६ ॥ ततण सा चेल्लणा सेणि

तब श्रेणिक राजा आक्रन्दन शब्द करने लगा, उस वक्त चेलनाराणी को ऊपर के घर में अच्छे स्थान में बैठाई जिस स्थान से श्रेणिक राजा दृष्टि आते हैं श्रेणिक शैय्या में चित्ते सोते हैं श्रेणिक राजा के हृदय का मांस कातनी छुरीकर काट रहे हैं उस अच्छे भाजन में प्रक्षेप रहे हैं तब श्रेणिक राजा मिथ्या मूर्च्छा के वश हो अचेतनवत् बनगये हैं मुहूर्त मात्र श्रेणिक राजा अचेत पड़ रहे, सब अफसोस करने लगे, फिर अभय कुमारादि साथ वार्तालाप करने लगा॥ ३५॥ तब अभय कुमार श्रेणिक राजा के हृदयका मांस ग्रहण कर जहां चेलना देवी थी तहां आय, यह चेलना देवी को दिया ॥ ३६ ॥ तब चेलना देवी वह श्रेणिक

पत्त मंसा सोहिं उदरवलिमसाहिं सोल्लेहिं जाय दोहलंविणिंति ॥ ३७ ॥ तेतेणं सा चेल्लणा देवी संपुन्न दोहला एवं समाणित दोहला वोच्छिन्न दोहला तंगब्भंसुहं सुहेणं परिवहति ॥ ३८ ॥ ततेणं तीसे चेल्लणा देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता वरत्त काल समयंसि अयमेया रूवे जाव समुप्पज्जित्था जइताव इमेणं दारेणं गब्भगएणं चेव पिउणो उदरवलिमंसाइं खाइयाणि, तं सेय खलु ममएयगब्भ साडित्तएवा पाडित्तएवा गालित्तएवा विद्धंसित्तएवा, एवं संपेहइ २त्ता तं गब्भं बहुहिं गब्भ साडणेहिय गब्भपाडणहिय गब्भ विद्धंसणहिय इच्छति साडित्तएवा पाडित्तएवा गालित्तएवा

राजा का हृदय के मांस के साथ कर यावत् दोहला पूर्ण किया ॥ ३७ ॥ तब वह चेलना रानी संपूर्ण दोहला कर मन में प्रसन्न बनी व्युच्छेद हुए बांछा, उस गर्भ को सुख २ से वृद्धि करने लगी ॥ ३८ ॥ तब वह चेलना राणी को अन्यदा किसी एक आधी रात्रि व्यतीत हुवे इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ यदि यह बालक गर्भ में रहा हुआ पिता के हृदय का मांस खाया [तो आगे यह क्या जुलम करेगा] इसलिये श्रेय है मुझको कि इस गर्भ का औषधोपचार कर सड़ादूं पड़ादूं गलादूं विध्वंस करूं. ऐसा विचार कर उस गर्भ को बहुत प्रकार के सड़ाने का पाड़ने को विध्वंसने को इच्छती हुई सड़ाने गलाने के औषधादि

विद्धंसित्तए वा नो चेव णं से गब्भे सडित्तए वा पडित्तए वा गलित्तए वा विद्धंसित्तए वा ॥ तत्तेणं सा चेल्लणा देवी तं गब्भे जाहे नो संचाएति बहुहिं गब्भसाडणाहि य जाव गब्भपाडणेहि य सडित्तए वा जाव विद्धंसित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विन्न समाणी अकामिया अवसवसा अट्टवसट्ट दुहट्ट तं गब्भं परिवहति ॥ ३९ ॥ तत्तेणं सा चेल्लणा देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव सुकुमाल सुरूवं दारयं पयाया ॥ ४० ॥ ततेणं तीसे चेल्लणाए देवीए इमेया रूवे जाव समुप्पज्जित्था, जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भेगएणं चेव पिउणो उदरवलि मसाइं खाइयाइं तंनं जाइणं एस दारए संवुड्ढमाणे के

सने लगी परन्तु वह चेल्लना रानी उस गर्भ को सडाने पाडने विध्वंस करने समर्थ नहीं हुई तब थकगई परीतप्त हुई घबरागई, बिना इच्छा से ही उस गर्भ को नहीं चाहती हुई आर्त चिंता के वश में ही उस गर्भ की वृद्धि होने लगी ॥३९॥ तब चेल्लना देवी नव महिने पूर्ण हुए बाद सुकोमल सुरूप बालक [लडके] को जन्म दिया ॥४०॥ तब उस चेल्लना रानी को इस प्रकार का अध्यवसाय उत्पन्न हुआ यदि यह बाल गर्भमें रहा हुआ ही पिता के हृदय का मांस खाया तो न जाने यह बालक बडा होकर किस प्रकार हमारे कुल का अन्त करने वाला होगा इस लिये श्रेयकारक मुझे है कि मैं इस बालक को एकान्त उकरडी पर डालदूं ऐसा

एगं रत्तो तांहिं उदरवलिमसांहिं सोल्लेहिं जाव दोहलंविणेति ॥ ३७ ॥ ततेणं सा चेल्लणा देवी संपुन्न दोहला एवं समाणित दोहला वोच्छिन्न दोहला तंगब्भंसुहं सुहेणं परिवहति ॥ ३८ ॥ ततेणं तीसे चिल्लणा देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता वरत्त काल समयंसि अयमेया रूवे जाव समुप्पज्जित्था जइताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उदरवलिमसाइं खाइयाणि, तं सेयं खलु ममएयंगब्भं साडित्तएवा पाडित्तएवा गालित्तएवा विद्धंसित्तएवा, एवं संपेहइ२त्ता तं गब्भं बहुहिं गब्भ साडणेहिय गब्भपाडणेहिय गब्भ विद्धंसणेहिय इच्छति, साडित्तएवा पाडित्तएवा गालित्तएवा

राजा का हृदय के मांस के साले कर यावत् दोहला पूर्ण किया ॥ ३७ ॥ तब वह चेलना राणी संपूर्ण दोहला कर मन में प्रसन्न बनी व्युच्छेद हुइ वांछा, उस गर्भ की सुख २ से वृद्धि करने लगी ॥ ३८ ॥ तब वह चेलना देवी को अन्यदा किसी एक मध्य रात्रि व्यतीत हुवे इस प्रकार विचार उत्पन्न हुवा, यदि यह बालक गर्भ में रहा हुवा पिता के हृदय का मांस खाया [तो आगे यह क्या जुल्म करेगा] इसलिये श्रेय है मुझको कि इस गर्भ का मेरापचार कर सडालूं परडूं गलालूं विध्वंस करूं ऐसा विचार कर उस गर्भ को बहुत प्रकार के सडाने का पाडने का विध्वंसने को इच्छती हुई सडाने गलाने के औषधादि

विदूसतएत्रा नो चेव णं संचाएति गब्भं सडित्तएवा पडित्तएवा गालित्तएवा विद्धंसित्तएवा ॥
तत्तेण साचेल्लणादेवी तंगब्भे जाहे नो संचाएति बहुर्हि गब्भसाडणाहिय जाव
गब्भपाडणेहिय सडित्तएवा जाव विद्धंसित्तएवा, ताहेसंता तंता परितंता निव्विन्ना
समाणी अकामिया अवसवसा अट्टवसट्ट दुहट्ट तंगब्भपरिवहति ॥ ३९ ॥ तत्तेण
साचेल्लणादेवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव सुकुमालं सुरूवं दारयं पयाया ॥४०॥
तत्तेण तीसे चेल्लणाए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था, जइ ताव इमेणं दारएणं
गब्भगएणं चेव पिउणो उदरवलि मंसाइं खाइयाइं तंनंन जाइणं एसदारए संवड्ढमाणे के

लने लगी। परन्तु वह चेलना देवी उस गर्भ को सड़ाने पाडन विध्वंस करने समर्थ नहीं हुई तब थकगई परीतप्त हुई घबरागई, बिना इच्छा से ही उस गर्भ को नहीं चाहतीहुई आर्त चिंता के वश में ही उस गर्भ की वृद्धि होने लगी। ॥३९॥ तब चेलना देवी नव महिने पूर्ण हुवे बाद सुकोमल सुरूप बालक [लड़के] को जन्म दिया ॥४०॥ तब उस चेलना देवी को इसप्रकार का अध्यवसाय उत्पन्न हुवा यदि यह बालक गर्भोदय में रहा हुवा ही पिताके हृदय का मांस खाया तो न जाने यह बालक भी बड़ा होकर किस प्रकार हमारे कुल का अन्त करने वाला होगा, इस लिए श्रेयकारक मुझ है कि मैं इस बालक को एकान्त उकरडीपर डाल दूं ऐसा

पत्त रमा तहिं उयरवालिममाहिं सोल्लहिं जाव दोहलंविणेमति ॥ ३७ ॥ तेतेणं सा चलणा देवी संपुन्न दोहला एवं समाणित दोहला वोच्छिन्न दोहला तंगब्भंसुहं सुहेणं परिवहति ॥ ३८ ॥ ततेणं तीसे चिल्लणा देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता वरत्त काल समयंसि अयमया रूवे जाव समुप्पज्जित्था जइताव इमेणं दारणं गब्भगमए चव पिउणा उदरवलिमंसाइ खाइयाणि, तं सेय खलु ममएयंगब्भं साडित्तएवा पाडित्त एवा गालित्तएवा विद्धंसित्तएवा, एवं संपेहइ २त्ता तं गब्भं बहुहिं गब्भ साडणेहिय गब्भपाडणेहिय गब्भ विद्धंसणाहिय इच्छति, साडित्तएवा पाडित्तएवा गालीत्तएवा

राजा का हृदय के मांस को खाके कर यावत् दोहला पूर्ण किया ॥ ३७ ॥ तब वह चेलना राणी संपूर्ण दोहला कर मन में प्रसन्न भनी व्यच्छेद हुइ वांछा उस गर्भ की सुख २ से वृद्धि करने लगी ॥ ३८ ॥ तब वह चेलना देवी को अन्यदा किसी एक भार्धी रात्रि व्यतीत हुवे इस प्रकार विचार उत्पन्न हुवा, यदि यह बालक गर्भ में रहा हुआ पिता के हृदय का मांस खाया [तो आगे यह क्या जुल्म करेगा] इसलिये श्रय है मुझको कि इस गर्भ का मोक्षोपचार कर सडावूं पडावूं गलावूं विद्धंस करूं. ऐसा विचार कर उस गर्भ को बहुत प्रकार के सडाने का पाडने को विद्धंसने को इच्छती हुई सडाने गलाने के औषधादि

थिद्धसतएत्ता नो चेवण सेगब्भे सडित्तएवा पडित्तएवा गलित्तएवा विद्धंसतएवा ॥ तचेण साचेल्लणादेवी तगब्भं जाहिं नो संचाएति बहुहिं गब्भसाडणाहिय जाव गब्भपाडणेहिय सडित्तएत्ता जाव विद्धसतएत्ता, ताहेसता तता परितता निव्विन समाणी अकामिया अवसवसा अट्टवसट्ट दुहट्ट तंगब्भपरिवहति ॥ ३९ ॥ तचेण सा चेल्लणादेवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण जाव सुकुमाल सुरूव दारय पयाया ॥४०॥ ततेण तीसे चेल्लणाए देवीए इमया रूव जाव समुप्पज्जित्था जइ ताव इमेण दारएण गब्भेगएण चेव पिउणो उदरवलि मसाइ खाइयाए तनन जाइण एसदारए सवड्ढमाणा के

ने लगी परन्तु वह चेलना देवी उस गर्भ को सडाने पाडन विदरा करने समर्थ नहीं हुई तब थकगइ परीतत हुई घबरागइ, बिना इच्छा से ही उस गर्भ को नहीं चाहतीहुई आर्त चिंता क वस मे ही उस गर्भ की वृद्धि होने लगी ॥३९॥ तब चेलना देवी नव महिने पूर्ण हुए बाद सुकोमल सुरूप बालक [लडके] को जन्म दिया ॥४०॥ तब उस चेलना देवी को इसप्रकार का अध्यवसाय उत्पन्न हुवा यदि यह बालक गर्भाशय में रहा हुवा ही पिताके उदर का मांस खाया तो न जाने यह बालक जन्मे पश्चात् हो कर किस प्रकार हमारे कुल का अन्त करने वाला होगा इस लिए श्रेयकारक मुझे है कि मैं इस बालक को एकान्त उकरडीपर डाल दूं ऐसा

पत्त रत्ता तहिं उदरवालिमसहिं सोल्लहिं जाव दोहलंविणेति ॥ ३७ ॥ तेतेण सा चेल्लणा देवी संपुन्न दोहला एवं समाणित दोहला वोछिन्न दोहला तंगब्भंसुहं सुहेणं परिवहति ॥ ३८ ॥ ततेण तीसे चिल्लणा देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता वरत काल समयंसि अयमेया रूवे जाव समुप्पज्जित्था जइताव इमेण दारण गब्भगएण पिउ उदरवलिमंसाइ खाइयाणि, तं सेयं खलु ममएयंगब्भं साडित्तएवा पाडित्तएवा गालित्तएवा विद्धंसित्तएवा, एवं संपेहइ२त्ता तं गब्भं बहुहिं गब्भ साडणेहिय गब्भपाडणेहिय गब्भ विद्धंसणेहिय इच्छति, साडित्तएवा पाडित्तएवा गालित्तएवा

राजा का हृदय के मांस के सोले कर यावत् दोहला पूर्ण किया ॥ ३७ ॥ तब वह चेलना रानी संपूर्ण दोहला कर मन में प्रसन्न बनी व्युच्छेद हुए दोहला उस गर्भ की सुख २ से वृद्धि करने लगी ॥ ३८ ॥ तब वह चेलना देवी को अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि व्यतीत हुवे इस प्रकार विचार उत्पन्न हुवा, यदि यह बालक गर्भ में रहा हुवा पिता के हृदय का मांस खाया [तो आगे यह क्या जुल्म करेगा] इसलिये भय है मुझको कि इस गर्भ का औषधोपचार कर सडाऊं पटकूं गलाऊं विद्धंस करूं एसा विचार कर उस गर्भ को बहुत प्रकार के सडाने का पाडने को विद्धंसने को इच्छती हुई सडाने गलाने के औषधादि

असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता त दारग एगते उक्कुरुडियाए उज्झये पासति २ त्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे त दारग करयल पुडेण गिण्हति २ त्ता जेणेव चेल्लणादेवी तेणेव उवागच्छइत्ता ॥ चेल्लणदेवि उच्चावयाहिं आउसणाहिं उद्धसति २ त्ता एव वयासी किसण तुम ममपुत्त उक्कुरुडियाए उज्झाविति ? चेल्लाणा धवि उच्चावया सवहसाविया करेति २ त्ता एव वयासी—तुम्मेण देवणुप्पिए ! एय दारग अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवमाणी सवड्ढति ॥ ४४ ॥ ततेण सा चेल्लणादेवी सेणीएरन्ना एव वुत्तासमाणा लज्जिया विलज्जिया विकड्ढ करियल सेणी॰

थाडी थी वहाँ भाय, उस बालक को उकरडी पर डाला हुवा देख कर क्रोध में आसुरक्त हुए यावत् मिसमिसाय (धमधमाय) मान होते उस बच्च को अपने करतल सपुट में ग्रहण करके भार चेलना देवी थी वहाँ आकर चेलना देवी को बहुत और २ स आक्रोशित वचनों स निर्भत्सना की, निर्भत्सना कर यों कहने लगे—किस लिये तेने मरे पुत्र को एकान्त उकरडीपर डाला दिया ? यों कहकर चेलनादेवी को युक्त वचन से सोगन कराये, सागन कराकर यों कहने लगे—अहा देवानुप्रिय ! तुम इस बालक को अनुक्रम से संरक्षण करती हुई औषधादि कर गोपती हुई वृद्धि करती हुई रहो ॥ ४४ ॥ तब चेलना राणी श्रेणिक राजा के उक्त वचन श्रवण कर लज्जा पाई उस लज्जा का छोडकर दोनों हाथ जोड श्रेणिक

अण्हं फुल्लरत अंतकर भविस्सइ तसप खलु अम्हं एयदारगं एगंते उक्कुरुडिया उज्झा विचए, एव सपेहइ २चा दास चेडिय सद्दावेइ २त्ता एव वयासी गच्छण तुम देवाणु प्पिए। एय दारग एगत्त उक्कुरुडियाए उज्झाहिं ॥ ४१ ॥ तएण सा दास चेडिए चेल्लणाए देवीए एवयुत्तासमाणी करयल जाव तिकट्टु चल्लणाएदवीए एयमट्ठ विणएण पडिसुणेति २ ता ते दारग करियलपुडेण गिण्हति जेणव असोगवणिया तणव उवागच्छइ २ चा त दारग एगत उक्कुरुडियाए उज्झाति ॥ ४२ ॥ ततेण तेण दारएण एगते उक्कुरुडियाए उज्झितणसमाणेण सा असोगवणिया उज्जोइया पविहोत्था ॥ ४३ ॥ ततण से सेणिएराया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जणव

विचार किया विचार कर दासी को बोला कर यों कहने लगी अहो देवानु प्रिये! मा तू इस बालक को एकान्त उकरड (घूरे) पर डालदे ॥ ४१ ॥ तब दासी चेलणादेवी का उक्त कथन हाथ जोड कर प्रमान किया, उस बालक का करतल सपुट में ग्रहण किया, जहां आशोक वाडीथी वहां आई आकर उस बालक को एकान्त उकरडेपर डालदिया ॥ ४२ ॥ तब वह बालक एकान्त उकरडेपर डाला हुआ उस आशोकवाडी में प्रकाश करने लगा ॥ ४३ ॥ तब श्रेणिक राजा इस प्रकार समाचार प्राप्त होते जहां आशोक

असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता त दारग एगते उक्कुरडियाए उज्झये पासति २ त्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे त दारग करयल पुडेण गिण्हति २ त्ता जेणेव चेल्लणादेवी तेणव उवागच्छइ २ त्ता ॥ चेल्लणदेविं उच्चावयाहिं आउसणाहिं उस्सामति २ त्ता एव वयासी किसण तुम ममपुत्तं उक्कुरडियाए उज्झाविति ? चेल्लाणा देविं उच्चावया सवहसाविया करेंति २ त्ता एव वयासी—तुम्भेण देवाणुप्पिए ! एय दारग अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवमाणी सवड्ढति ॥ ४४ ॥ ततेण सा चेल्लणादेवी सेणीएरन्ना एव वुत्तासमाणा लज्जिया निलज्जिया चिकट्टु करियल सेणी

वाड़ी थी वहां आय, उस बालक को उकरडी पर डाला हुवा देख कर क्रोध में आसुरक्त हुए यावत् मिसमिसाय (धमधमाय) मान होते उस बच्चे को अपने कोमल मपुट में ग्रहण करके जहां चेलना देवी थी वहां आकर चेलना देवी को बहुत जोर २ से आक्रोशित वचनों से निर्भच्छना की, निर्भच्छना कर यों कहने लगे—किस लिये तेने मेरे पुत्र को एकान्त उकरडीपर डाला दिया ? यों कहकर चेलनादेवी को युक्त वचन से सोगन कराये, सोगन कराकर यों कहने लगे—अहो देवानुप्रिय ! तुम इस बालक को अनुक्रम से संरक्षण करती हुई औषधादि कर गोपती हुई वृद्धि करती हुई रहो ॥ ४५ ॥ तब चेलना राणी श्रेणिक राजा के उक्त वचन श्रवण कर लज्जा पाई उस लज्जा को छोडकर दोनों हाथ जोड श्रेणिक

एगंते विणिएण णयमट्ठ वड्ढिसुणती २ त्ता तं दारगं अणुपुव्वेण सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेति ॥ ४५ ॥ तएणं तस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झमाणस्स अग्गंगुलिया कुक्कुडपिच्छएण दूमयाविहोत्था । अभिक्खणं २ पूयच सोणियच अभिनिसवेति ॥ ४६ ॥ तएणं से दारए वेयणा अभिभूयसमाणे महया २ सद्देणं आरसति, तएणं सेणिएराया तस्स दारगस्स आरसतिसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ २ त्ता तं अग्गंगुलियं आसयंसि परिक्खिवति २ त्ता पूयच सोणियच आसएणं आमुसति २ त्ता ॥ ४७ ॥

राजा का विनय से वचन प्रमाण किया, प्रमाण कर उस बालक का अनुक्रम से संरक्षण करती हुई वृद्धि करती हुई रही ॥ ४८ ॥ जिस वक्त उस बालक को उकरडी पर डाला दिया था उस वक्त उस बालक की अंगुली का अग्र गिरी मुरगा [कुकड] पक्षीने कतरी थी, वह पकी उस में रुधिर पीप भरा गया तब वह बालक वेदना मास होने से बडे २ शब्द कर रुदन करने लगा ॥ ४९ ॥ तब श्रेणिक राजा उस बालक के रुदन के शब्द श्रवण करके अवधार कर जहां वह बालक था वहां आये, आकर उस बालक को करतल में ग्रहण किया, ग्रहण कर वह अंगुली का अग्र अपने मुख में लिया, चूसकर रक्त पीप थूक दिया

तच्चेणं से दारए निव्वुए निव्वयणे तुसिणीए साचिट्ठइ जाहे २ विएण से दारए वेयणा अभिभूयसमाणे महया २ सद्दण आरसति ताहिं २ त्रियण सेणियराया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ २ तंदारग करियल पुडण गिण्हति तचव जाव निव्वयाणि तुसीणियसाचिट्ठइ ॥ ४८ ॥ तच्चेण तस्स दारगस्स अम्मापियरो ततिय दिवस चद सूर दसणिय करेति जाव सपत्ते बारसाहे दिवसे अयमया रूव गुणानि पन्न नामधिज्ज करेति जम्हाणं इमस्स दारगस्स एगतेउकुरूडियाए उज्झिज्जमाणस्स अ गुलिया ककुडियपच्छिएण दुमिया, त हाउण अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्ज कुणिए ॥

यों चूस २ कर उस आरोग्य सुखी किया ॥ ४७ ॥ तब वह बालक चुप रहा रोना बंद किया मौनस्थ रहा यों जिस २ वक्त वह बालक वेदना कर दुःखी हो रुदन करता उस २ वक्त में श्रेणिक राजा जहां वह बालक था उस के पास आते उस को हाथ में ग्रहण करते और उक्त उपायकर उसे सुखी कर, चुप सुलादेते ॥ ४८ ॥ तब उस बालक के माता पिता तीसरे दिन चन्द्र सूर्य के दर्शन कराये, यावत् बारहवे दिन प्राप्त होते इस प्रकार गुण निष्पन्न नाम की स्थापना की इस बालक को जिस वक्त उकरडी पर डाल दिया था तब कुकडे ने इस की अंगुली काटी थी, इस लिये इस २ इस बालक का नाम कुणिक होवो तब

एगंतो विणएणं पयमट्ठं पडिसुणेती २ त्ता तं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेति ॥ ४५ ॥ तएणं तस्स दारगस्स तेठकुक्कुडियाए उज्झमाणस्स अग्गगुलिया कुक्कुडपिच्छएणं दुमिया विहोर । अभिक्खणं २ पूयंच सोणियंच अभिनिस्सवेति ॥ ४६ ॥ तएणं से दारए वेयणाए अभिभूयसमाणे महया २ सद्देणं आरसति, तएणं सेणिएराया तस्स दारगस्स आरसतिसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ २ त्ता तं अग्गगुलियं आसयंसि पक्खिवेति २ त्ता पूयंच सोणियंच आसएणं आमुसति २ त्ता ॥ ४७ ॥

राजा का विनय से वचन प्रमाण किया, प्रमाण कर उस बालक का अनुक्रम से संरक्षण करती हुई वृद्धि करती हुई रही ॥ ४५ ॥ जिस वक्त उस बालक को उकरडी पर डाला दिया था उस वक्त उस बालक की अंगुली का अग्र किसी कुकड [कुक्कड] पक्षीने कतरी थी वह पकी उस में रुधिर पीप भरा गया तब वह बालक वेदना प्राप्त होता हुवा बडे २ शब्द कर रुदन करने लगा ॥ ४६ ॥ तब श्रेणिक राजा उस बालक के रुदन के शब्द श्रवण करके अवधार कर जहां वह बालक था वहां आये, आकर उस बालक को कर तल में ग्रहण किया, ग्रहण कर वह अंगुली का अग्र अपने मुख में लिया, चूंनकर रक्त पीप थुक दिया

मराणं तस्सदारस्स अम्मापियरो नामधिज्जं करति कुणियाए॥४९॥ तत्तेण तस्स कुणियस्स अणुपुव्वेणं ठितिवडियंच जहा मेहस्स जाव उप्पिं पासायवरगए विहराति, अट्ठउदाउ ॥ ५० ॥ तएण तस्स कुणियस्स अण्णयाकयाई पुव्वरत्ता जाव समुप्पज्जित्था– 'एवं खलु अहं सेणियस्सरण्णो वाघाएणं णो संचाएमि सयमेवरज्जसिरिं कारमाणे पालमाणे विहरीत्तए, तंसेयं खलु मए सेणियरायं नियलबंधणं करेत्ता, अप्पाणं महया २ से रायाभिसेएणं अभिसिंचावितए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता सेणियस्सरण्णो अंतराणिय छिद्दाणिय विरहाणिय पडिजागरमाणे २ विहराति ॥५१॥ ततेणं कोणिय कुमारे सेणियस्सरण्णो

उस बालक के माता पिता नामाधार करने लगे 'कूणिक' ॥ ४९ ॥ अब वह कूणिक अनुक्रम स्थिति वृद्धि महोत्सव वगैरा जैसा मेघ कुमार का कथन ज्ञाता सूत्र में है वैसा सब यहां कहना यावत् ऊपर के प्रसाद में स्त्री यों के साथ क्रिड़ा करता विचरने लगा इन की आठ स्त्री यों थी ॥ ५० ॥ तब उस कोणिक को अन्यदा मध्य भागी रात्रि बीते बाद इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुवा–यों निश्चय में श्रेणिक राजा की व्याघात कर स्वयमेव राज्यश्री का भोगता पालता विचरन समर्थ नहीं हूं इसलिये श्रेय है मुझ कि श्रेणिक राजा को निगड बंधन में बंध कर आप स्वयं महा २ राज्याभिषेक कराऊं ऐसा विचार कर श्रेणिक राजा का बंधन में डालने का अवसर छिद्र विवर देखता हुवा विचरने लगा ॥ ५१ ॥

तमेण सा चेल्लणादेवी कोणिय राय एवं वयासी—कहण पुत्ता ! ममं तुट्ठीवा उस-हरियाणदवा भविसति जन्न तुम सेणियपिय देवय गुरुजाणग अच्चिंतनिहाणुरागरत्तं नियलबंधण करेत्ता अप्पाण महया २ रायाभिसेण अभिसचाविहे ॥ ५८ ॥ तत्तेणकोणिएराया चल्लणदेवि एवं वयासी घाइतु कामग अम्मो ! मम सेणिएराया एवं मारतु बाधितु निच्छुभिए कामएण अम्मा ! मम सेणिएराय' त कहण अम्मो ! मम सणिएराय अच्चत नहाणुरागरत्ते ? ॥ ५९ ॥ तत्तण सा चल्लणादेवी कुणिय कुमार एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! तुमंसि मम गब्भेअभि

अहो पुत्र ! मैं किस कारन तुष्टित हावु ! हर्षित हावु ! यदि तेने श्रेणिक राजा तेरे पिता देवसमान गुरु समान तेरेपर अत्यन्त स्नेहानुरागरक्त उन को निषड बंधन में बंध हैं, और आप स्वयमेव महोत्सव कर राज्याभिषेक किया है ॥५८॥ तब कोणिक राजा चेलनादेवी से एसा बोले-अहो अम्मा' श्रेणिक राजा मुझ मारने के अभिलाषी थे मुझ बंधन में डलाने के कामी थे मुझ देश निकाल करने के कामी थे, अहो अम्मा! श्रेणिक राजा मर से इस प्रकार रहते थे तो किस प्रकार अहो अम्मा ! मेरे पर श्रेणिक राजा का अत्यन्त प्रेमानुराग रक्तपना था ? ॥ ५९ ॥ तब चेलनादेवी कुणिककुमार से एसा कहने लगी यों निश्चय अहो पुत्र ! तू जिस वक्त मेरे गर्भ में आया, उस वक्त तीन महिने व्यतीत हुवे बाद मुझे इस प्रकार दोहद

अन्नं उ णमे २ त्ता सेणियराय निल्यवधणकरेइ अप्पाण महया २ रायाभिसेयण अभिसिचावेति ॥ ५४ ॥ तत्तेण से कोणिएकुमारे राया जाए महया ॥ ५५ ॥ तत्तेण से कोणियराया अण्णयाकयाई ण्हाए जाव सव्व लंकारविभूसिए चेल्लणाएदेवीए पायवदए हव्वमागच्छति ॥ ५६ ॥ तत्तेण से कोणियराया चेल्लणादेवी उहय जाव झियाइ माणी पासइ २ त्ता चेल्लणायदेवीए पायग्गहण करइ २ त्ता चेल्लण देविं एवं वयासी—किण्ण अम्मा तुम नतुट्ठीएवा न उसएवा नहरिसएवा नाणादेवी जण अहं सयमेव रज्जसिरि जाव विहरामि ॥५७॥

अर्थात् मकला देव श्रेणिक राजा को निबड बंधन में बंधे, आप स्वयं महा उत्सव युक्त राज्याभिषेक अभिषिक्त हुवा॥ ५४ ॥ तब कोणिक कुमार महाहेमवन्त पर्वत समान राजा बने, ॥ ५५ ॥ तब वह कोणिक राजा अन्यदा किसी वक्त स्नानकर यावत् सर्व अलंकार से विभूषित हो चेलना देवी के पांव वंदन करने शीघ्र ही आया ॥ ५६ ॥ तब कोणिक राजा चेलनादेवी को चिन्ता प्रस्त यावत् आर्तध्यान ध्याती हुई देखकर चेलनादेवी के पांवों ग्रहण किये, ग्रहण कर चेलनादेवी से यों कहने लगा—अहो अम्मा ! तुम तुष्टित क्यों नहीं हुई, तुमे उत्साहित क्यों नहीं हुवे तुम हर्षित क्यों न हुवे, अहो देवी! तुम न मानती हो कि मैं स्वयमेव राज्य श्री अंगीकार कर यावत् विचरता हूं ॥ ५७ ॥ तब चेलनादेवी कोणिक राजा से ऐसा बोली

स्सरण्णो सयमेव नियलाणि छिंदामि निकट्टु, फरसुहत्थगत्ते जेणेव चारगसाला तणेव पहारत्थगमणाए ॥ ५१ ॥ तएण सेणिएराया कोणियकुमारे फरसु हत्थगयं एजमाण पासति २ त्ता एवं वयासी—एसण कोणियकुमारे अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जए फरसुहत्थगए इह हव्वमागच्छति,तननजइण मम केणए कुमारेणेण मारस्सइ तिकट्टु, भीए जाव सजायभए तालपुडगविस आसगपरिक्खेवइ ॥ तचेण से सणियराया तालपुडगविससि आसगसि पक्खित्तेसमाण मुहुत्ततरेण परिणममाणंसि निप्पाण निच्चिट्ठ जीवविपजढ उइस ॥ ५२ ॥ तचेण से कुणियकुमारे जेणेव

श्रेणिक राजा मेरे देवगुरु समान अत्यन्त प्रेमानुरागरक्त जिन को मैंने निबड बन्धन से बन्धे इसलिये अब मातार मैं श्रेणिक राजा के स्वयमेव निवड बन्धन छेदन करूं, ऐसा कह फरसी हाथमें ग्रहण कर जहां कैदी खाना था वहां आने लगा ॥ ५१ ॥ तब श्रेणिक राजा कोणिक कुमार को फरसी हाथ में ग्रहण कर आते हुवा देखा, देखकर यों कहने लगा यह कोणिककुमार अप्रार्थिक (मृत्यु) का प्रार्थिक यावत् श्री रहित फरसी हाथमें ग्रहणकर शीघ्रता से आरहा है,इसलिये न जाने यह मुझे किस प्रकार मृत्युकर मारेगा ऐसा विचार कर भयभीत हुवे यावत् भयोत्पन्न हुवा, उन्ने तालपुट नाम जहर मुखमें प्रवेश किया तब श्रेणिक राजा तालपुटक जहर मुखमें प्रवेश करते ही मुहूर्तमें परिणमते हुवे प्राण रहित हुवे, जीवित की चेष्टा रहित हुवे, जीवित रहित हुवे॥५२॥

भूएसमाणे तिण्हमासाणं बहुपडिपुण्णाणं मम अयमेयारूवे दोहलेपाउब्भूए धन्नाओणं ताओ अम्मयाओ जाव अणुपडियारियाओ निरविसेसं भाणियव्वं जाव जाहेवियणं तुमवयणाए अभिभूय महेया जाव तुमिणीए संचिट्ठसि, एवं खलु तव पुत्ता सेणियराया अचंतनेहाणुरागरत्ते ॥ १० ॥ तत्तेणं सकुणियराया चेल्लणा देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चेल्लणं देविं एवं वयासी दुट्ठुणं अम्मा ! मएकयं सेणियरायं पिय देव गुरु जणगं अच्चंत नेहाणुरागरत्तं नियल बंधणं करतेणं, तंगच्छामिणं सेणियं

उत्पन्न हुवा यथा है वह माता जो श्रेणिक राजा का हृदय का मांस खाती है इत्यादि उक्त प्रकार सब कथन कहा यावत् अन्य उपाय द्वारा राजाजी से समाचार कर, उनने अपना हृदय विदारन कर उसी इच्छा पूरी तू जन्मा तब मैंने मुझे उकरडी पर डलवादिया उन को खबर हात ही उठालाये मुझे उनके वचन सुनाय माता दिया तथा परपोष कराया, तेरी अंगुली कुकडेने कतरी उस में पीप उत्पन्न हुवा उसे अपने मुख से बारम्बार चूसकर सुख तेरे को सुखी किया इस प्रकार अहो पुत्र ! तेरे पिता श्रेणिक राजा तेरेपर अत्यन्त स्नेहानुराग रक्त हैं ॥ १० ॥ तब कोणिक राजा चेलनादेवी के मुख से उक्त कथन श्रवण कर (पूर्व वैर निवृत्त होने से) चेलनादेवी से ऐसा कहने लगा अहो अम्मा ! मैंने यह दुष्कर्म किया कि

सपरिवुडे रोयमाणे तिपमाणे महता इड्ढीसक्कार समुदएणं सेणियस्सरण्णो, निहरण करति, बहुहिं लोइयाई मइकिच्चाइं करेति ॥ ६४ ॥ तत्तेण से कोणिए कुमारेए तेणं महया मणोमाणसिएण दुक्खेण अभीभूएसमाणे अन्नयाकयाइ अंतेउरसपरिवुडे समंडमत्तोवकरणमायाए रायगिहाओ पडिनिक्खमति २ जेणेव चंपानगरी तणेव उवागच्छइ २ त्ता तत्थविपुल भोगसमिति समागएकालेणं अप्पसोएजाएयाविहोत्था ॥ ६५ ॥ तत्तेण से कोणिएराया अन्नयाकयाइ कालादिए दसकुमारे सद्दावेइ २ त्ता रज्जंच जाव जणवयंच एक्कारसभाए विरचति २ त्ता सयमेव रज्जसिरि करेमाणे

ईश्वर तलवर यावत् सार्थवाहक के साथ परिवरा हुवा रोताहुवा महा-ऋद्धि-सत्कार-समुदाय कर श्रेणिकराजा का निहारन किया और भी बहुत लौकीक मृत कार्य किये ॥ ६४ ॥ तब वह कूणिक कुमार उन महामानसिक दुःख कर पराभव पाया हुवा अन्यदा किसी वक्त अन्तपुर के साथ परिवार हुवा अपने महोपकरण वस्त्र पात्रादि ग्रहण करके राजगृही नगरी से निकलकर जहां चम्पानगरी थी तहां आया, आकर वहां विस्तीर्ण भोगोपभोग भोगवता कितनेक काल बाद सोग (चिन्ता) रहित हुवा॥६५॥ तब कोणिकराजा अन्यदा किसी वक्त कालादी दशों भाइयों को बोलाये बोलाकर राज्य का यावत् जनपद देश के

धारगसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सेणियराय निप्पाण निच्चिट्ठ जीवविप्पजहढम्भ पासति महया पियसोएण अप्फुण्णसमाणे फरसुनियत्तेविव चंपगवरपायवे धसइ धरणीतलंसि सव्वंगेहिं सन्निवडिए ॥ ९२ ॥ तत्तेणं से कुणिएकुमारे मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे विलवमाणे एवं वयासी—अहोणंमए अधण्णेण अकयपुण्णेण दुट्ठकय सेणियपिराय पियदेवय अच्चंत नेहाणुरागरत्ते नियल बंधण करंतेण ममंमूलागंच्छणं सेणिएराया कालगए तिकट्टु ईसर तलवर जाव संधिवालेसद्धिं

तब कोणिक कुमार जहां कैदीखाना थी वहां आया, आकर श्रेणिक राजा को प्राणरहित चेष्टारहित जीव रहित देख कर महा अधर पिता वियोग के शोक कर पराभव पाया हुआ कुहाडे से काटी हुई चम्पक वृक्ष की शाखा के समान धसकरके जमीन पर सर्वांग से पडगया ॥ ९२ ॥ तब कोणिक कुमार मुहूर्त के बाद स्वस्थ हुआ,रुदन करता हुआ आक्रन्दन करता हुआ शोक संताप करता हुआ विलापात करता हुआ यों कहने लगा—अहो देवानुप्रिय ! मैं अधन्य हूं अपुण्य हूं, मैं पूर्व जन्म में अच्छे कृत्य नहीं किये, दुष्ट काम का करनेवाला हूं, जो मैंने मेरे पिता श्रेणिक राजा देव समान गुरु समान मेरे पर अत्यन्त स्नेहानु राग रक्त जिन को निगड बन्धन में बंधे मेरे कारन से ही श्रेणिक राजा का मृत्यु हुवा, यों कहता हुवा

पुट्ठेठवेति, अप्पेगइयाओ खंधेठवेति, अप्पेगइयाओ कुंभेठवेति, अप्पेगइयाओ सीसेठवेति, अप्पेगइयाओ दंतमुसलेठवेति, अप्पेगइयाओ सुन्डग्गहाय उड्ढंवेहा-सउव्विहइ, अप्पेगइयाओ सोंडायगहायाओ अहोलंबेति, अप्पगइयाओ दंततरेसु निणति अप्पेगइयाओ असीतरेण ण्हाणति अप्पेगइयाओ अणेगाहिं कीलावणएहिं कीलावेति ॥ ६१ ॥ तएणं चंपाए नयरीए सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर महा पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव माइक्खाइ जाव परूवेति एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्लेकुमारे सेयणए गंधहत्थिणा अंतेउर तंचव जाव अणेगाहिं कीला कीलावणेहिं

स्थापन करे किसी को स्कन्धपर स्थापन करे किसी को कुम्भस्थल पर स्थापन करे किसी को मस्तकपर स्थापन करे किसी को दांतपर स्थापनकरे, किसी को सूंड में ग्रहणकर आकाश में उछाल पीछी ग्रहण करले, किसी को सूंड में ग्रहणकर झुला झुलाव किसी को दांतों के बीच में निकाले किसी को सूंड से पानी भर स्नान कराय और भी किसी को अनेक प्रकार की क्रीडा कराये ॥ ६१ ॥ तब चम्पानगरी के श्रृंगाटक पथमें चौक में बहुत रास्तों में राज्य पथ में बहुत लोगों परस्पर, इस प्रकार वार्तालाप करने लगे यावत् प्ररूपने लगे—यों निश्चय अहो देवानुप्रिय ! वेहल्ल कुमार सेचनक गंध

पालमाण विहरति ॥ ६६ ॥ तत्थण चंपाएणयरीए सेणियस्सरण्णोपुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कोणियस्सरण्णोसहोयर कणियसभाया विहल्लनामकुमारहोत्था, सुकुमाल जाव सुरूवे ॥ ६७ ॥ तत्तण से वहल्लस्स कुमारस्स सणिएणरन्ना जीवंतएण चेव सेयणए गंधहत्थी अठारस वंकहार पव्वदिन्ने ॥ ॥ तत्तण से वहल्लकुमार सेयणएणं गंधहत्थिणा अंतेउर परियालसंपरिवुडे चंपानयरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता अभिक्खणं २ गंगामहानई मज्जणयं उयरति, ॥ ६८ ॥ तत्तण सेयणए गंधहत्थि देवीओ सोंडाए गिण्हति २ अप्पेगइयाओ

राज्यभार भोग किये परन्तु स्वयं राज्य श्री करते हुवे पालन हुवे विचरने लगे ॥ ६६॥ वहां चम्पानगरी में श्रेणिक राजा का पुत्र चेलनारानी का आत्मज कोणिकराजाका सहोदर एक ही उदर में उत्पन्न हुवा छोटा भाई विहल नामक कुमार सुकुमाल यावत् सुरूप था ॥ ६७ ॥ तब वह वहल कुमार को श्रेणिक राजाने जीवित रहतेही सेचानक नामक गंधहस्ति और अठार सर वाला वंकहार दिया था तब वेहल कुमार सेचानक गंधहस्तिपर स्वार होकर अन्तउर (राणियों) आदि परिवार से परिवरा हुवा चम्पानगरी के मध्य मध्य में हो निकलकर वारम्वार गंगा नामक महानदी में मंजन करने को गमन करनेलगा ॥६८॥ तब सेचानक गंधहस्ति वेहलकुमार की अन्तउरमेंसे किसी रानी को सूंडसे ग्रहण करके किसी को पृष्ठपर

कीलावति ॥ तं एसण वहल्लुणकुमारण रज्जसिरिफल पच्चणुब्भवमाणे विहरति, णोकोणिएराया ॥ ७० ॥ तएणं तीसे पउमावइएदेवीए इमिसे कहाए लट्ठाए समाणीए अयमेय रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु वहल्ल कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा जाव अणगाहिं कीलावणए हिं कीलावेंति तएणं वहल्लकुमारे रज्जसिरिफल पच्चणुब्भवमाणे विहरति, णो कोणिएराया तं किण्हं अम्हं रज्जेणवा जाव जणवएणवा, जइणं अम्हे सेयणए गंधहत्थिनत्थी, तं सेयं खलु मम कुणियराय एयमट्ठं विण्णवि त्तए तिकट्टु एवं संपेहेति २ त्ता जेणेव कोणिएराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता

हस्ति सरोवर माथ अनेक क्रीडा करता है इस लिये यह वहल कुमार ही राज्यश्री के फल का अनुभव करता विचरता है परन्तु कोणिक राजा नहीं ॥ ७० ॥ तब कोणिकराजा की पद्मावती देवीने उक्त कथन सुनकर इस प्रकार अध्यवसाय यावत् समुत्पन्न हुआ यों निश्चय वेहल कुमार सेचनक गन्ध हस्ति यावत् अनेक क्रीडा करता हुआ विचरता है, इसलिये वेहल कुमार राज्यश्री का फल का अनुभव करता है परंतु कोणिकराजा नहीं इस लिये क्या काम का हमारे राज्य जनपददेश, यदि हमारे सेचनक गंध हस्ति नहीं है, इस लिये मत कारक है मुझे किं कोणिक राजा को यह कथन की विनंति करूं,

करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु सामी ! वेहल्लकुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा जाव अणेगाहिं कीलावेति, किण्ह सामी ! अम्ह रज्जेणं जाव जणवएणवा अह्नण अम्हं सेयणए गंधहत्थि णत्थी ॥ ७१ ॥ तएणं से कोणिएराया पउमावईएदेवीए एयमट्टं णो अढाइ णो परिजाणइ तुसणीए संचिट्ठति ॥ ७२ ॥ तत्तेणं सा पउमावई देवी अभिक्खणं २ कुणीयराय एयमट्ठं विण्णवइ ॥ तत्तेणं से कोणिएराया पउमावईएदेवीए अभिक्खणं २ एयमट्ठं विण्णविज्जमाण अन्नयाकयाइ वेहल्लकुमारं सद्दावेइ २ त्ता सेयणए गंधहत्थि अठारस वंकचहार जायति ॥ ७३ ॥ तत्तेणं

ऐसा विचार कर जहां कोणिक राजा था तहां आई आकर हाथ जोडकर यावत् एसा बोली—यों निश्चय अहो स्वामी ! वेहल कुमार सेचानक गंधहस्ती से अनेक क्रीडा करता है तो क्या करना है हमारे का राज्य यावत् जनपद जब यदि हमारे सेचानक गंधहस्ती नहीं है तो ! ॥ ७१ ॥ तब कोणिक राजाने उक्त पद्मावती के कथन का आदर नहीं किया यावत् अच्छा भी नहीं जाना मौन रहे ॥ ७२ ॥ तब पद्मावती देवी वारम्वार कोणिक राजा को उक्त कथन विनवने लगी, तब कोणिकराजा पद्मावती देवी को वारम्वार की हुई प्रेरणा से प्रेराया हुआ अन्यदा किसी वक्त वेहल कुमार को बोलाया, बोलाकर सेचानक गंधहस्ति अठारहसरके हार की याचना की ॥ ७३ ॥ तब वेहल कुमार कोणिक राजा से एसा

से यहल्ल कयार कुणिपायएव वयासी—एवं खलु सामी ! सेणिएणरण्णा जीवतएणचेव सयणयगंधहत्थि अठारसवंकहार दिन्न त जइण सामी ! तुब्भममरज्जस्सय अद्धपलयट्ठ तेअण अम्ह तुमं सयणयगंधहत्थि अठारस वंकहार दलयामी ॥ ७४ ॥ तएणं से कोणिएराया वेहल्लकुमारस्स एयमट्ठं नो अढाति नो परिजाणाति अभिक्खणं २ सयणय गंधहत्थी अठारस वंकहार जायति ॥ ७५ ॥ तएणं तस्स वेहल्लकुमारस्स कुणिएणरन्ना अभिक्खणं २ सयणयगंधहत्थि अठारस वंकहार एवं अक्खिविउकामेणं गिण्हिउकामेण उद्दालेउकामेण एवं कुणिएराया

भावार्थ—यों निश्चय अहो स्वामी! श्रेणिक राजाने जीते हुवे ही मुझ सेचानक गंध हस्ति व अठारह सरावंक हार दिया है इस लिए यदि अहो स्वामी ! तुम मुझे राज्य का आधा हिस्सा देवो तो सेचानक गंध हस्ति अठारह सरावंकहार मैं तुम को दूं ॥ ७४ ॥ तब कोणिक राजाने वहेल कुमार का उक्त कथनका आदर नहीं किया अच्छा भी नहीं जाना परन्तु वारम्वार सेचानक गंध हस्ति की और अठारहसरावंक हार की याचना करने लगा यों ग्रहण करने का अभिलाषी बना बलात्कार से छीन लेने का अभिलाषी बना ॥ ७५ ॥ तब वहेल कुमारने विचार किया कि यहां तक कोणिकराजा सेचानक गंध हस्ति

सेयणय गधहत्थि अठारसषकचहार तं जाव ताव मम कोणिएराया सेयणयगध हत्थि अठारसवकचहार गहाय अनेउरपरियालसपरिवुडस्स सभडमत्तोवगरणमायाए चपाआनयरीओ पडिनिक्खमति २ त्ता वेसालीए अज्जग चेडगराय उवसपज्जित्ताण विहरित्तए एवं सपेहइ २ त्ता ॥ ७६ ॥ तत्तण से वेहल्ल कुमारे अन्नयाकयाइ कुणिय रन्नो अतर जाणेति सयणयगधहत्थि अठारस वकचहार गहाय अतेउर परियाल सेपरिवुडे सभडमत्तोवकरणमायाए चपाआणयरीओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव वेसालीनयरी तणेव उवागच्छइ २ त्ता वेसालीए णयरीए अज्जगचेडगराय उवसपज्जि-

भौर अठारह सरावकहार ग्रहण नहीं करे हम के पहिले सेचनक गंधहस्ति अठारासरावकहार ग्रहणकर अन्तपुरादि मेरा सब परिवारसे परिवरा हुआ भंडमतोपकरण ग्रहणकर चम्पानगरीसे निकलकर विशाला नगरीमें आजा—नाना (माता के पिता) चेडा राजा को अंगीकार कर विचरूं, एसा विचार किया ॥ ७६ ॥ तब वह वेहल कुमार अन्यदा किसी वक्त कोणिक राजा का अन्तर जाना, उन को मालूम नहीं पड़े इस प्रकार सेचनक गंधहस्ति अठारासरावकहार ग्रहण करके अन्तेपुर परिवार से परिवरा हुआ भंडमतोपकरण ग्रहण कर के चम्पा नगरी से निकलकर जहां विशाला नगरी थी वहां आया, वैशाला नगरी

राण विहरति॥ ७७॥ तएणं से कोणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं खलु वेहल्ले
कुमारे मम असंविदितेणं सेयणयं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं हारं अंतेउर जाव अज्जग
चेडयरायं उवसंपज्जित्ताणं विहरति तंसेयं खलु मम सेयणयं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं हारं
दूयं पेसित्तए एवं संपेहेइ २ त्ता दूयं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छहणं तुमं
देवाणुप्पिया ! वेसालिनगरिं तत्थणं तुमं मम अज्जं चेडयरायं करयल वद्धावेइ २
त्ता एवं वयासी! एवं खलु सामी ! कोणिएराया विन्नवेति एसणं वेहल्ले कुमारे कुणि
यस्स रण्णो असंविदितेणं सेयणयं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं हारं गहाय इहं हव्वमागए

के पासाला का अंगीकार कर विचरने लगा ॥ ७७ ॥ तब कोणिक राजा उक्त कथा जानी कि यों निश्चय वेहल कुमार मुझ बिना पूछे मेरा सेचनक गंधहस्ति अठारसरा हार ग्रहण कर अन्तपुर परिवार साथ आर्य नानाजी चेडाराजा का अंगीकार कर विचरता है इसलिये श्रेय है मुझ कि सेचनक गंधहस्ति अठारसराहार के वास्ते दूत भेजूं ऐसा विचार कर दूत को बोलाया, बोलाकर यों बोला—अहो देवानुप्रिया ! तुम वैशाला नगरी जाओ वहां तुम मेरे नानाजी चेडाराजा का हाथ जोडकर वधाकर यों कहना—यों निश्चय अहो स्वामी ! कोणिक राजाने विनती की है कि यह वेहल कुमार कुणिक राजा को विना पूछे सेचनक गंधहस्ति अठारसराहार ग्रहण कर यहां शीघ्र आया है इसलिये आप अहो स्वामी !

तेण तुब्भे सामी ! कुणियराय अणुष्हमाणा सेयणय गंधहत्थिं अठारसवंकंचहारं कुणियस्सरण्णो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमार पेसह ॥ ७८ ॥ ततो सेदूए कोणियरस करयल जाव पडिसुणिसि २ त्ता जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहाचित्तो आव वद्धावेति २ त्ता एव वयासी कुणीएराया विन्नवेइ एव खलु सामी ! एतण विहल्ले कुमारे तहेव भाणियव्व जाव वेहल्ले कुमारे पेसह ॥ ७९ ॥ तएणं से चेडएराया तदूय एव वयासी—जह चेव णं देवाणुप्पिया ! कुणिएराया सेणियस्सरण्णोपुत्ते चेल्लणाए देवीए

कोणिक राजा पर अनुग्रह कर के सेचानक गन्धहस्ति अठारसरा वंकहार कुणिकराजा का पीछा समर्पीजीये और बहल कुमार को भी पीछा समर्पीजीये ॥७८॥ तब वह दूत कोणिकराजा का वचन हाथ जोड़ प्रमाण किया, जहां स्वयं का गृह था वहां आया, आकर जिस प्रकार चित्त प्रधान श्वेताम्बिका नगरी से निकला था उस ही प्रकार यह भी चम्पानगरी से निकला यावत् वैशाला नगरी आकर चेडाराजा को जय हो विजय हो ऐसा बधाकर यों कहनलगा यों निश्चय अहो स्वामी ! कुणिक राजा विनती करता है कि बेहल कुमार हाथी हार लेकर आया है सो उसका पीछा समर्पीजीये इत्यादि सब पूर्वोक्त प्रकार कहना यावत् बहल कुमार को भी भेज दो॥ ७९ ॥तब चेडाराजा उस दूत से ऐसा बोले-अहो देवानुप्रिय !

अणए समनतुए तहेवण वेहल्लकुमार सेणियस्सरण्णोपुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए असंनतुए सेणिएणरन्ना जीवंतेण चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सयणय गंधहत्थि अट्ठारसवंकहार पव्वदिन्ने तं जइणं कोणिएराया वेहल्लस्स रज्जस्सय जणवयस्स अद्धद्दलयति तोणं अ ण य ण भ थ अट्ठारसवंकहार पच्चप्पिणामि वेहल्लकुमारे पेसमि ॥ गदूय समाणत मा ३ एइ ॥ ८० ॥ तएणं सेदूए चेडएणरण्णो पडि विसज्जिएसमाणे जेणेव चाउघंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चाउघंटे दूरुहति

जिस प्रकार कूणिक राजा श्रेणिक राजाका पुत्र चेलना का अंग जात मेरा नातु (दोहिता) तैसा ही वेहल कुमार श्रेणिक राजा का पुत्र चेलना का अंग जात मेरा नातु है परन्तु श्रेणिक राजा जीवित थे ही वेहल कुमार को सेचनक गंधहस्त अठारासरा हार पहिले ही दिया है इसलिये यदि कूणिक राजा वेहल कुमार को राज का यावत् धन वह देश का आधा विभाग देवे तो मैं सेचनक गंधहस्ति अठारासरा हार कोणिक राजा को पीछा दिलाऊं और वेहलकुमार को भी भेजूं, यों कहकर उस दूत का सत्कार सन्मान कर विसर्जन किया ॥ ८० ॥ तब वह दूत महाराजाने विसर्जन किये बाद जहां चार घंटावाला अश्वरथ था वहां आया उसपर स्वार हो वैशाला नगरी के मध्य २ में से निकलकर सुख से वास वसता हुआ कोणिक

वेसालिं नगरीं मज्झं मज्झेणं निगच्छति २ त्ता सुहंहि २ वसमाणे जाव पद्धाविया। एवं वयासी—चेडएराया आणावति पहा चेरण कुणिएराया सेणियस्सरण्णोपुत्ते चल्लणा देवीए अत्तए ममनतुए तचेव भाणियव्वं जाव वेहल्लकुमारे पेसेमि ॥ तनरेतिणं सामी! चेडएराया सेगणग गधहटि अठारस वंकहत्तार वेहल्ल नो पेसेमि ॥८१॥ तत्तेणं से कुणिएराया दुच्चंपिदूय सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी-गच्छण तुम देवाणुप्पिया! वेसालिनगरीं तत्थण तुम मम अज्जग चेडगराया जाव एवं वयासी—एवं खलु सामी! कुणिएराया विन्नवेइ जाणिकाणिए रयणाणि समुप्पज्जति सव्वाणि

राजा के पास आया, कोणिक राजा को दुवाया बधाकर यों कहने लगा-अहो स्वामी! चेडा राजाने इस प्रकार कहा है—जिस प्रकार कोणिक श्रेणिक राजा का पुत्र चलनादेवी का अंगजात मेरा नातु सा मेरा है। कहना यावत् सो वेहल्लकुमार को पीछा भेजूंगा? इसलिये अहो स्वामी! चेडा राजा सेचानक गन्धहस्ति अठारह सरसेकहार नहीं भजता है और वहल्ल कुमार को भी नहीं भजते हैं॥८१॥ तब कोणिक राजा दूसरा दूत को बोलाया, बोलाकर यों कहने लगा-जाओ तुम हे देवानुप्रिया! वैशाला नगरी वहां तुम मेरे नाना चेडाराजा को यावत् यों कहना यों निश्चय अहो स्वामी! कोणिकराजा विनंती करता है कि

प्पिया! कुणिएराया सेणियस्सरन्नोपुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए जहा पढम जाव वेहल्लय कुमार पेसेह, तदूय सक्करेति समाणेति पडिविसज्जेति ॥ ८४ ॥ तत्तेण सेदूए जाव कुणियस्सरण्णो वद्धावित्ता एव वयासी—चेडएराया आणवेति जहा चेव णं देवाणुप्पिया! कुणियराया सेणियस्सरण्णापुत्ते चेल्लणाएदेवीए अत्तए जाव वेहल्ल कुमारं पेसेमि, त न दलेण सामि! चेडएराया सेयणय गधहत्थि अठारसवंकचहार वेहल्ल कुमार नो पेसेति ॥ ८५ ॥ तत्तेण सेकुणिएराया तस्स दुयस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चानिसम्म आसुरुत्त जाव मिसमिसेमाणे तच्चंदुय सद्दावेति २ त्ता एव

दूत से ऐसा बोला—जैसा कोणिक राजा श्रेणिक राजा का पुत्र चेलना देवी का आत्मज सब जैसे प्रथम कहा वैसा ही कहा यावत् तो वहल्कुमार को भेजूंगा उस दूत का सत्कार सम्मान करके विसर्जन किया ॥ ८४ ॥ तब वह दूत यावत् कोणिक राजा के पास आकर वधाकर यों कहने लगा—चेडा राजा आज्ञा देते हैं कि जिस प्रकार निश्चय अहो देवानुप्रिय! कोणिक राजा श्रेणिक राजाका पुत्र चेलना देवीका अंगजात यावत् वेहल कुमार को भेजूंगा इस लिये अहो स्वामी! नहीं देता है चेडा राजा सेचानक गंधहस्ति अठारहसरावहार और वहल कुमार को भी नहीं भेजता है ॥ ८५ ॥ तब कोणिक राजा उस दूत के मुख से उक्त वचन सुने अवधारे यावत् आसुरक्त यावत् मिसमिसायमान हुवे तीसरे दूत को

वयासी—गच्छहण तुम देवाणुप्पिया ! वेसालीएणयरीए चेडगस्सरण्णो वामेण पावण पादपीढ अक्कमाहिं अक्कमित्ता कुन्तग्गेण लेहपण्णावेहि २ त्ता आसुरुत्ते जाव मिसमिसमाण तिवलियंभिउडि निडालेसाहट्टु चेडगराय एव वयासी—हंभो चेडगराया!! अपत्थियपत्थिया दुरंत जाव परिवज्जिया,एसणं कोणिराया आणवेहिं पच्चप्पणाहिण कूणिय रण्णो सेयणग अठारसवंकहार वेहल्लयकुमारपसेहिं अहवा जुज्झसज्जोचिट्ठाहिं, एसणं कूणिएराया सबले सवाहणे सखधावेरण जुज्झमज्जे हव्वं हव्वमागच्छति,

भावार्थ—यों कहने लगे अहो देवानुप्रिय ! तुम वैशालानगरी जावो, वैशाला नगरी के चेटक राजा के सिंहासन को डावे पाँव से ठोकर मारकर भाले के अग्र पर रखकर लेख देना इतर आसुरक्त होकर यावत् मिसमिसाट करते त्रिवली मस्तक पर चढाकर चेटकराजा को ऐसा कहना—अहो चेटक राजा! अप्रार्थिक [मृत्यु] के प्रार्थिक खराब लक्षण क धारक यावत् ह्रीश्री रहित यह कोणिक राजा आज्ञा करता है कि कोणिक राजा का सेचानक गंध हस्ति और अठारहसरांवंकहार पीछा देदे, वेहल कुमार को पीछा भेज दे नहीं तो युद्ध करने को सज्ज होकर आ यह देख कोणिक राजा चतुरंगिनी सेना वाहन सहित सर्व ऋद्धियुक्त सेना युक्त युद्ध करने को सज्ज होकर शीघ्रता से आता है ॥ ८९ ॥

॥ ८६ ॥ तत्तेणं से दूए करयल तहेव जाव जेणेव चेडएराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव वद्धावित्ति एवं वयासी—एसणं सामी! मम विणय पडिवत्ती, इयाणिं कुणियस्सरण्णो आणती चेडगस्सरण्णो वामेणंपाएणं पायपीढं अक्कमेति २ त्ता आसुरुत्ते कुंतग्गेलेहं पणावेति तत्थ सरवधत्तारेणं इह हव्वमागच्छइ ॥ ८७ ॥ तत्तेणं से चेडराया तस्सदुयस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव साहट्टु एवं वयासी—न अप्पिणामिणं कुणियस्सरण्णो सेयणय अठारस वंकचहारं वेहल्लचकुमार नो पेसामि, एसणं जुज्झचिट्ठामी, दूय असक्कारिय असमा

तब वह दूत कोणिक राजा का वचन प्रमाण कर चेडा राजा के पास आया, आकर हाथ जोडकर बधाया बधाकर यों कहने लगा अहो स्वामी! यह मेरी विनय की प्रवृत्ति करी अब कोणिक राजा की आज्ञा [यों कहकर] चेडा राजा के सिंहासन को बाये पांव कर ठोकराया, ठोकरमार शीघ्रता से आसुरक्त कोपायमान हुवा भालाग्र लेख समर्पन किया, सब वृत्तांत कह सुनाया यावत् स्कंधावार सहित कोणिक राजा शीघ्र यहां आते हैं ॥ ८७ ॥ तब वे चेडा राजा उस दूत के पास उक्त अर्थ श्रवण कर अवधारकर आसुरक्त—कोपायमान हुवे यों कहने लगे—नहीं दूंगा मैं कोणिक राजा को सेचानकहस्ति और वंक हार और वेहल कुमार को भी नहीं भेजूंगा यह प्रसंग में युद्ध करने तैयार हूं, यों कह उस दूत का

वयासी–गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालीएणयरीए चेडगस्सरण्णो वामेण पाएण पायपीढं अक्कमाहिं अक्कमित्ता कुंतग्गेण लेहंपणामेहिं २ त्ता आसुरुत्ते जाव मिसमिसमाण तिवलियंभिउडं निडालसाहट्टु चेडगराय एवं वयासी–हंभो चेडगराया!! अपत्थियपत्थिया दुरंत जाव परिवज्जिया, एसणं कोणिराया आणवेहिं पच्चप्पणाहिणं कुणियस्स रण्णो सेयणगं अठारसवंकहारं वेहल्लंकुमारंपेसेहिं अहवा जुज्झसज्जोचिट्ठाहि, एसणं कुणिएराया सबले सवाहणे सखंधावारेण जुज्झसज्जे इहं हव्वमागच्छति,

बोलाकर यों कहने लगे अहो देवानुप्रिय ! तुम वैशालानगरी जावो, वैशाला नगरी के चेटक राजा के सिंहासन को बाये पांव से ठोकर मारकर भाले के अग्र पर रखकर लेख देना देकर आसुरक्त होकर यावत् मिसमिसाट करते त्रिवली मस्तक पर चढाकर चेटकराजा को ऐसा कहना—भो चेटक राजा! अप्रार्थित (मृत्यु) के प्रार्थिक खराब लक्षण के धारक यावत् ह्रीश्री रहित यह कोणिक राजा आज्ञा करता है कि कोणिक राजा का सेचनक गंध हस्ति और अठारहसरावहार पीछा देवे, वेहल कुमार को पीछा भेज दे नहीं तो युद्ध करने को सज्ज होकर आ यह देख कोणिक राजा चतुरंगिनी सेना सहित वाहन सहित सर्व स्कंधावार सेना युक्त युद्ध करने को सज्ज होकर शीघ्रता से आता है ॥ ८६ ॥

अनदारेण निछुहावेति, तसेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह चेडगस्सरण्णो जुत्त गहित्तए ॥ ८९ ॥ तएण कालाइया दसकुमारा कुणियस्सरण्णो एयमट्ठ विणएण पडिसुणेति ॥ ९० ॥ तत्तेण से कोणियेराया ते कालादिए दसकुमारे एव वयासी गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसुरज्जेसु पत्तेय २ ण्हाया जाव पायच्छित्ता हत्थिखंधवरगया पत्तेय २ तिहिं दंतीहिंसहस्सेहिं एव तिहिंरहसहस्सेहिं तिहिंआससहस्सेहिं तिहिं मणुस्स कोडिहिं सद्धिसंपरिवुडे जाव रवेण सएहिं २ तो नगरेहिंतो पडिणिक्खमति मम अंतिए पाउब्भवह ॥ ९१ ॥ तत्तेण कालादीया दसकुमारे कोणियस्सरण्णो एयमट्ठ

सन्मान नहीं किया, पीछा ग्रास निकाल दिया इसलिये अपनको श्रेय है कि चेडाराजाके साथ युद्ध उपाय ग्रहण अर्थात् युद्ध करना ॥ ८९ ॥ तब काला दि दशों कुमारों कोणिकराजा का उक्त कथन सविनय ममान किया ॥ ९० ॥ तब कोणिकराजा उन कालादि कुमारों से ऐसा बोला अहो तुम अहो देवानुप्रिया! अपनेराज्यमें अलग २ जाकर के यावत् शुद्ध होकर हस्ति हस्तीपर आरूढ होकर अलग २ तीनहजार हाथी तीनहजार घोडे तीनहजार रथ तीनकोटी मनुष्य इनके साथ परिवरयुक्त सर्व ऋद्धि युक्त यावत् वादित्रके नादयुक्त अपने २ नगर से निकलकर मेरे पास आवो ॥ ९१ ॥ तब काला दि दशों कुमार कोणिकराजा का उक्त कथ

णिय अवदारेणं निछुहावइ ॥ ८८ ॥ तएणं से कूणिए तस्स दूतस्स अंतिए एयमट्ठ सोचा निसम आसुरुत्ते कालादीए दसकुमारे सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! वेहल्लकुमारे ममं असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं हारं अंतेउर सभंडं गहाय चंपाओ निक्खमति वेसालिं अज्जगं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥ तएणं से मए सेयणगस्स गंधहत्थिस्स अट्ठारसवंकहार अट्ठाए दूयापेसिया तेय चेडएणं रण्णा इमेणं कारणेणं पडिसेहिया अदुत्तरंचणं ममं तच्चे दूए असक्कारिए असम्माणिए

सत्कार सन्मान बिन किये मए (पीछे के) द्वार से निकाल दिया ॥ ८८ ॥ यह दूत कोणिकराजा के पास आकर सब व्यतिकर सुनाया तब कोणिकराजा उस दूत के पास उक्त अर्थ श्रवण करके धरधारकर आसुरक्त हुवा कालादि दशों भाईयों को बोलाकर यों कहने लगा—यों निश्चय अहो देवानु प्रिय! वेहल कुमार मेरे को बिना मालुम किये सेचनकगंधहस्ति अठारहसरावंकहार अंतेपुर भंडोप करण का ग्रहण कर चंपानगरी से निकलकर विशाला नगरी के नाना चेडा राजा को अंगीकार कर विचरने लगा तब मैंने सेचनक गंध हस्ति अठारहसरावंकहार के लिये दूत को भेजा वह चेडा राजा इसकारन प्रतिषेध किया, खाली पीछा भेजदिया फिर दूसरा और तीसरा दूत मैंने भेजा उसका सत्कार

अवद्दारेण निच्छुहावेति, तसेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह चेडगस्सरण्णो जुद्धं गहित्तए ॥ ८९ ॥ तएण कालाइया दसकुमारा कुणियस्सरण्णो एयमट्ठं विणएण पडिसुणेति ॥ ९० ॥ तत्तेण से कोणियेराया ते कालादिए दसकुमारे एव वयासी गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसुरज्जसु पत्तेय २ ण्हाया जाव पायच्छित्ता हत्थिखंधवरगया पत्तेय २ तिहिं दंतीहिंसहस्सहिं एव तिहिंरहसहस्सेहिं तिहिंआससहस्सेहिं, तिहिं मणुस कोडिहिं, सद्धिंसंपरिवुडे जाव रवेणं सएहिं २ तो नगरेहिंतो पडिणिक्खमति मम अंतिए पाउभवह ॥ ९१ ॥ तत्तेण कालादिया दसकुमारे कोणियस्सरण्णो एयमट्ठं

सम्मान नहीं किया, पीछा ग्रास निकाल दिया इसलिये अपनका श्रेय है कि चेडाराजाके साथ युद्ध उपाय ग्रहण अर्थात् युद्ध करना ॥ ८९ ॥ तब काला दि दशों कुमारों कोणिकराजा का उक्त कथन सविनय प्रमाण किया॥९०॥तब कोणकराजा उन कालादि कुमारों से ऐसा बोला अहो तुम अहो देवानुप्रिया! अपन२ राज्यमें अलग २ स्नानकर के यावत् शुद्ध होकर हस्ति स्कन्धपर आरूढ होकर अलग २ तीनहजार हाथी तीनहजार घोडे तीनहजार रथ तीनकोटी मनुष्य इनके साथ परिवरहुवे सर्वऋद्धि युक्त यावत् वादिंत्रके नादयुक्त अपने २ नगर से निकलकर मेरे पास आवो ॥ ९१ ॥ तब कालादि दशों कुमार कोणिकराजा का उक्त अर्थ

ण्हाया सएसु २ रज्जेसु पत्तेय २ ण्हाया जाव तिहिं मणुस्ससहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं २ तो नगरेहिंतो पडिनिक्खमति जेणेव अंगजणवए जेणेव चंपाणयरीए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, तत्तेणं कालादि दसकुमारा जाव जेणेव कूणियराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव वद्धावेति ॥ १२ ॥ तत्तेणं कूणियराया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया! अभिसेक्क हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगयरह चाउरंगिणिसन्नाहेह मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति ॥ १३ ॥ तत्तेणं से कूणियराया जेणेव मज्जणघरे जाव

स्नान कर अपने २ राज्य में अपने २ गये स्नानकिया यावत् तीनक्रोड मनुष्य के साथ परिवरे सर्व ऋद्धि युक्त वादित्र के गणारवकर अपने २ नगर से निकलकर जहां अंगदेश जहां चम्पा नगरी थी वहां आये जहां कोणिकराजा थे वहां आकर दशों कुमारों हाथ जोडकर कोणिकराजा को वधाये ॥ १२ ॥ तब कोणिक राजा कौटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा अहो देवानुप्रिया ! शीघ्रता से अभिषेक हस्ति रत्न सज करो घोडे हाथी रथ पायदल चतुरंगनीसेना सजकरो, मेरी यह आज्ञा पीछी मुझे सुपरत करो, यावत् आज्ञाकारी पुरुषने सब सजाकर आज्ञा पीछी सुपरत की ॥ १३ ॥ तब कोणिक राजा जहां मज्जन

पडिनिगच्छति, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव नरवई दुरुढे ॥ १४ ॥ तचेण स कोणिएराया तिहिंदति सहस्सेहिं जाव रवेण चपनगरिं मज्झमज्झेण निगच्छइ २ त्ता जेणेव कालादिया दसकुमारा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कालादीएहिं दसहिं कुमारेहिं सद्धिं एगओ मिलायति॥१५॥तचेण से कुणिएराया तेतिसाए दंति सहस्सेहिं ततिसाए आससहस्सेहिं तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाएमणुस्सकोडीहिं सद्धिं सपरिवुडे मन्त्रि-ड्डिए जाव रवेण सुभेहिंवसति पातरासेहिं नातिविगट्ठेहिं अतरावासेहिंवसमाणा अग-जणवयस्स मज्झमज्झेग जणेव विदेहजणवए जणेव वेसालीनगरी तेणेव पहारेत्थग-

घर था वहां आया आकर कसरत मालिश मजनकर वस्त्र भूषण धरादि से सजके बाहिर उपस्थान शालामें आया यावत् नृपति गजपति पर आरूढ हुवा ॥ १४ ॥ तब कोणिक राजा तीन हजार हाथी यावत् वादिंत्र के गर्जारवकर चम्पानगरी के मध्य में से निकलकर जहां कालादि दशों कुमार थे वहां आया, आकर कालादि दशों कुमारों से एकत्र मिले ॥ १५ ॥ तब कोणिकराजा तेतीस हजार हाथी तेतीस हजार घोडे तेतीस हजार रथ, तेतीस कोडी पायदल साथ परिवार हुवा सर्व प्रकार की ऋद्धि युक्त यावत् वादिंत्र के गर्जारव युक्त सुखसुख से मास वसता—मुकाम करता सिरायणी भोजनादि भोगवता अन्तर रास्ते में रहता हुवा मगदेश के मध्य मध्य में होकर जहां विदेह देश जहां वेशाला नगरी वहां आनेके मार्ग में गमन

साम्हा सएसु २ रज्जेसु पत्तेय २ ण्हाया जाव तिहिं मणुसकोडिहिंसद्धिं सपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं २ ता नगरहिंतो पडिनिक्खमति जेणव अंगाजणवय जेणेव चंपाएणयरीए तणेव उवगच्छइ २ त्ता, तत्तेणं कालादि दसकुमारा जाव जेणव कोणियराया तेणेव उवगच्छइ २ त्ता करयल जाव वद्धावेति ॥ १२ ॥ तत्तेणं कोणिएराया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया! अभिसेकं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगयरह चाउरंगिणिसन्नाहेह मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणाति ॥ १३ ॥ तत्तेण से कुणियराया जणेव मज्जणघरे जाव

श्रयण कर अपने २ राज में भवन २ गये स्नानक्रिया यावत् तीनक्रोड मनुष्य के साथ परिवर सर्व ऋद्धि युक्त वादित्र के गणारवकर अपने २ नगर से निकलकर जहां अंगदेश जहां चम्पा नगरी थी वहां आये जहां कोणिकराजा थे तहां आकर दशों कुमारों हाथ जोडकर कोणिकराजा को वधाये ॥ १२ ॥ तब कोणिक राजा कुटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा अहो देवानुप्रिया ! शीघ्रता से अभिषेक हस्ति रत्नसज्जकरो घोडे हाथी रथ पायक चतुरंगनीसेना सज्जकरो, मेरी यह आज्ञा पीछी मेरे सुपरत करो यावत् आज्ञाकारी पुरुषने सब सजाकर आज्ञा पीछी सुपरत की ॥ १३ ॥ तब कोणिक राजा जहां मज्जन

पडिनिगच्छति, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव नरवई दुरुढे ॥ १४ ॥ तत्तेण स कोणिएराया तिहिंवति सहस्सेहिं जाव रवेणं चपनगरिं मज्झमज्झेण निगच्छइ २ त्ता जेणेव कालादिया दसकुमारा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कालादीएहिं दसहिं कुमारेहिं सद्धिं एगओ मिलायति॥ १५॥तत्तेण से कुणिएराया तेतिसाए दंति सहस्सेहिं ततिसाए आससहस्सेहिं तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाएमणुस्सकोडीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्वि ड्डिए जाव रवेण सुभेहिंवसति पातरासेहिं नातिविगट्ठेहिं अतरावासेहिंवसमाण। अग-जणवयस्स मज्झमज्झेणं जणेव विदेहजणवए जणेव वेसालीनगरी तेणेव पहारेत्थग

पर था वहां आया आकर कसरत मालिश मजनकर वस्त्रा भूषण शस्त्रादि से सजके बाहिर उपस्थान शालामें आया यावत् नृपति गजपतिपर आरूढ हुवा ॥ १४ ॥ तब कोणिक राजा तीन हजार हाथी यावत् वादिंत्र के गर्जारवकर चम्पानगरी के मध्य में से निकलकर जहां कालादि दशों कुमार थे वहां आया, आकर कालादि दशों कुमारों से एकत्र मिले ॥ १५ ॥ तब कोणिकराजा तेतीस हजार हाथी तेंतीस हजार घोडे तेंतीस हजार रथ, तेंतीस कोडी पायदल साथ परिवार हुवा सर्व प्रकार की ऋद्धि युक्त यावत् वादिंत्र के गर्जारव युक्त सुखसुख से वास वसता—मुकाम करता सिरामणी भोजनादि भोगवता अन्तर रास्ते में रहता हुवा अंगदेश के मध्य मध्य में होकर जहां विदेह देश जहां वेशाला नगरी वहां आनेके मार्ग में गमन

मणाए ॥ ९१ ॥ तचण स घडाराया इमीस कहाए लद्धट्टसमाण नवमल्लइ नवलच्छइ कासीकासलगा अठारस वि गणरायाणा सद्दावति २ त्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्लकुमारे कोणियरणणा असंविदतेण सयणग गंधहत्थि अठारसवकचहार गहाइ इह हव्वमागच्छति तत्तण कोणिएण सेयणगस्स अठारवकहारसय अट्ठाए ततोदूयापसिया तयमए इमण कारणण पडिसेहिया तत्तेण स कुणिएराया मम एयमट्ठ अपडिसुणमाण चाउरंगिणीएसर्द्धिसपरिवुडे जुज्झसज्ज इह हव्वमागच्छइ, तकिण्ण देवाणुप्पिया ! सयणग अठारसवककोणियस्सरण्णा पच्चप्पिणामो वेहल्लकुमार

कर रहा है ॥ ९१ ॥ तब चेडा राजा को उक्त कथा मालूम होते (अपने धर्ममित्र) काशी आदि नव मल्ल देश के राजाओं को और कोशल आदि नव लच्छ देशाधिपति राजाओं को यों अठारे कोशलदेश के अठारा राजा को बुलाकर यों बोला यों निश्चय अहो देवानुप्रिया ! वेहलकुमार कोणिकराजा से गुप्त सचानक गंधहस्ति अठारासरहार ग्रहणकर यहां शीघ्र आया है तब कोणिक सचानक हस्ति और अठारासराहार कारण तीन वक्त दूत भेजे उन को मैने कहा अणिकराजा जीते हुवे ही वहलकुमार को हाथी हार दिया है आ तु पराम का विभाग होता में हाथीहार और वेहल कुमार को मत देवाडूं तब कोणिक राजा मेरे इस वचनको नहीं सुनता हुवा चतुरंगनीसेना के साथ परिवरा युद्ध के लिये आरहा है, इसलिये अहो देवानु

पेसामो उदाहु जुज्झिस्था ? ॥ ९७ ॥ तत्तेण नवमल्लइ नवलच्छइ कासीकोसलगा अठारसविगणरायाणो चेडगराय एवं वयासी—नो एव सामी! जुत्तवा पत्तवा रायसरिसवा जन सयणग अठारस वंकहार कुणियस्सरण्णो पच्चप्पिणिज्जति, वेहल्लकुमार सरणागए पिसिज्जति, त जइण कुणिएराया चउरंगिणीए सार्द्धं सपरिवुड जुज्झसज्जे इह हव्वमा गच्छति, तत्तेण अम्हे कुणिएणरन्नसार्द्धं जुज्झामो ॥ ९८ ॥ तत्तेण से चेडएराय ते नवमल्लइ नवलच्छइ कासीकोसलगा अठारसविगणरायाणो, एवं वयासी—जइण

मियाभो! कहिये क्या सेचानक गंधहस्ति अठारासरावकहार कोणिकराजाको पीछादेना वेहल कुमारको पीछा भेजना या युद्ध करना!॥९७॥तब नवमल्लदेश के नवलच्छ देश के काशी कोशल देश के अठारा राजा चेडा राजा से यों कहने लगा—अहो स्वामी! यह योग नहीं प्रतीतकारक नहीं राजेश्वर को जो सेचानकगंधहस्ति और अठारह सरावकहार कोणिक राजा का पीछा देना और वेहल कुमार जो शरण आया है उसे भेजना इस लिये जो कोणिकराजा चतुरंगीनी सेना के साथ परिवरा हुवा युद्ध करने को यहां शीघ्रतासे आता है, तो हम कोणिक राजा के साथ युद्ध करेंगे ॥ ९८ ॥ तब चेडा राजा उन नवमल्ल देश के नवलच्छ देश के यों काशी कोशाल देश के अठारह राजाओं से एसा बोला—यदि कोणिक राजा के साथ युद्ध करना चाहते है तो अहो देवानुप्रिय ! तुम जाओ अपने२ राज्य में स्नान कर चतुरांगिनी सेना के परिवार से परिवर यहां के

देवाणुप्पिया ! कुणिएणरन्नासाद्धिं जुज्झइ, त गच्छइण देवाणुप्पिया ! सएसएसु रज्जेसु ण्हाया जहाकाली जाव जएण विजएण वधावेत्ता ॥ ९९ ॥ तत्तेण स चेड एराया कोडंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—अभिसेक जहा कोणीए जाव दुरूढेसमाण ॥ १०० ॥ तत्तेण से चेडएराया तिहिं दंतीसहस्सेहिं जहा कुणिए जाव वेसालिनगरिं मज्झं मज्झेणं निगच्छति २ त्ता जेणेव ते नवमल्लइ नवलच्छई कासीकोसलगा अठारसविगणरायाणो तेणव उवागच्छइ २ त्ता, तत्तेण से चेडएराया

गर्जारव सहित सज्ज होकर यहां आवो फिर वे सब अठारही राजाओं अपने २ स्थान जाकर अलग २ अपने २ तीन २ हजार हाथी तीन २ हजार घोड तीन २ हजार रथ, तीन २ क्रोड पायदल लेकर विशाला नगरी आये, चेडा राजा को जय हो विजय हो यों कर वधाये ॥ ९९ ॥ तब चेडा राजा कौटुम्बिक पुरुषको बोलाया बोलाकर यों कहने लगा—अभिषेक गधहस्ति चतुरंगिनी सेना सजकर लावो कौटुम्बिक पुरुषने सब हाजर किये ॥ १०० ॥ तब चेडा राजा स्नान मंजन कर हाथी पर आरूढ होकर तीन हजार हाथी यावत् कोणिक की तरह विशाला नगरी के मध्य२में से निकलकर नव मल्ली नवलच्छी काशी कोशल देश के अठारह राजाओं थे वहां आया तब चेडा राजा [सब १९ राजाओं के

सत्तावन्नाएदंतिसहस्सेहिं, सत्तावन्नाए आससहस्सेहिं सत्तावन्नाए रहसहस्सेहिं, सत्ताव-न्नाए मणुसकोडीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढिए जाव रवेण, सुभेहिंवसही पातरासेहिंनातिविगिट्ठेहिं अतरेहिं वसमाणे २ विदेहिं जणवय मज्झमज्झेण जेणेव देसपते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता खंधावार निवेस करेति २ त्ता कुणिएराय पडिवालेमाणे जुज्झ सज्झेचिट्ठति ॥१०१॥ तत्तेण से कुणिएराया सव्विड्ढिए जाव रवेण जेणेव देसपते तणेव उवागच्छति २त्ता चेडगस्सरन्ना जोयणतरिय खंधावार निवेसकरेति॥१०२॥ तत्तेणं से दोन्निविरायाणो रणभूमिसज्जावेति २ त्ता रणभूमिं जयंति ॥ १०३ ॥

मिलकर] सत्तावन हजार हाथी, सत्तावन हजार घोडे, सत्तावन हजार रथ, सत्तावन कोटी मनुष्य के परिवार स परिवर हुवे स' ऋद्धि युक्त यावत् वादिंत्र के गर्जारव से सुख २ मे मुकाम करते सिरामनी उपालु भावन करते, दु'ख के वास रहित मन्तर स्थान में रहते विदेह जनपद देश के मध्य २ में होकर जहां देश का अन्त था वहां आये, आकर सना स्थापन की, स्थापन कर कोणिक राजा की राह देखते हुवे रहे ॥ १०१ ॥ तब वे कोणिक राजा सर्व ऋद्धि यावत् वादिंत्र के नाद युक्त जहां देश का अन्त था वहां आये, चेडा राजा के लस्कर से एक योजन के अन्तर से पडाव करके रहे॥१०२॥ तब उन दोनों राजाने रणभूमि की समाइ की तृण कटक कंकरादि दूर करवाये, रणभूमि में सम हो खडे हुवे॥ १०३ ॥ तब को

देवाणुप्पिया ! कुणिएणरन्नासाद्धिं जुज्झइ, त गच्छहणं देवाणुप्पिया ! सएसएसु रज्जेसु ण्हाया जहाकाली जाव जएण विजएण वद्धावेन्ति ॥ ९९ ॥ तत्तेणं से चेडए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—अभिसेक जहा कोणीए जाव दुरूढसमाणे ॥ १०० ॥ तत्तेणं से चेडएराया तिहिं दन्तीसहस्सेहिं जहा कुणिए जाव वेसालिंनगरिं मज्झं मज्झेणं निगच्छति २ त्ता जणेव ते नवमल्लइ नवलच्छई कासीकोसलगा अठारसविगणरायाणो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, तत्तेणं से चेडएराया

गणतंत्र सहित सज्ज होकर यहां आवो फिर वे सब अठारही राजाओं अपने २ स्थान आकर अलग २ अपने २ तीन २ हजार हाथी तीन २ हजार घोडे तीन २ हजार रथ, तीन २ क्रोड पायदल लेकर विशाला नगरी आए, चेडा राजा को जय हो विजय हो यों कर बधाये ॥ ९९ ॥ तब चेडा राजा कौटुम्बिक पुरुषको बोलाया बोलाकर यों कहने लगे—अभिषेक गंधहस्ति चतुरंगिनी सेना सजकर लावो कौटुम्बिक पुरुषने सब हाजर किये ॥ १०० ॥ तब चेडा राजा स्नान मंजन कर हाथी पर आरूढ होकर तीन हजार हाथी यावत् कोणिक की तरह विशाला नगरी के मध्यमें से निकलकर जहां नवमल्ली नवलच्छी काशी कोशल देश के अठारह राजाओं थे वहां आया तब चेडा राजा [सब १० राजाओं क

आव ६ रवेणं हयगयाहयगएहिं गयगयागयगएहिं रहगयारहगएहिं पायतीया पाएतीएहिं अममत्तहिं सार्द्धं सपलग्गयाविहोत्था ॥ १०६ ॥ तत्तेण होत्ताविराइण अणियाणीगा सामी सामी सासणाणुरत्ता महया अणखय जणवह जणसवह जणवहकण्णं नव्रतक भयकारभीम रुहिरकद्दमकरमाणा अभमसेण सद्दिंजुज्झाति ॥ १०७ ॥ तत्तेण सेकालेकुमारे तिहिंरति सहस्सेहिं जाव मणुसकोडिहिं गरूलवूह एकारसमेण सधेण कुणिएसद्धिं रहमुसलसगामेमाणे हयमहिय जहा भगवया कालीए-

बोल कलकलाट होता हुवा समुद्र के समान शब्द मसार करते हुवे सर्वऋद्धियुक्त सर्वाादिम पुक्त पोरकेसायघोव हाथीकेसाथहाथी रथकेसाथरथ पायदलों के साथ पायदलों, परस्पर युद्ध मचाने लगे ॥ १०६ ॥ तब वे दोनों तरफ के वीरों अपने २ स्वामी की शिक्षाये—जय में रक्त बने महा मरबर मनुष्यों का क्षय करते हुवे लोगों का मर्दन करते हुवे, लोगों कोलाहल करते हुवे, वायु से पत्र की तरह एकत्र हो गिरते हुवे, मस्तक विना धडादि कलकलेयुप, रुधिर मांस का कर्दम करते हुवे खूंदते हुवे, परस्पर युद्ध करने लग ॥ १०७ ॥ तब पर कालकुमार तीनहजारहाथी यावत् तीन कोटी मनुष्य के साथ गरूड व्यूह युक्त सेना का इग्यारवा हिस्सा युक्त रथमूसल संग्राम में घात को प्राप्त हुवा, मानकामर्दन

तत्तेण से कुणिए तेत्तीसए दन्ति सहस्सेहिं जाव मणुसकोडिहिं गुरुलवूहरयति २ त्ता गुरुलवुहेण रहमूसलण संगाम उवया ॥ १०४ ॥ तत्तेण से चेडएराया सत्तावन्नाए दंतीसहस्सहिं जाव सत्तावण्णाए मणुसकोडिहिं सगडवूहए रहमुसलसंगाम उवया ॥ १०५ ॥ तत्तेण ते दोणविराइण अणीया सन्नद्धबद्धा जाव गहिया उहय पहरणा मगहिंतहिं फलाएनिकिछाहिं असीहिं सागएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खत्तसरहिं समुल्लीलिताहिं डावाहिं जावाहिं उसरीयाहिं उरुघटाहिं छिप्पतरिण वज्जमाणेण महया उक्किट्ठ सीहनाय बोलकलकलारावेण समुद्दारवभूएथ करेमाण सव्विड्ढीए

णिक राजा तेतीस हजार हाथी यावत् तेतीस क्रोड मनुष्यों की गरुडाकार रचना रची [पीछी सकडी आगे चौडी] कोणिक राजा की तरफ से रथ मूसल संग्राम भी हुवा (इस का वर्णन भगवतीमें है) ॥१०४॥ तब चेडाराजा सत्तावन हजार हाथी यावत् सत्तावन कोडी मनुष्य की सगडव्यूह रचना रची (आगे सकडी, पीछे चौडी) रथ मूसल संग्राम हुवा ॥ १०५ ॥ तब वे दोनों वीर अनेक वस्त्र पक्षरादि कर सनद्धबद्ध हुए, हाथ में विद्युत समान चलचलाट करते खड्ग धनुष्य बाणादि शस्त्र धारन किये, म्यान में से निकाल खुल्ले किये खड्ग (दो धारा) तरवार (एक धारी) तीरों विविध प्रकार के धनुष्य भाले भुसंडी बरछी उछालते हुवे जंघाओं पर बनी २ घुघरीयों घमकाते हुवे सिंहनादे से शीघ्र वादिंत्र बजाते हुवे महा उत्कृष्ट सिंहनाद

जांव ६. रवेणं हयगयाहयगएहिं गयगयागयगएहिं रहगयारहगएहिं पायतीया पाएतीएहिं अप्पमत्ताहिं सार्द्धं सपलग्गयाविहोत्था ॥ १०६ ॥ तत्तेणं दोन्नाविराइण अणियाणीवग सामी सामी सासणाणुरत्ता महया जणक्खय जणवहं जणसवहं जणवहकप्पे नत्तक पवकारभीम रुहिरकद्दमकरमाणा अन्नमन्नेण सद्धिंजुज्झति ॥ १०७ ॥ तत्तेण सेकालेकुमारे तिहिंदंति सहस्सेहिं जाव मणुसकोडिहिं गरूलवूह एक्कारसमेण खंधेण कुणिएसर्द्धिं रहमुसलसंगामेमाणे हयमहिय जहा भगवया कालीए-

बोल कलकलाट होता हुवा समुद्र के समान शब्द प्रसार करते हुवे सर्वऋद्धियुक्त सर्वशोदिव युक्त घोड़ेकेसाथघोड़ हाथीकेसाथहाथी रथकेसाथरथ पायदलों के साथ पायदलों, परस्पर युद्ध मचाने लगे ॥ १०६ ॥ तब वे दोनों तरफ के वीरों अपने २ स्वामी की विज्ञापे—भय में रक्त बने महा जबर मनुष्यों का क्षय करते हुवे लागों का मर्दन करते हुवे, लोगों कोलाहल करते हुवे, वायु से पत्र की तरह एकत्र हो गिरते हुवे, मस्तक बिना धाड़ें मारतेहुवे, रुधिर मांस का कर्दम करते हुवे खूंदते हुवे, परस्पर युद्ध करने लग ॥ १०७ ॥ तब यह कालकुमार तीनहजारहाथी यावत् तीन कोटी मनुष्य के साथ गरूल व्यूह युक्त सेना का इग्यारहवा हिस्सा पक्ष रथमूसल संग्राम में घात को प्राप्त हुवा, मानकामर्दन

रेशीए परिक्कमहिय जाव जंभीगाओ उववज्जेति ॥ १०८ ॥ स एयं खलु गोयमा ! कालकुमार एारभएहिं आरंभाईं जाव एारिसएणं असुभकडकम्मपब्भारेण कालमासेकालंकिच्चा चउत्थाए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभनरए जाव नेरइयत्ताए उववन्नो ॥ १०९ ॥ कालेणं भंते ! कुमारे चउत्थीओ पुढवीओ अणंतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिंति कहिंउववज्जिहिंति ? गोयमा ! महाविदेहेवासे जाइं कुलाइं भवंति, अड्ढाइं जहा दढपइण्णो जाव सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति जाव अंत काहिंति ॥ ११० ॥ तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ पढम अज्झयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥

इस तरह श्रमण भगवंतने कालीदेवी का कहा यावत् जीवित रहित हुवा ॥ १०८ ॥ इस प्रकार निश्चय अहो गौतम ! काली कुमार एवं आरंभकर यावत् एवं अशुभ दुष्कृत कर्म के भारसे भारी हुवा काल के अवसर काल कर चौथी पंकप्रभा पृथिवी श्याम नरकावास में यावत् नेरियपने उत्पन्न हुवा ॥ १०९ ॥ अहो भगवन् ! कालकुमार चौथी नरक से अन्तर निकलकर कहां जायगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! यहां विदेहक्षेत्र उत्तम ग्राम कुल में जन्म धारन करके दृढप्रतिज्ञ कुमार की तरह यावत् सिद्ध बुद्ध होकर सब दुःख का अन्त करेगा ॥ ११० ॥ यों निश्चय अहो जम्बू ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने निरियावलिका का प्रथम अध्ययन का यह अर्थ कहा ॥ यह पहिला अध्ययन संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥

जइण्णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं निरायावलियाणं पढमसअज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपाणामणयरीहोत्था, पुण्णभद्देचेइए कोणिएराया पउमावई देवी ॥ १ ॥ तत्थणं चंपाएनयरीए सेणियस्सरण्णोभज्जा कोणियस्सरण्णो चुल्लमाउया सुकालीनामदेवी होत्था सुकुमाला ॥ तीसेणं सुकालीएदेवीएपुत्ते सुकाले नामे कुमारे होत्था सुकुमाले ॥ तत्तेणं से सुकालेकुमारे अन्नयाकयाइ तिहिंदंति

यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने निरियावलीका का पहिला अध्ययनका यह अर्थ कहा है तो श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने दूसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में चंपानगरी थी, पूर्णभद्र चैत्य था, कोणिकराजा राज करता था पद्मावती देवी थी ॥ १ ॥ तहां चंपानगरी में श्रेणिक राजा की भार्या कोणिकराजा की छोटी माता सुकाली नामक रानी थी उस सुकाली देवी का पुत्र सुकाला नामक कुमार था और सब कथन उक्त प्रकार निर्विघ्न करना यावत् महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होंगे ॥ ॥ इस प्रकार ही शेष रहे आठों अध्ययन

सहस्सेहिं जहा कालाकुमारा निरयिनेस तचेव महाविदेहवासे अंतकरेहिंति ॥१॥
एवं सेसावि अट्ठ अज्झयणा नायव्वा पढमं सरिसा, णवर माताओ सरिसा णामा ॥
णिरययावलीयाओ सम्मत्ताओ ॥ निक्खेवो सव्वेसिं भाणियव्वो तहा ॥ पढमोवग्गो

जिस प्रकार पहिला अध्ययन कहा उस प्रकार सब ही १० ही माता के जैसे पुत्र के नाम जानना, सब निक्षेप पक्ष प्रमाण करना [यों अनुक्रम चेडा राजाने कालादि दशों ही भाइयों को एकेक बाण में मार डाले, तब इस कोणिक राजा को भय प्राप्त हुवा कि मैं भी एक ही बाण का हूं अब मुझ क्या करना ? इस महा युद्ध का देवता की सहायता बिना मेरा जय हो सके नहीं इसलिये मेरे पूर्व जन्म के मित्र शक्रेंद्र और चमरेंद्र का आराधन करूं. यों विचार दोनों इंद्रों का आराधन करने से दोनों इंद्र आये रथमूसल तथा महाशिलाकंटक संग्राम किया जिस का भगवती सूत्र के सातवे शतक के नववे उद्देशे में इस प्रकार कथन किया है—जब शक्रेंद्रने महाशिलाकंटक संग्राम वैक्रय किया तब कोणिक राजा बक्तर शस्त्रादि से सज होकर उदाइ नामक हस्ति रत्नारूढ होकर चतुरंगणी सेना परिवार करे उस संग्राम में आया तब शक्रेन्द्र अभेद्यवज्रमय कवच वैक्रेय कर कोणिक राजा के आगे खडे रहे एक हस्ति पर सुरेन्द्र और नरेन्द्र यों दो इन्द्र आरूढ हो संग्राम किया उस संग्राम में शक्रेन्द्रने तृणकाष्ठ पत्र कंकर वैगैरा उस के सब महाशिलाकंटक हो परिणमें जिस में चौरासी लक्ष मनुष्यों का घमसान हुवा सब मारामारी सिर्फ

गति में गये दूसरे रथमूसल संग्राम का मत इन्द्रने वैक्रय किया तब कोणिकराजा वक्कर असोादि से सजहो भूतानेन्द्र हस्तिपर आरुढहुवा तब शक्रन्द्र तो पूर्वोक्त मकार रहे और चमरेन्द्रने तापसके भाजन जैसा लोहका भाजन वैक्रयकर कोणिकराजा रहे, यों शक्रन्द्र असुरेन्द्र और नरेन्द्र एक हस्तिपर तीनों इन्द्र रह बिना सारथी चाला खाली रथ चारों तरफ मूशलों लगाया हुवा छोडा, इस से छिन्नू लाख मनुष्यों का घमशान हुवा उस में स दश हजार तो एक मच्छी की कूखी में गये एक देवगति में एक मनुष्यगति गया, में अपर शेष नर्क तिर्यंचगति में उत्पन्न हुए अब देवगति व मनुष्यगति में गये उनका वृतान्त-विशाला नगरी में वरुण नामक नागका पौत्रा बहुत ऋद्धिवंत नवतत्वादिका जान श्रमणोपासक श्रावक निरंन्तर छठ२के पारने करता आत्मा को भावता रहता था वो राजा की आज्ञा से छठ तप का अष्टम तप धारन कर रथमूशल संग्राम में उपस्थित हुवा, निरपराधी को प्रहार करन का नियम किया,जब प्रतिशत्रुने इस को बान मारा तब आप भी उस को बान से मारकर सग्राम स्थान स बाहिर निकल एकांत में दर्भासनस्थ हो अरिहंत सिद्ध धर्माचार्य को नमस्कार कर मनशन [संथारा] कर आलोचना कर समाधी स आयुष्य पूर्ण कर सौधर्म स्वर्ग म गया उन का देवताने उत्सव किया जिस से लोगों कहने लगे की जो संग्राममें मरता है वह स्वर्ग में जाता है उस वक्त उस वरुण नाम के पौत्रे का बालमित्र भी सग्राम में आया था उस को भी बान लगा वह भी अपने मित्र पास आकर वैस ही दर्भासनस्थ हो हाथ जोड बोला जो मरे मित्रने किया वह मरे भी होवे, यों कह आलोचना कर आयुष्य पूर्ण कर मनुष्य के उत्तम कुल में उत्पन्न हुवा वहां से धर्मी

सहस्सेहिं जक्खा कलाकुमारा निरविसेस तचेव महाविदेहवासे अंतकरेहिंति ॥१॥

एवं सेसावि अट्ठ अज्झयणा नायव्वा पढम सरिसा, णवर माताओ सरिसा णामा ॥

णिरयायलीयाओ सम्मत्ताओ ॥ निक्खेवो सव्वोसिं भाणियव्वो तहा ॥ पढमोवग्गो

जिस प्रकार पहिला अध्ययन कहा उस प्रकार सब ही दश राणी के बेटे पुत्र के नाम जानना, सब निक्षेप चक्र प्रमाण कहना [यों अनुक्रम से चेडा राजाने कालादि दशों ही भाइयों को एकेक बाण में मार डाले, तब उस कोणिक राजा का भय प्राप्त हुवा कि मैं भी एक ही बाण का हूं अब मुझ क्या करना ! इस महा युद्ध का देवता की सहायता विना मेरा जय हो सके नहीं इसलिये मेरे पूर्व जन्म के मित्र शक्रेन्द्र और चमरेन्द्र का आराधन करूं. यों विचार दोनों इंद्रों का आराधन करने से दोनों इंद्र आये रथमूसल तथा महाशिलाकंटक संग्राम किया जिस का भगवती सूत्र के सातवे शतक के नववे उद्देशे में इस प्रकार कथन किया है—जब शक्रेन्द्र महाशिलाकंटक संग्राम वैक्रेय किया तब कोणिक राजा चक्कर कहावे से सज होकर उदाइ नामक हस्ति रत्नारूढ होकर चतुरंगणी सेना परिवर से संग्राम में आया तब शक्रेन्द्र अभेद्यवज्रमय कवच वैक्रेय कर कोणिक राजा के आगे खड़े रहे एक हस्ति पर सुरेन्द्र और नरेन्द्र यों दो इन्द्र आरूढ हो संग्राम किया उस संग्राम में शक्रेन्द्रने तृणकाष्ठ पत्र कंकर वैक्रयकर डाले वे सब महाशिलाएं हो पडे, जिस में चौरासी लक्ष मनुष्यों का घमसान हुवा सब मरणान्त निर्वेद

॥ नवमउपाङ्ग–कप्पवडिंसिया सूत्र. ॥

अइणं भंते! समेणण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेस उवंगाण पढमस्स वग्गस्स निरयावलीयाण अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस णं भंते! वग्गस्स कप्पवडिंसियाण समणेण जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता? एव खलु जंबू! समणेण जाव सपत्तेण कप्पवडिंसियाण दस अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा-पउमे, महापउम भद्दे, सुभद्दे पउमभद्द, पउमसणे, पउमगुम्म नलिणिगुम्म, आणंद, नंदणे ॥ १ ॥ जइण भंते! समणेण जाव सपत्तेण कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सण भंते! अज्झयणस्स

यदि अहो भगवन्! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने उपांग का प्रथम वर्ग निरियावलिका का यह अर्थ कहा तो अहो भगवन्! दूसरा वर्ग कप्पवडिंसिका का क्या अर्थ कहा है? यों निश्चय अहो जम्बू! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने कप्पवडिंसिका के दस अध्ययन कहे हैं उन के नाम— १ पद्म कुमार का, २ महा पद्म कुमार का, ३ भद्र कुमार का, ४ सुभद्र कुमार का, ५ पद्मभद्र कुमार का, ६ पद्मसेन कुमार का, ७ पद्मगुल्म कुमार का, ८ नलिनी गुल्म कुमार का, ९ आनंद कुमार का, और १० नन्द कुमार का ॥ १ ॥ यदि अहो भगवन्! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने कप्पवडिं-

सम्मत्ता ॥ ॥ इति निरियावलीय सूत्र सम्मत्त ॥ १९ ॥

रावनकर मरकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म ले सिद्ध बुद्ध मुक्त होवेगा यों दोनो संग्राम में १८०००००० मनुष्यों का घमसान हुवा जिसमें चेडारामादि अठारा राजाओं की हार हुई और कोणिक राजा की जीत हुई यावत् दश बीरों (कालादि दशों भाइयों) महाविदेह क्षेत्र में जन्मकर संयमलेकर मोक्ष प्राप्त करेंगा यह दशों अध्ययन संपूर्ण हुवे ॥ यह निरयावलिका सूत्र अष्टम उपांग पूर्ण हुवा ॥ १९ ॥

इति अष्टम उपांग-निरयावलि का सूत्र समाप्तम्.

॥ नवमउपाङ्ग—कप्पवडिंसिया सूत्र. ॥

जइणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलीयाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते! वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा-पउमे, महापउमे भद्दे, सुभद्दे पउमभद्दे, पउमसेणे, पउमगुम्मे, नलिणिगुम्मे, आणंदे, नंदणे ॥ १ ॥ जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सणं भंते! अज्झयणस्स

यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उनोंने उपांग का प्रथम वर्ग निरियावलिका का यह अर्थ कहा तो अहो भगवन् ! दूसरा वर्ग कप्पवडिंसिका का क्या अर्थ कहा है ? यों निश्चय अहो जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोंने कप्पवडिंसिका के दश अध्ययन कहे हैं उन के नाम—१ पद्म कुमार का, २ महा पद्म कुमार का, ३ भद्र कुमार का, ४ सुभद्र कुमार का, ५ पद्मभद्र कुमार का, ६ पद्मसेन कुमार का, ७ पद्मगुल्म कुमार का, ८ नलनी गुल्म कुमार का, ९ आनंद कुमार का, और १० नन्द कुमार का ॥ १ ॥ यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उनोंने कप्पवडिं-

कप्पवडिंसियाण समणण भगवया जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ २ ॥ एवं खलु जम्बु ! तेण कालेण तेण समएण चंपानामनयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, कुणिएराया, पउमावईदेवी ॥ २ ॥ तत्थण चंपाएनयरीए सेणियस्सरण्णोभज्जा कुणियस्सरण्णो चुल्लमाउया कालीनामदेवी होत्था ॥ ३ ॥ तीसेण कालीएदेवीएपुत्त कालेणामकुमार होत्था सुकुमाल ॥ तस्सण कालकुमारस्स पउमावईणाम देवी होत्था सुकुमाल जाव विहरति ॥ ४ ॥ तत्तण सा पउमावईदेवी अण्णयाकयाइ तंसितारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्म जाव सिंहसुमिणे पासित्ताणं

सिका के दस अध्ययन कहे, तो अहो भगवन् ! प्रथम अध्ययन का कल्पवतंसिका का श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने क्या अर्थ कहा है ! ॥ २ ॥ यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में चम्पा नाम की नगरी थी वहां पूर्णभद्र यक्ष का चैत्य था, कूणिक राजा राज्य करता था, उस को पद्मा वती नामे देवी थी ॥ ३ ॥ वहां चम्पा नगरी में श्रेणिकराजा की भार्या कोणिकराजा की छोटीमाता काली नाम की देवी थी उस काली देवी का पुत्र काल नामक कुमार था वह सुकुमाल था उस काल कुमार की पद्मावती नाम की देवी थी वह सुकुमाल थी यावत् सुख भोगवती विचरती थी ॥ ४ ॥ वह पद्मावती देवी अन्यदा किसी वक्त पुण्यवन्त प्राणी के रहने योग्य निवासगृह आभ्यन्तर चित्रविचित्र

पडिमुद्दा। एवं जम्मण जहा बलस्स जाव णामधिज्ज,जम्हाण अम्हे इमे दारए काल कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए त होऊण अम्ह इमस्सदारयस्स नामधेयं 'पउमे' सेस जहा महाबलस्स, अट्ठउदाओ जाव उप्पिंपासायवरगते विहरति ॥ ५ ॥ सामी समोसरिए,परिसा निग्गया, कुणिएनिग्गए, पउमेवि जहा महब्बले निग्गए, तहेव अमापिच्चाआपुच्छणा जाव पव्वइए अणगारजाति जाव गुत्तबंभयारि ॥६॥ तत्तेण पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहा रूवाणं थेराण अतिए सामाइय मादियाइं एक्कारस्स अगाइं अहिज्जइ २ त्ता बहुहिं चउत्थ छट्ठ अट्ठम जाव विहराति तत्तेण ॥ से पउमे अणगारे तेणंउरालेण जहा मेहे,

चित्रों से चित्रित आवास था उसमें सुकुमाल शैय्या में सूती हुई यावत् सिंह स्वप्न देखकर जागी, जन्मोत्सव महाबल कुमार के जैसा करना यावत् हमारा यह बालक कालकुमार का पुत्र पद्मावतीदेवी का आत्मज इसलिये इस बालक का नाम पद्मकुमार होवे, ऐसा नाम स्थापन किया शेष सब अधिकार महाबलकुमार जैसे करना, यावत् आठ रानीयों परना, परसादों के ऊपर पांच इन्द्रिय के सुख भोगवता सुख से विचर रहा है ॥ ५ ॥ श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषद वंदनगइ कोणिकराजा भी वंदनेगया पद्म कुमार भी महाबल कुमार की तरह गया तैसे ही माता पिता को पूछकर यावत् दीक्षा धारण की साधु हुवे यावत गुप्त ब्रह्मचारीबन॥ ६ ॥ तब पद्म अनगार श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पासके तथारूप स्थविरके पास आचारंगादि इग्यारा अंग कंठाग्र किये फिर उपवास बेला तेला आदि तप करते विचरने लगे तब पद्म अनगार उस उदार प्रधान तप करके जिस प्रकार मेघकुमार सूक गये थे उस प्रकार हुवे

तहेव धम्म जागरियाचिंता एव जहेव मेहो तहेव समणं भगवं महावीरेण आपुच्छित्ता विउले जाव पाउवगाति॥७॥समण तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइए एक्कारसअंगाइं अहिज्जिता बहुपडिपुन्नाण पचवासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठिभत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय उड्ढ चादम साहम्मकप्पे देवत्ता उववन्नो,दो सागरोवमाई ठिई॥८॥ सेणं भंते! पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं पुच्छा?गोयमा! महाविदेहवासे जाव दढपइन्ना जाव अन्तकाहिति॥९॥एवं खलु जंबू!समणेण जाव सपत्तेणं कप्पवडिंसियाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्त॥पढम अज्झयण सम्मत्त ॥ १ ॥

वैसे ही धर्म जागरणा जागते विचार हुवा मेघकुमारी की तरह श्रमण भगवंत को पूछकर विपुलगिरीपर स्थना[संथारा] की॥७॥ श्रमण साधुओं के पास इग्यारा अंग आदि अध्ययन करते बहुत प्रतिपूर्ण पांचवर्ष साधुता पालकर एक महिने की झूपनाकर साठभक्त अनसन का छेदकर आलोचना निंदनाकर समाधी से आयुष्य पूर्णकर ऊपर चन्द्रमा सूर्य के भी ऊपर सौधर्म देवलोक में देवतापन उत्पन्न हुए, उनकी दो सागरोपम की स्थिति थी॥८॥ अहो भगवन्! वह पद्मदेव वहां देवलोक से आयुष्य क्षयकर कहां जावेगा? अहो गौतम! महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर यावत् दृढप्रतिज्ञ कुमार की तरह सर्व दुःख का अंत करेगा ॥ ९ ॥ यों निश्चय अहो जम्बू! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उनोंने कल्पावतंसिका का प्रथम अध्ययनका यह अर्थ कहा ॥ इति प्रथमाध्याय सपूर्ण ॥ १ ॥

जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते दोच्चस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानाम नगरी, पुण्णभद्दे चेइए, कूणिए राया, पउमावई देवी ॥ १ ॥ तत्थणं चंपाएणयरीए सेणियस्सरण्णोभज्जा, कूणिय-रण्णो चुल्लमाउया सुकालीणाम देवी होत्था सुकुमाला ॥ तीसेणं सुकालीए पुत्ते सुकाले नाम कुमारे होत्था ॥ तस्सणं सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नाम देवी होत्था सुकुमाला ॥ तएणं सा महापउमा देवी अन्नयाकयाइं तंसी तारिसगंसी एवं तहेव महापउमेनाम दारओ

यदि अहो भगवान ! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने कल्पावतंसिका के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ कहा अहो भगवन् ! दूसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? अहो जम्बू ! उस काल उस समय में चम्पा नाम की नगरी थी पूर्णभद्र नाम का चैत्य था कोणिक राजा राज करता था, उसकी पद्मावती नामे देवी थी. उन चम्पा नगरी में श्रेणिक राजा की भार्या कोणिक राजा की छोटीमाता सुकाली नामरानी थी उस सुकाली रानी का पुत्र सुकाल नाम कुमार था उस सुकाल कुमार के महापद्मा नामा देवी सुकुमाल थी वह महापद्मा देवी अन्यदा किसी वक्त पुण्यवंत के शयन करने योग्य शैय्या में सूतीहुइ 'सिंह स्वप्न देखा, इत्यादि-सब कथन पूर्वोक्त प्रकार करना यावत् महापद्म कुमार नामदिया यावत् सिद्ध होवेगा इतना

जाव सिज्झहिति णवर ईसाणे कप्पे उववाओ उक्कोसठिइओ॥एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं॥एवं सेसावि अट्ठअज्झयणा, मायाओ सरिसनामाओ ॥ कालादीण दसण्ह पुत्ता, आणुपुव्वीए, दोण्हं पंच चत्तारि तिण्हं, तिण्हं होंति तिन्नेव, दोन्नंच दोन्निवासा सणियनत्तूण परियाओ॥उववाओ अणुपुव्वीए पढमा सोहम्मे बित्तिओइसाणे, तत्तिओ सणकुमारे, चउत्थो माहिंदे पंचमओ बंभलोए, छट्ठओलंतए सत्तमओ महासुक्के, अट्ठमओ सहस्सारे, नवमओ पाणए, दसमओ अच्चूए ॥ सव्वत्थ

विशेष था दूसरे ईशान देवलोक में उत्कृष्ट दो सागर की स्थितिमें देव हुवे॥इति दूसरा अध्ययन ॥ २ ॥ इस प्रकार ही शेष आठ अध्ययन् कहना, सब के माता जैसे नाम जानना कालादि दशो कुमार(निरयावलि का में कहे उन के पुत्र दशो)पुत्र जानना इतना विशेष पद्मकुमार महापद्म कुमार पांच २ वर्ष दीक्षा पाली भद्रकुमार सुभद्रकुमार और पद्मभद्रकुमार इन तीनोंने चार २ वर्ष दीक्षापाली, पद्मसेन, पद्मगुल्म, नलिनगुल्म इन तीनोंने तीन२वर्ष दीक्षापाली, आनंद कुमार और नन्दकुमार इनोंने २ वर्षदीक्षापाली पद्मकुमार सौधर्म देवलोक, महापद्म कुमार, ईशान देवलोक,भद्रकुमार सनत्कुमार देवलोक,सुभद्र कुमार महेन्द्र देवलोक,पद्मभद्र कुमार ब्रह्मदेवलोक, पद्मसेन कुमार लंतक देवलोक, पद्मगुल्म कुमार महाशुक्र देवलोक, नलिनगुल्म कुमार सहस्रार देवलोक,

उक्कोसठिई आणियव्वा, महाविदेहे सिज्झिहिति ॥ इति कप्पवडिंसियाओ समत्ताओ

बिइया वग्गा सम्मत्त ॥ २ ॥ २० ॥ * * * * *

भाषेद कुमार प्राणत देवलोक में और नन्दकुमार अच्युत देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुए सर्व स्थानकी उत्कृष्ट स्थितिपाये और सब महाविदेह क्षेत्रमें अवतारलेदृढप्रतिज्ञ कुमार की तरह धर्माराधन कर सिद्ध बुद्ध मुक्त होंगे यावत् सर्व दुःख का अंत करेंगे यह दशों अध्ययन समाप्त हुवे और कल्पावतंसिका नामक नववा उपांग भी समाप्त हुवा ॥ १० ॥

+

इति नवम उपाङ्ग कप्पवडिंसिया सूत्र समाप्तम्.

॥ दशमउपाङ्ग-पुष्फीया सूत्र ॥

॥ प्रथम अध्ययन—चन्द्रमा देवका ॥

जतिणं भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं उवंगाणं दोच्चस्सवग्गास्स कप्पवडिंसियाण अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्सणं भते ! वग्गास्स उवंगाण पुप्फियाण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जंबू ! समणेण जाव सपत्तेण उवंगाण तच्चस्स वग्गास्स पुप्फियाणं दसअज्झयणा पण्णत्ता तंजहा (गाहा) चंद, सूरे, सुक्के, बहुपुत्तिय पुण्णभद्दे, माणिभद्दे, दत्ते, सिव, बलेया अणिढिय य बोधव्व॥ १ ॥ १ ॥जइणं भते!

यदि अहो भगवन्! श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत मुक्ति पधारे उनोंने उपांगका दूसरा वर्ग कल्प वडिंसिका जिस का यह अर्थ कहा अब अहो भगवन् ! तीसरा वर्ग उपांग पुप्फिया का क्या अर्थ कहा है ? यों निश्चय अहो जम्बू ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामी मुक्ति पधार उनोंने उपांग के तीसरा वर्ग पुप्फिया के दस अध्ययन कहे हैं, उन के नाम—१ चन्द्रमादेवका, २सूर्यदेव का, ३ शुक्रदेवका, ४ बहुपुत्तीया देवी का, ५ पूर्ण भद्रदेव का, ६ माणिभद्रदेव का, ७ दत्त का, ८ शिव का, ९ बल का, और १० अना ढी का जानना ॥ २ ॥ यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामी मुक्ति पधारे उनोंने पुप्फिया

समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाण दस अज्झयणा पण्णत्ता ॥ पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाण समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहेनाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेईए, सेणिएराया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामीसमोसढे परिसानिग्गया ॥३॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसएविमाणे सभाए सुहमाए चंद सिंहासणंसी, चउहिंसामाणीय साहस्सीहिं जाव विहरति ॥ इमंचणं केवल कप्प

के दश अध्ययन कहे तो अहो भगवन् ! प्रथम अध्ययन पुष्पिका का श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने क्या अर्थ कहा ? यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी थी, गुणसिला नामक बाग था, श्रेणिक नामे राजा राज्य करता था ॥ २ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे गुणसिला बाग में तप संयम से आत्मा भावते विचरने लगे परिषदा धर्म देशना सुनने आई ॥ ३ ॥ उस काल उस समय में चन्द्रमा देव ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चन्द्र वतंसक विमान की सौधर्मिक सभा में चन्द्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक देव यावत् और सब परिवार से परिवरे हुवे विचरते थे उस वक्त इस संपूर्ण जम्बूद्वीप नामक द्वीप को विस्तीर्ण अवधि ज्ञान कर देखा,

जंबुद्दीवसीव विठलण ओहिणा आभोएमाण२ पासति समण भगव जहा सूरियाभे अभिआगीआय सद्द विच जाव सुरिंदा भिगमणजाग करत्ता समाणमिय पच्चुप्पिणाति, मुसर घटा जाव विउविण्णा नवर जायणसहस्स विछिन्न अद्धतेविट्ठि जोयण समूसीय महिंदज्झओ पणवीसजोयणमूसिए सेसा जहा सूरियभस्स जाव आगमो नट्टविहिं तहेव उवपसी जाव पडिगओ ॥१॥ भतति भगव गोयमे समणं भतं जाव पुच्छा ?

श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को राजगृही नगरी में देख, सूर्याभ देवता की तरह मनी से नामोत्सवन करके अभियोगी देवता को बोलाया, उन्हों के आगे यथ समवसरण की भूमी का करो यह मनी मा हा पीछी मेरे सुपरत करो अभियोगी देवन उस ही प्रकार किया सुस्वर घंटा बजवाकर सब देवता को विदित किये यावत् वैक्रय विमान बनवाया जिस में इतना विशेष सूर्याभ देव के एक लाख योजन का विमान किया था, चन्द्रदेव के एक हजार योजन का चौडा और साडे बासठ योजन का ऊंचा विमान बनाया, उसपर महेन्द्रध्वजा पचीस योजन की ऊंची शेष अधिकार सब सूर्याभवत् जैसा कहना यावत् आकर बत्तीस प्रकार का नाटक देखाकर पीछा गया ॥ १ ॥ अहो भगवंत ! गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को पूछने लगे कि अहो भगवन् ! चन्द्रदेव नाटक करती वक्त इतनी ऋद्धि कहां से प्रगट की और पीछी यह ऋद्धि कहां समाई ? भगवंत ने कुटाकार शाला का दृष्टान्त दिया जैसे बहुत

कुडागार साला सरीर अणुपविट्ठा ॥ ५ ॥ पुव्वभवे पुच्छा? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थिनामनयरीहोत्था कोट्ठए चेइए ॥ तत्थणं सावत्थीए नयरीए अगईनामगाहावई होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए ॥ तत्तेणं अगई गाहावइ सावत्थीएनयरीए बहुणं नगरनिगम जहा आणदो ॥ ६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासअरहा पुरिसादाणीए आदिकरे जहा महावीरो नवुस्सेहे सोलसहिं

मनुष्यों वन में क्रीडा करते होवे व महा वायु चलने से गुफा में भराजाते हैं और वायु बंद होने से पीछे बाहिर आते हैं इस ही प्रकार चन्द्र देव के शरीर से ही सब ऋद्धि प्रगट हुई पीछी शरीर में ही समागइ ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! चन्द्र देव पूर्व भव में कौन था ? क्या करनी करने से ऐसी ऋद्धि प्राप्त हुई ? यों निश्चय अहो गौतम ! उस काल उस समय में श्रावस्ति नाम की नगरी थी वहां कोष्टक नामका चैत्य था वहां श्रावस्ति नगरी में अंगति नामक गाथापति रहता था वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभवित था, वह अंगति गाथापति श्रावस्ति नगरी में बहुत कार्यों में आधारभूत था जैसा आणंद गाथापति का उपासकदशांग सूत्र में कहा वैसा इस का भी कहना ॥ ६ ॥ उस काल उस समय में पार्श्वनाथ स्वामी अरिहंत भगवन्त पुरुषों में आदान नाम के धारक धर्म की आदि करता जिस प्रकार महावीर स्वामी परन्तु इतना विशेष नवहस्तका शरीर ऊंचा था सोलह हजार साधु अडतीस हजार आर्यिका के परिवारसे कोष्टक नामक उद्यान

माणे बहुहिं वासाइं सामन्न परियाग पाउणाति २ त्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसभत्ताइं अणसणाए छेदित्ता विराहिय सामन्नो कालमासे कालकिच्चा चंद वडिंसए विमाणे उववाओ सभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए चंद जोइसिंद इदत्ताए उववन्ना ॥ तत्तण से चंद जोइसराया अहुणो उववन्ने समाणे पंचविहाए पज्जतीए आहारपज्जतिए जाव पज्जत्ता ॥८॥चंदस्सण भंते' जोइसिंदस्स जोइसरण्णो केवइय कालट्ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! पलिओवम वाससयसहस्समब्भहियं ॥ एवं खलु गोयमा ! जोतिसरस्स दिव्वा दिव्वड्डिलद्ध ॥९॥ चंदणं भंते ! जोइसिंद जोइसियराया ताओ देव

महिने की झुपना की तीस भक्त अनशन का छेदन कर चारित्र की विराधना कर (क्यों कि चारित्र क विराधिकरी ज्योतिषी देव म उत्पन्न होते हैं) काल के अवसर में आयुष्य पूर्ण कर चन्द्रावतमक विमान की उपपात सभा में देव शैय्या में देवदुष्य नामक वस्त्र के अन्दर में चन्द्रमा देवता उपजे देवके इन्द्रपन उत्पन्न हुए वह चन्द्रमादेव ज्योतिषी देवोंका राजा तत्काल उत्पन्न हुवा आहार आदि पांच पर्याय कर पर्याप्त हुवा ॥ ८ ॥ अहो भगवन्' चन्द्रमा देव की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम! एक पल्योपम ऊपर एकलाख वर्षाधिक की स्थिति है यों निश्चय अहो गौतम! चन्द्रमादेव ज्योतिषीका इन्द्र ज्योतिषी का राजा दिव्य देव सम्बन्धी ऋद्धि पाया है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चन्द्रमादेव ज्योतिषीका

समण साहस्सीह अट्ठतीसा अज्जा जाव काट्ठए समासद्ध परिसा निग्गया ॥७॥ तएणं स अगति गाहावती इमीसे कहाए लट्ठट्ठमभाणे हट्ठ जहा कत्तीआसेट्ठी तहा निगच्छति, जाव पज्जुवासति धम्मसोच्चा निसम्म जनवर देवाणुप्पिया जट्ठ पुत्त कुडुंब ठावेति तएणं अहं देवाणुप्पियाण अतिए जाव पव्वयामी जहा गगदत्ते तहा पव्वईए जाव गुत्तबंभयारी ॥ ८ ॥ तएणं से अगती अणगारे पासओ अरहओ तहारूवाण थराण अतिए सामाइय मादियाइ एकारस अगाइ अहिज्जाति २ त्ता बहुहिं चउत्थ जाव भावे

में पधारे परिषदा वंदन करने गई॥७॥ तब उस अंगति गाथापति को उक्त कथा प्राप्त होने से हृष्ट तुष्ट हुवा जिसप्रकार भगवती सूत्र में कहा कार्तिक शेठ भगवंत के दर्शन करने आया था तैसे अंगति गाथापति भी आया यावत् पर्युपासना करनेलगा भगवंतने धर्म कथासुनाई सुनकर हृष्टतुष्ट हुवा नमस्कारकर कहने लगा, इतना विलंब में बड़े पुत्रको सुपरत कुटुम्बका भार करके आपके पास दीक्षा धारन करूंगा भगवती सूत्र में कहे गंगदत्त गाथापति के समान यावत् दीक्षा धारन की यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बने ॥ ८ ॥ तब फिर वे अंगति साधु पार्श्वनाथ भगवंत के पास के तथा रूप स्थविर भगवंत के पास सामायिकादि इग्यारह अंगपढे. पढकर बहुत उपवासादि तप करते यावत् अपनी आत्मा को भावते बहुत वर्ष साधुपना पाला पालकर एक

॥ द्वितीय अध्ययन-सूर्यदेवका ॥

जइण भंते समणेण भगवया महावीरेण जाव पुप्फियाणं पढमस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्सणं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेण भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहेनामं नगरे, गुणसिलए चइए, सेणिएराया समोसरणं जहा चंदो तहा सूरोवि आगया जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगते, पुव्वभव पुच्छा ? सावत्थीनयरी सुपतिट्ठे नाम गाहावई होत्था अड्ढे जहेव अंगती जाव विहरति ॥ पासेसमोसढे

यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी यावत् पुष्पिकाका प्रथम अध्ययनका यह अर्थ कहा अहो भगवन् ! दूसरे पुष्पिकाके अध्ययन का क्या अर्थ कहा होगा निश्चय हे जम्बू ! उसकाल उस समय में राजगृहीनगरी गुनशिलबाग श्रेणिकराजा भगवन् श्री महावीरस्वामी पधारे, जिस प्रकार चन्द्रदेवता भगवंत के दर्शन करने आयथा उसीही प्रकार सूर्य देवता भी आया यावत् नाटकविधी बनाकर पीछागया ॥ गौतमस्वामीने पूर्वभवकी पूछा की ? भगवंतने कहा—श्रावस्तिनगरी में

लोगाओ आउक्खएणं चइत्ता कहिंगच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! महाविदेहवासे सिज्झहिंति ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं निक्खेवओ पढमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥ * * *

इन्द्र ज्योतिषी का राजा उस देवलोक से आयुष्य का क्षय कर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होवेगा ? अहो गौतम ! महा विदेह क्षेत्र में जन्मले संयमले कर्म क्षयकर यावत् सिद्ध बुद्ध मुक्त होगा यावत् सब दुःख का अंत करेगा यों निश्चय भगवंतने पुष्पिया सूत्र के प्रथम अध्ययन के भाव कहे यह पहिला चन्द्रदेव का अध्ययन संपूर्ण हुआ ॥ १ ॥

॥ तृतिय अध्ययन–शुक्रदेवका ॥

जइण भंत ! समणेण भगवया महावीरणं जाव सपत्तेण उक्खेवओ से भाणियव्वो-रायगिहेणयरे, सणिएराया गुणसिलए चेइए सामीसमोसढे, परिसानिग्गया ॥१॥ तण कालेण तेण समएण सुक्के महग्गहे सुक्कवडिंसएविमाणे सुक्कसिंहासणसि-सिंहासणसी चउहिंसामाणिय साहस्सीहिं जहेव चंदो तहेव आगओ नट्टविहं उवदं सित्ता, पडिगओ ॥ २ ॥ भंतेति भगव गोयमे पुच्छा,? कुडागसाला पुव्वभव पुच्छा ? एवं खलु गोयमा ! तण कालण तण समएण वाणारसीणामणयरी होत्था ॥

अहो भगवन् ! यदि श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने दूसरा अध्ययन का यह अर्थ कहा, अहो भगवन् ! तीसरा अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ! यों निश्चय अहो जम्बू ! उसकाल उस समय में राजगृही नगरी, गुणसिलाबाग, श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषद आई ॥ १ ॥ उस काल उस समय में शुक्र नायक महाग्रह शुक्रावतंसक विमान में शुक्र सिंहासनपर चारहजार सामानिक देव यावत् जिस प्रकार चन्द्रमा देव आया तैसे ही यह भी आया नाटक बताकर पीछा गया॥२॥भगवंत से गौतम स्वामीने पूछा भगवन कुडागार शाला का दृष्टान्त दिया पूर्वभवकी पृच्छाकी? तब भगवंत कहाकि यों निश्चय अहो गौतम ! उस काल उस समय में वाणारसी नामक नगरी थी वहां वाणारसी नगरी में सोमल

जहा भगति तहेव पव्वईए तहेव विराहिय सामने जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिए जाव अंतकरेति॥ एवं खलु जंबू' समणेणं निक्खेवओ ॥बितिय अज्झयणं सम्मत्तं ॥२॥

सुप्रतिष्ठ नामक गाथापति रहता था वह ऋद्धिवंत यावत् भगति गाथापति समान था, पार्श्वनाथ भगवान पधारे भंगति गाथापति की तरह इसने भी दीक्षा धारण की, तैसेही संयम की विराधना की आधा महिना की संलेखना की, सूर्य देवता हुआ वहां विदेह क्षेत्र में सिद्ध होवेगा यावत् सब दुःख का अंत करेगा॥यह दूसरा अध्ययन सूर्य देव का संपूर्ण हुआ ॥ २ ॥

अवमिजं,पुच्छा सरिसव,मासा, एव कुलत्था एगेभव, जाव पुवेभव सावगधम्म पाठि

यापा है क्या ! उत्तर अहो सोमिल ! हमारे ज्ञान दर्शन चारित्र बारह प्रकारका तप अभिग्रह सतरा प्रकार का संयम स्वध्याय ध्यान आदि शुभयोग की प्रवृत्ति करना यह यात्रा है २ प्रश्न अहो भगवन् ! आपके यपनीय(यात्र) है क्या! उत्तर हां सोमिल हमारे यपनीय दो प्रकारका है श्रोतादि पांचोंइन्द्रिय निग्रह करना साइन्द्रिय यवनीय और क्रोधादि चारों कषाय का निग्रह करना सो नोइन्द्रिय यवनीय ३ प्रश्न—अहो भगवन्! आपके वाधारहित पना है क्या! उत्तर अहा सोमिल! हमारे वायुपित्त श्लेष्म सन्निपातादिक रोगोंका उपशम हुवा है यह निराबाध पना है ४ प्रश्न अहो भगवन् ! आपके फ्रासुक विहार है क्या ! उत्तर अहो सोमिल ! हमारे उद्यान देवकुल सभा पर्व पर्वतादिकीगुफा वृक्षतल इत्यादि स्थान स्त्री पशु नपुसक रहित ऐसा स्थान पाटादि मागकर यह हमारे फ्रासुक विहार है (अब सोमिल द्वी अर्थ प्रश्न पृछता है कि यह करेंगे तोभी पकडूंगा और नाकरेंगे तोभी पकडूंगा] ५ प्रश्न—अहो भगवन् ! आपक सरिसव खाने योग्य है कि नहीं! अहो सोमिल हमारे सरिसव खाने योग्यभी है और नहीं खान योग्यभी है क्यों कि ब्राह्मणों के मत में दो प्रकार की सरिसव कहि है तद्यथा—१ मित्र सारिसव और २ धान्य सारिसव, इन में मित्र सारिसव के तीन प्रकार कहे हैं,तद्यथा—१ मित्र साथ जन्म हुवा, २ साथ में वृद्धि पाया, और ३ साथ में क्रीडा की यह तीनों साधु के खाने योग्य नहीं है धान्य सारिसव दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ शस्त्र प्रणित और २ शस्त्र नहीं प्रणित इस में शस्त्र नहीं प्रणित साधु के खाने योग्य नहीं है, शस्त्र प्रणित के दो प्रकार १ शुद्ध४२दोष रहित और अशुद्ध४२दोष सहित इसमें दोष सहित साधु के खाने योग्य नहीं है दोष रहित सारिसवके दो प्रकार तद्यथा १ याचना की और याचना नहीं की

तएणं वाणारसीएणयरीए सोमिलनाम माहणे परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूए, रिउव्वेय जाव परिनिट्ठति ॥३॥ पासे अरहा समोसढे परिसा जाव पज्जुवासति ॥ ४ ॥ तत्तणं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठेसमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था एवं जाव पासअरहा पुरिसादाणिए पुव्वाणुपुव्विं जाव अंबसालवणे विहरति. तगच्छामिणं पासस्सअरहओ अंतियपाउब्भवामी, इमाइंचणं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं जहा पण्णत्ति सोमिलो निग्गओ खंडिय विहुणो जाव एवं वयासी-जत्ताभे भंते!

नाम का ब्राह्मण रहता था वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभवित था, ऋग्वेदादि ब्राह्मणों के-शास्त्रों में सुपरिनिष्ठित था ॥ ३ ॥ उस वक्त तेवीसवे तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान पधारे, परिषदा आई यावत् सेवा करने लगी ॥ ४ ॥ उस वक्त उस सोमल ब्राह्मण को पार्श्वनाथ भगवान का आगम मालुम हुवा- तब ऐसा विचार हुवा कि पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पूर्वानुपूर्व विचरते हुवे यावत् यहां पधारे हैं आम्रशाल बाग में विचरते हैं इस लिये मैं वहां जाऊं पार्श्वनाथ अरिहंत के समीप प्रगट होऊं और इस प्रकार के प्रश्नों का अर्थ हेतु पूछूं, जो व मेरे प्रश्नों का बराबर उत्तर देंगे तो मैं उन को वन्दना नमस्कार करूंगा और जो उत्तर बराबर न देंगे तो इन ही प्रश्नों कर उन को निरुत्तर-कायल करूंगा ऐसा विचार कर भगवती सूत्र में कहे अनुसार अपने घर से निकला, यहां इतना विशेष इस सोमल के साथ छात्र-पाठक नहीं थे, यह स्वयं अकेला ही आया यावत् खड़ा रहकर यों कहने लगा अहो भगवन्! आपके

वज्जति २ त्ता पडिगए ॥ ५ ॥ तत्तेण पासेअरहा अन्नयाकयाई वाणारसीओ नयरीओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमई २ त्ता बाहिया जणवय विहरति ॥६॥ तत्तेण से सोमिल माहणे अण्णया कयाइ असाहुदसणेणय असाहुउवासण ताएय मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं, सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं मिच्छत्त पडिवन्ने ॥ ७ ॥ तत्तेण तस्स सोमलस्स माहणस्स अण्णयाकयाइ पुव्वरत्ता वरत्त

अपेक्षा दो भी हूं, अवस्था प्रदेशास्त्र की अपेक्षा असख्य हूं आत्मगुन की अपेक्षा अक्षय हूं अव्यय हूं उपयोग की अपेक्षा अनेक भव भावि भाव स्वभाववाला हूं—इस प्रकार नित्य अनित्य दोनों पक्ष की सूचना की उक्त प्रभावर श्रवण कर सोमिलब्राह्मण प्रतिबोधपाया पार्श्वनाथ भगवत को वंदना नमस्कार किया, श्रावक का धर्म अंगीकार कर के पीछा गया ॥ ५ ॥ तब श्री पार्श्वनाथअर्हत किसी वक्त बानारसी नगरी के अम्बशाल बाग से निकलकर बाहिर जनपद देशमें विहार करने लगे ॥ ६ ॥ तब फिर सोमिल ब्राह्मण अन्यदा किसी साधु के दर्शन के अभाव से आये साधओं कि सेवा नहीं करने से (तीर्थंकर के व्याख्यान सुने अब सामान्य साधुओं के व्याख्यान में क्या है ') मिथ्यात्वीयों के संस्तव परिचय से मिथ्यात्व के पर्यव की वृद्धि होन लगी और सम्यक्त्व के पर्याय की हानि होने लगी पुनः मिथ्यात्व अंगिकारी हुवा ॥ ७ ॥ तब उन सोमिल ब्राह्मण को अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि पीछे बाद

इस में याचना नहीं की वह साधु को भक्षने योग्य नहीं है याचना की उस के दो प्रकार १ प्राप्त हुई मिले, और प्राप्त नहीं हुए इस में प्राप्त नहुई व साधु को अभक्ष है और प्राप्त हुए उन के दो प्रकार दातारनेदी और दातारने नहीं दी इस में भी दातारने नहीं दी वह साधु को अभक्ष है और जो दातारने दी है वह साधु को भक्ष है खाने योग्य है (उक्त प्रकार हा दूसरा प्रश्न)६ प्रश्न अहो भगवन्! आप के मांस भक्ष है कि अभक्ष है? उत्तर अहो सोमिल! हमारे मांस भक्ष भी है और अभक्ष भी है क्यों कि ब्राह्मण के मत में मांस तीन प्रकार के कहे हैं यथा—१ काल मास, २ अर्थ मास, और ३ धान्य मांस इस में काल मासके बारह प्रकार तथा श्रावण भाद्रव यावत् आषाढ, यह साधुके अभक्ष हैं दूसरा अर्थ मांस वह सोने का मासा रूपे का मासा, यह भी साधु के अभक्ष है, और तीसरा धान्य मांस उड़द कहलाते हैं इस का विस्तार धान्य सरिसव का कहा वैसा कहना (एसा ही तीसरा प्रश्न)७ प्रश्न—अहो भगवन्! आपके कुलत्थी भक्ष है कि अभक्ष है? उत्तर अहो सोमिल! हमारे कुलत्थी भक्ष भी है और अभक्ष भी है क्यों कि ब्राह्मण के मत में कुलत्थी दो प्रकार की कही है, यथा—१ कुलवंती स्त्री और २ धान्य इस में कुलवती स्त्री के तीन भेद, यथा—१ कुल की पुत्री, २ कुल की माता और ३ कुल की वधु, यह तीनों साधु को अभक्ष हैं, और धान्य कुलत्थ का सरिसव जैसा कहना ८ प्रश्न—अहो भगवन्! आप एक हो, दो हो, अक्षय हो, अव्यय हो, अवस्थित हो कि अनेक भूतभावि भाव रूपवाले हो? उत्तर अहो सोमिल! मैं द्रव्यात्मा की अपेक्षा एक द्रव्य हूं ज्ञान दर्शन आत्मगुन की

एव संपेहइ २ त्ता कल्लं जाव जलंत वाणारसी बहिया अंबारामे जाव पुप्फारामे रोवावेति ॥ तत्तेणं बहवे अंबारामा जाव पुप्फारामा या अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा सगोविज्जमणा संवड्ढिज्जमाणा आरामाजाया किन्हा किन्होभासा जाव रम्मा, महामेह निकरंबभूया पत्तिया पुप्फीया फलिया हरियपरिगिज्झमाणे सिरिया अतिव २ उवसोभेमाणे २ चिठंति ॥ ८ ॥ तत्तेणं तस्स माहणस्स अन्नयाकयाइ पुव्वरत्ता वरत्तकाल समयंसी कुडंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसी णयरीए सोमिलणामेमाहणे अच्चंत माहणकु

एसा विचार कर प्रातः काल होते यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय होते बानारसी के बाहिर आम्र के बगीचे यावत् फूलों के बगीचे लगाये तब वे बहुत आम्र के बगीचे यावत् फूलोंकी बाडीयों का अनुक्रम से बाडादिक संरक्षण करते हुए पानी आदि कर पालन करते हुवे मस्त २ से वृद्धि करते हुए अच्छा बगीचा तैयार हुवा वह कृष्ण वर्ण कृष्ण कृष्ण प्रभावाला यावत् रमणिय महा मेघ की तरह सघन घन घना पत्रकर फूलकर फलकर हरितकायकर अतीव ही सुश्रिक बना अत्यन्त शोभता हुवा रहा है ॥ ८ ॥ तब उस सोमिल ब्राह्मण का अन्यदा किसी वक्त आधीरात व्यतीत हुवे बाद कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवा यों निश्चय मैं बानारसी नगरी में सोमिल नामक ब्राह्मण अत्यन्त विशुद्ध ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हुवा, मैंने वेदाभ्यासक्रिया यावत् यज्ञस्तंभारोपण किया

काल समयसि कुडघजागरियजागरमाणस्स अयमेयरूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीएणयरीए सोमिलणामं माहणे अच्चतमहाण कुलंपसूए तत्तेणं मए वयाइंचिण्णाइं वेयाइंअहिया दारियाहुया पुत्ताजणिया इड्ढिओ समाणीताओ पसुवधाकया जणीजिट्ठा दक्खिणादत्ता अतिहिपुजिया अग्गीहुया जुयानिक्खित्ता तसेय खलु ममं इदाणिकल जाव जलते वाणारसीएणयरीए बहिया बहवे अंबाराम रोवावित्तए एवं मातुलिंग बिल कविट्ठ चिंचा, पुप्फारामारोवावित्तए,

कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे इस प्रकार का अध्यवसाय चिन्तवन हुवा यों निश्चय में वाणारसी नगरी में सोमिल ब्राह्मण अत्यन्त शुद्ध पवित्र ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हुवा हूं मैंने वेदाभ्यास सम्यक्प्रकार किया, कुलवंती के साथ पानी ग्रहण भी किया, मेरे पुत्र की भी प्राप्ति हुई, ऋद्धि उपार्जन की अनेक पशुओं का वध कर यज्ञ भी किये, ब्राह्मणों को दक्षिणा भी खूब दी, अतिथियों [सन्यासीयों] की पूजा भी की, अग्निहोत्र भी किये, और यज्ञ स्तंभारोपण भी किया इत्यादि जो करना सो सब किया, अब कल प्रातःकाल होवे यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय होते मुझे श्रेय है कि वानारसी नगरी के बाहिर बहुत से आम्र के आराम (बाग) लगाऊं ऐसे ही बीजोरे के, सेवकी [सांठ] के, कबीठ के, इमली इत्यादि वृक्षों के बाग लगाऊं. अनेक फूलों के बाग

 एवं विचार किया,

एव सपेहइ २ त्ता कल्ल जाव जलत वाणारसी बहिया अंबारामे जाव पुप्फारामे रोवावेति ॥ तत्तण बहवे अंबारामा जाव पुप्फारामा या अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा सगोविज्जमाणा सवड्ढिज्जमाणा आरामाजाया किण्हा किण्होभासा जाव रम्मा, महामेह निकुरंबभूया पत्तिया पुप्फीया फलिया हरियगरिरिज्जमाणे सिरिया अतिव २ उवसोभेमाणे २ चिठति ॥ ८ ॥ तत्तण तस्स माहणस्स अन्नयाकयाइ पुव्वरत्ता वरत्तकाल समयसी कुडुंबजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एव खलु अह वाणारसी णयरीए सोमिलणामेमाहणे अच्चत माहणकु

एसा विचार कर प्रात काल होते यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय होते बानारसी के बाहिर आम्र के बगीचे यावत् फूलों के बगीचे लगाए, तब वे बहुत आम्र के बगीचे यावत् फूलोंकी वाडीयों का अनुक्रम से वायादिस सरक्षण करते हुए पानी आदि कर पालन करते हुए क्रम २ से वृद्धि करते हुए अच्छा बगीचा तैयार हुवा वह कृष्ण वर्ण कृष्ण प्रभावाला यावत् रमणिय महा मेघ की तरह सघन घन पना पत्रकर फूलकर फलकर हरितकायकर अति ही सश्रीक बना अत्यन्त शोभता हुवा रहा है ॥ ८ ॥ तब उस सोमिल ब्राह्मण को अन्यदा किसी वक्त आधीरात व्यतीत हुवे बाद कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवा यों निश्चय में बानारसी नगरी में सोमिल नामक ब्राह्मण अत्यन्त विशुद्ध ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हुवा, मैंने वेदाभ्यासक्रिया यावत् यज्ञस्तंभारोपण किया

कालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए णयरीए सोमिलणामं माहणे अच्चंतमाहण कुलप्पसूए तएणं मए वयाइं चिण्णाइं वेयाइं अहिया दाराआहूया पुत्ताजणिया इड्ढिओ सम्माणीयाओ पसुवहाकया जण्णाजट्ठा दक्खिणादिन्ना अतिहिपुज्जिया अग्गीहूया जुयानिक्खित्ता तंसेयं खलु मम इदाणिंकल्लं जाव जलंते वाणारसीए णयरीए बहिया बहवे अंबाराम रोवावित्तए एवं मातुलिंग बिल्ल कविट्ठ चिंचा पुप्फारामा रोवावित्तए

कुटुम्ब जागरणा जागते हुए इस प्रकार का अध्यवसाय चिन्तवन हुवा यों निश्चय मैं वाणारसी नगरी में सोमिल ब्राह्मण अत्यन्त शुद्ध पवित्र ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हुवा हूं मैंने वेदाभ्यास सम्यक्प्रकार किया, कुलवंती के साथ पानी ग्रहण भी किया मेरे पुत्र की भी प्राप्ति हुई सूत्र ऋद्धि उपार्जन की अनेक पशूओं के वध कर यज्ञ भी किये, ब्राह्मणों को दक्षिणा भी खूब दी, अतीथी [सन्यासीयों] की पूजा भी की, अग्निहोत्र भी किए, और यज्ञ स्तंभारोपण भी किया इत्यादि जो करना सो सब किया, अब कल प्रातःकाल होते यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय होते मुझे श्रेय है कि वानारसी नगरी के बाहिर बहुत से अम्ब के आराम (बाग) लगाऊं वैसे ही बीजोरे के, सेवडी [सींद] के, अम्बली के, इत्यादि वृक्षों के बाग लगा कर अनेक फूलों के आराम — ऐसा विचार किया,

दक्खिणकुलगा, उत्तरकुलगा, संखधम्मा, कुलधम्मा, मिउलुद्धा, हत्थीतावसा, उद्दंडगा, दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो, वलवासिणो, जलवासिणो, रुक्खमूलिया, अबुभक्खिणा, सेवालभक्खिणो, वायुभक्खिणो, मूलाहारा, कंदाहारा, पत्ताहारा,

१ एक कमंडल रखी धारक ७ फल खाकरही रहने वाले ८ एक वक्त पानी में डुबकी मार तुर्त बाहिर आवे ९ बारम्बार पानी में डुबकी मारे, १० पानी में गर्दन तक डूबा रहे ११ सर्व वस्त्रपात्र शरीर सहित प्रक्षाल करे १२ सदैव गंगानदी के दक्षिण के किनारे परही रहने वाले, १३ सदैव गंगा के उत्तर के किनारे परही रहने वाले, १४ शंखध्वनी कर भोजन करने वाले, १५ सदैव खडे रहने वाले, १६ मृग मांस भक्षण कर ही रहने वाले, १७ हाथी का मांस भक्षण कर रहने वाले, १८ ऊंचा दंड रखकर सदैव रहने वाले, १९ चारों दिशा की पापन्ता कर भोजन करने वाले, २० वक्कल व वस्त्र पहनने वाले, २१ समुद्र की तथा नदी के पानी की बल आवे उस ही स्थान रहने वाले, २२ पानी में सदैव रहने वाले, २३ वृक्ष के नीचे सदैव रहने वाले, २४ फक्त पानी पीकर ही रहने वाले, २५ पानी के ऊपर की सेवाल खाकर ही रहने वाले, २६ वायु भक्षण कर रहने वाले, २७ वृक्ष के मूल का आहार कर रहने वाले, २८ वृक्ष के कंद का आहार कर रहने वाले, २९ पत्तों का आहार कर रहने वाले, ३० त्वचा

रयणप्प तसणमए वयाइ मित्ताइ जाव जुवाणिक्खित्ता तत्थेण मए वाणारसीए णयरीए बाहिया बहव अंबारामा जाव पुप्फारामा रोवाविया तसेय खलु मम इदाणि कल्ल जाव जलंते सुबहुलोह कडाह कडुच्छुय तंबिय तावस भंड घडावित्ता विउलं असण पाण खाइम साइम उवक्खडावित्ता मित्तणाइ आमंतित्ता तंमित्तनायनियग विउलेण असणेण जाव सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त जाव जेट्ठ पुत्त कुडुम्बे ठावित्ता, तंमित्तणाइ जाव आपुच्छित्ता सुबहु लोहकडाह कडुच्छुय तंबिय तावस भंडगहाय जे इमे गंगा कूले वाणपत्था तावसा भवंति तंजहा—होत्तिया, पोत्तिया, कोत्तिया जन्नइ सड्ढ थालती हुंपउट्ठा दंतुक्खलिया उमज्जगा, सम्मज्जगा, निमज्जगा, संपक्खालगा,

फिर मैंने वानारसी नगर के बाहिर बहुत से आम्रारामादि यावत् पुष्पाराम रोपन किये इस लिये अब मुझे श्रेय कारक है कि मैं प्रात काल हुए यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय हुवे बहुत से लोह के कडे कडुछे इत्यादि तापस के भंडोपकरण तैयार कराकर असन पान खादिम स्वादिम चारों प्रकार का आहार तैयार कराकर सब मित्र ज्ञाती आदि का भोजन जिमाकर बडपुत्र के सुप्रत कुटुम्ब का भार करूं. फिर उन मित्र ज्ञाती को पूछ कर के बहुत से लोह के कडुछे कडे आदि तापस के भंडोपकरण ग्रहण करके जो यह प्रत्यक्ष गंगा नदी के तटस्थ वन प्रस्त बहुत तपस्वीयों रहते हैं उन के नाम—१ अग्निहोम के करने वाले, २ एक पोतीया वस्त्र के धारक, ३ भूमी शयन करनेवाले, ४ यज्ञ के करने वाले, ५ द्रव्य श्रद्धावन्त,

कप्पइ से जावजीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते सुबहुंलोह जाव दिसापोक्खिय तावसत्ताए पव्वइए पव्वइएवियणसमाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं जाव अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठं खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥ १० ॥ तत्तेणं सोमिले माहणरिसी पढम छट्ठक्ख मण पारणगंसी आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ २ त्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता किढिण संकाइयं गिण्हेइ २ त्ता पुरत्थिमं

दिशा पोषक तापसकी प्रवर्ज्या ग्रहण कर इस प्रकार अभिग्रह धारन कर यावत् छठ खमण(बेले २) पारणा करता विचरूंगा ऐसा विचार किया विचार कर प्रातःकाल होते जाज्वल्यमान सूर्योदय होते यावत् दिशा पोषक तापस की प्रवर्ज्या ग्रहण की इस प्रकार अभिग्रह धारन किया यावत् प्रथम छठखमण (बेले) का तप अंगीकार कर विचरने लगा ॥ १० ॥ तब सोमल ब्राह्मण प्रथम छठखमण के पारण में आतापना की भूमी से निकलकर वल्कल के वस्त्र पहने, जहां स्वय का उपस्थान (झोंपडी) था वहां आया आकर वांस की कावड को ग्रहण की ग्रहण कर पूर्व दिशा का पोषन किया, अर्थात् पानी का छींटा डाला पूर्व दिशा के अधिपति सोममहाराज की प्रार्थना की फूल फलादि ग्रहण करने की आज्ञा ली कि हेम रसा

तयाहारा पुप्फाहारा बीय हार,परिसाडित कद मूल तय पत्त पुप्फ फलाहारा, जलाभिसेय, कठिणगायभूया आयावणाहिं, पंचग्गीतावेहिं इंगालसोल्लिय, कंदुसोल्लियपिव अप्पाण करेमाणाविहराति ॥ ९ ॥ तत्थण जे त दिसापोक्खियातावसा तेसिं अतिए दिसा पोक्खियत्ताए पव्वइत्ताए पव्वइत्ते, त्रियण समाणो इमएयारूवं अभिगह गिण्हसामी

छाल का आहार कर रहने वाले, ११ फूल का आहार कर रहने वाले, १२ बीज का आहार कर रहने वाले, १३ आप से ही टूटकर पडे हुवे पत्र फूल फलादि तथा दूसरे के अर्पित हुवे उनोंन फेंकदिये हों उस आहार को खाकर रहने वाले, २५ स्नान करके ही भोजन करनेवाले, १६ कष्ट सहनकर शरीर को कठिन पत्थर समान बनानेवाले, १७ सूर्य की आतापना लेनेवाले, १८ पंचाग्नि तापने वाले, १० अंगार के कोयले समान तप से शरीर को कृष्ण बनाने वाले, ४० गरम बरतन पर शरीर का तपानेवाले इत्यादि प्रकार तप करते हुवे विचरते हैं ॥ ९ ॥ इन में से जो दिशापोक्षी तापस हैं उन के पास दिशा पोषक दीक्षा अंगीकार करूं भाव होवे ही फिर इस प्रकार का अभिग्रह धारण करूंगा कि—कल्पता है मुझे जावजीव पर्यंत छठछठ (बेले २) तप निरन्तर, करना दिशा की चक्रवाल युक्त तप कर्म ग्रहण कर दोनों बाहा ऊपर रख सूर्य के सन्मुख, खडा रहकर आतापना भूमिका में आतापना लेता हुवा

कप्पइ से जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेण तवोकम्मेण उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए तिकट्टु, एवं संपेहइ २ त्ता कल्लं जाव जलते सुबहुलोह जाव दिसापोक्खिय तावसत्ताए पव्वइए पव्वियणसमाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं जाव अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठ क्खमण उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥ १० ॥ तएणं सोमिले माहणरिसी पढम छट्ठक्खमण पारणगंसी आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ २ त्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता किढिण संकाइयं गिण्हे २ त्ता पुरत्थिमं

दिशा पोषक तापसकी प्रव्रज्या ग्रहण कर इस प्रकार अभिग्रह धारन कर यावत् छठ खमण(बेले २) पारणा करता विचरूंगा ऐसा विचार किया विचार कर प्रातःकाल होते प्रकाशमान सूर्योदय होते यावत् दिशा पोषक तापस की प्रव्रज्या ग्रहण की इस प्रकार अभिग्रह धारन किया यावत् प्रथम छठखमण (बेले) का तप अंगीकार कर विचरने लगा ॥ १० ॥ तब सोमल ब्राह्मण प्रथम छठखमण के पारणे में आतापना की भूमी से निकलकर वल्कल के वस्त्र पहने, जहां स्वय का उपस्थान (झोंपडी) था वहां आया आकर वांस की कावड को ग्रहण की ग्रहण कर पूर्व दिशा का पोषन किया, अर्थात् पानी का छींटा डाला पूर्व दिशा के अधिपति सोममहाराज की प्रार्थना की फूल फलादि ग्रहण करने की आज्ञा ली कि सोम रक्षा

दिस पुखति पुरत्थिमाए दिसाए सोममहाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमलमहा माहणरिसिं अभिरक्खउ २ जाणिय तत्थ कंदाणिय मूलाणिय तयाणिय पत्ताणिय पुप्फाणिय फलाणिय बीयाणिय हरियाणिय ताणि अणुजाणउत्तिकट्टु पुरत्थिमंदिसं पसरति २ त्ता जाणिय तत्थ कंदाणिय जाव हरियाणिय ताइं गिण्हति, किढिण संकाइयं भरेति २ त्ता दब्भय कुसय पत्तामोडंच समिहा कट्ठाणिय गिण्हइ २ त्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता किढिण संकाइयं ठवेइ २ त्ता वेदिं वड्डेति २ त्ता उवलेवण संमज्जणं करेति २ त्ता दब्भकलस हत्थगते जेणेव गंगामहानदी तेणेव

करता सोमल ब्राह्मणऋषि वारम्वार जानना कि कंद, मूल छाल, पत्र, फूल फल, बीज, हरितकाय, तृण इत्यादि ग्रहण करने की आज्ञा है ऐसा कहकर पूर्व दिशा की तरफ गमन किया, वहां जो कंद मूल यावत् हरितकाय था उसे ग्रहण की बांस की कावड भरी भरकर दर्भ कुश पत्रमात्र शाखा सूकाकाष्ट ग्रहण किये, ग्रहण कर जहां स्वयं की मणकुली (झोंपडी) थी वहां आया, आकर बांस की कावड स्थापन की स्थापन कर वही का (चबूतरी) बनाइ बनाकर उस छीपी ऊपर पानी का अभिषक छिटकाव किया, इतना कर हाथ का कलश ग्रहण किया ग्रहण कर जहां गंगा महा नदी तहां आकर गंगा महा नदी में प्रवेश किया प्रवेश कर मलमंजन किया स्नान किया स्नान कर जल क्रीडा की, जल क्रीडा कर अत्यन्त

उत्रागच्छइ २ त्ता गगामहाणदी उगाहति २ त्ता जलमज्जण करेइ २ त्ता जलक्रीड करेइ २ त्ता आयते चोक्खि परमसूइभूए दत्रापिठकयकज्जे दब्भकलस हत्थगए गगाओमहानदीआ पच्चुरति २ त्ता जणेव सए उडूए तेणेव उत्रागच्छइ २ त्ता दब्भेय कुसेय वालुयाए वेदिं रएति २ त्ता सरइ करेइ २ त्ता अरणे करेइ २ त्ता सरएण अरणिमहेति २ त्ता अग्गिपाडेति २ त्ता अग्गिसधूखेति २ त्ता समिहाकट्ठाणि पक्खिवति २ त्ता अग्गि उज्जालेति २ त्ता अग्गिसदाहिणेपासे सत्ते गाइ समादहे तजहा—सकथा, वकल, ट्ठाण, सिज्ज, मड, कमडलु, दड दारूनइपाण, अहताइ समिति समादहे

शुद्ध पवित्र परम शुचि हुवा, देवता व पीति भर्थ इतने कार्यकर फिर दर्भ का कलश ग्रहण कर गंगा महा नदी से निकलकर जहां स्वयं की झोंपरी थी वहां भाया दर्भ कुश वालुकावेदीकाबनाइ, उसे लीपी, झाट कर साफ की, भरणी का काष्ट ग्रहण किया भरणी काष्ट ग्रहण कर शर (बान) कर भरणी के काष्ट कर अग्नि प्रगट का अन्दर पहुनसा सुका काष्ट प्रक्षेपकिया, प्रक्षेप कर अग्नि का विशेप प्रज्वलित की प्रज्वलित कर भग्नि के दक्षिण की तरफ सात वस्तु स्थापन की उन के नाम—१ कंथा, २ वक्कल के वस्त्र, ३ स्थान, भासन, ४ शैय्या, ५ भंड-पात्र, ६ कमंडल, और ७ दंडलकडी, इस प्रकार यह सात वस्तु दाहिनी तरफ स्थापन कर, मधु (सहत) घृत तंदुल को अग्नि में प्रक्षेपकिये जिस भामन के प्रमान

म गणाइ पीणय नदुल्हिय अग्गिहुणइ चारसाधति २ चा चाळे वइसदेव कराति २ स अतिहिय्य कराति २ सा तआपच्छा अप्पणा आहाराति ॥ ११ ॥ तत्तण सामिलमाहणारिसि दोच्च छट्ठखमण उवसपज्जित्ताण विहराति ॥ तत्तेण सोमिल माहणरिसी दोच्च छट्ठखमण पारणगसि तचचसाव्व माणियव्व जाव आहार माहारेति नवर इम नाणत्त दाहिणा दिसाए जममहाराया पत्थण पत्थिय अभिरक्खओ सोमल महाणरिसी जणिय तत्थ कदाणिय जाव अणुजाणओ तिकट्टु दाहिणंदिस पसराति ॥ पच्चात्थिमिण वरूणमहाराया जाव पच्चात्थिमदिस पसराति, उत्तरण वेसमणे महराया जाव परसति ॥ पुव्वदिसागमेण चत्तारिंवि दिसाओ माणियव्वाओ जाव

कर मंदिर में हवन योग्य द्रव्य का हवनकरता रहता किया पश्चात्कुल उठाके विसर्जन (अभि) की पूजकी पश्चात् कोइ अतीथी आवे उसकी पूजा कर के फिर आपन आहार किया॥११॥तब फिर सोमिल महाऋषि दुसरे छठ तपन के पारण में जैसा प्रथम छठ तमन के पारने में कहा तैसा सब करना यावत् अतीथी को भोजन कराकर भोजन किया जिस में इतना विशेष दूसरे पारणे के दिन दक्षिण दिशा में यम महा राजा की प्रार्थना की आज्ञाकी रक्षाकरो सोमल महाऋषि यहां जो कंदादि यावत् आज्ञा है एसा कह कर दक्षिण दिशा में गया तीसरे बेले के पारने सब प्रथम जैसा ही करना इतना विशेष पश्चिम दिशा में गयो वरुण महाराजा की आज्ञा ग्रहण कर कंद ग्रहण किया यावत् आहार किया और चौथे बेले के पारणे में

आहार आहारेति ॥ १२ ॥ तत्तण तस्स सोमलस्स माहणरिसिस्स अण्णयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल समयसी अणिच जागरियजागरमाणस्स अयमयारूवे अज्झत्थिय जाव समुपज्जित्था—एव खलु अहंवाणारसीणयरीए सोमिलणाम माहणरिसी अच्चत माहणकुलपसूए एत्तण मए वयाइ चिण्णाइ जाव जुवा निखित्ता,तत्तेण मम वाणारसी माहणकुलपसूए एत्तण मए वयाइ चिण्णाइ जाव जुवा निखित्ता,तत्तेण मम वाणारसी णयरीए जाव पुप्फारामायरोविया, तत्तेण मएसुबहु लोहा जाव घडाविया जाव जेट्ठपुत्तं आपुछित्ता सुबहुलोहा जाव गहायमुड पव्वइएपविइण समाण छट्ठछट्ठेण जाव विहरति, त सेय खलुमम इदाण कालपाउ जाव जलते बहवे तावसा दिट्ठाभट्ठे

उत्तरदिशा में गया वैमश्रमणमहाराजा की आज्ञासे कन्दादि ग्रहण किया, सब क्रमिकर पूर्वदिशा जैसा चारों दिशा का कहना यावत् अतीथी का भोजन दे आहार किया ॥ १२ ॥ तब सोमिलब्रह्मऋषि अन्यदा किसी वक्त मध्यरात्रि व्यतिक्रान्त हुए अनित्य स गरना जागत इस प्रकार अध्यवसाय हुआ यों निश्चय मैं वानारसी नगरी में सोमल ब्राह्मण ऋषि अत्यन्त पवित्र ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हुआ तब मैंने वेद,ब्रतास किया यावत् यज्ञ स्थम रोपा तब फिर मैंने वाणारसी नगरी के बाहिर अन्याराम यावत् पुष्पाराम लगाय, तब फिर मैंने बहुत कंठ कडाइ कुडछ बनवाकर बड पुत्र को गृहभार सुमत कर यावत् तापस दीक्षा धारन करि पुंडरीक हुआ तब स बके २ पारना करता यावत् विचरता हूं इसलिये अब श्रेष्ट है मुझ कि कल प्रातःकाल होत यावत् जाज्वल्यमान सूर्य उदय होने बहुत से तापस जिन को मैंने इस

पुव्वसगातिण्य परियायसंगतिण्य आपुच्छित्ता आसमसंसियाणिया बहुइ सत्तमस्सयाइ अणुमाणिएय वागलवत्थनियत्थ किढिणसकाइयगहिति २ त्ता हत्थरस भडामगरणस्स कट्ठमुद्दाए मुहबंधिता उत्तरादिसाए उत्तरा भिमुहस्स महापत्थाणं पत्थावेयत्तए एव सपेहइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते बहवे ता वसेयादिट्ठा भट्ठे सपव्वगतिण्य परियाग संगतिएय आपुच्छित्ता,आसमसंसियाणिय बहुइं सत्तमस्सयाइ अणुमाणियत्ता वागलवत्थनियत्थस्स किढिणं संकाइय गिण्हति गिहत्थस भडावकरणस्स तचव जाव कट्ठमुद्दाए मुहबंधति २ त्ता अयमेयारूव

जिनके साथमेंरहा प्रथम संसार अवस्थासे जिनकी संगती की थे जन है तथा पश्चिम भराभिक अवस्था के जो संगतीजन उन सब का पूछकर तप भर आश्रम के आश्रित रहे हैं उन को भी पूछकर बहुत स्वपद मृगादि हैं उनको सन्तोष कर वल्कल के वस्त्र पहन कर बांसकी कावड ग्रहण कर धरे सब भडोपकरण हाथ में ग्रहण कर काष्ट की मुखपती मुखपर बन्धकर उत्तरदिशा की तरफ उत्तराभि मुख होकर महाप्रस्थान पथ मे जाति कपन करके चला जाऊं एसा विचार किया विचार कर के प्रातःकाल होते ज्वाज्वल्यमान सूर्योदय होते बहुत तापसो को देख हुए सरवासी पूर्व संगती पश्चात् संगती को पूछकर आश्रम आश्रित पशुआदि को सन्तोषकर वल्कल के वस्त्र पहनकर बांस की कावड ग्रहण कर हाथ में भंडोपकरण धारनकरे, वैसे ही

अभिग्गह अभिगिण्हति जत्थेवणं अम्ह जलंसिवा एव थलसिवा दुग्गसिवा निण्णंसिवा पव्वयसिवा विसमसिवा गड्डसिवा दरिएवा पक्खलिज्जवा पवडिज्जवा नो खलुमे कप्पति पच्चुट्ठित्तिए तिकट्टु अयमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हति उत्तराएदिसाए उत्तराभि मुहपत्थाण सते ॥ १३ ॥ तत्तेण से सोमिले माहणरिसिं पव्वावरण्हकाल समयसि जेणेव असोगवर पायवे तेणव उवागत असोगवरपायवस्स अह किढिण संकाइयग ठवेति २ त्ता वेदिंवड्डेइ १ त्ता उवलेवण समज्जिण करेति २ त्ता दब्भकलस

पावत काष्ट की पाटली मुखपर मुहपतीरूप बांधकर इस प्रकार अभिग्रह धारना किया मे उत्तरदिशा में गमन करता हुवा जिस जल [पानी] के स्थान में अथवा किसी स्थल [जमीन] पर दुर्ग गुफादि स्थान मे, नीचे स्थानमें, पर्वतमें, विषम स्थानमें, गर्त—खड्डमें, दरीये उंडीमूणी गुफादि में, प्रस्खलित होवूं अथवाकर पडजाए सो फिर निश्चय मुझ पीछा बेठा होना कल्पे नहीं अर्थात् वैसे ही पड २ प्राण त्याग करदूंना ऐसा कर इस प्रकार अभिग्रह धारन कर उत्तरदिशा में उत्तरदिशा की तरफ मुहकर के महापथ में चला ॥१३॥ तब फिर वह सोमिल ब्रह्मऋषि दो प्रहर दिनके अवसरमें जहां अशोक वृक्ष था तहां आया आकर अशोक वृक्ष के नीचे बांस की कावड स्थापन की स्थापन वेदी बनाइ उसे गोबरादी से लीपी झाडकर साफकरी

इस्थगाम जणव गंगामहानई जहासिवा जाव गंगाओमहानईय पच्चुत्तरीति जेणेव असोगवरपायवे तणव उवागच्छइ २ त्ता वम्मीहय कुमेहिय वालुयाए वेदिं रएति रएत्ता सरग करति २ त्ता जाव बलिवईसदेवं करति २ त्ता कट्ठमुद्दं बंधति २ त्ता तसिणीए चिट्ठति २ त्ता ॥ १४ ॥ तएणं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसी एगेदेवे अंतिअं पाउभूए तचेण सेदेवे सोमिलमाहणं एवं वयासि हंभो सोमिलामहण पव्वइया दुपव्वइया ! तच्चं ॥ तत्तेण से सोमिले तस्सदेवस्स दोच्चपि तच्चंपि एयमट्ठं णोआढाति णोपरिजाणति जाव

माकर दर्भ का कलश हाथ में ग्रहण किया जहां गंगा महानदी है वहां आया और शिवराजऋषि का भगवती सूत्र में कथन है वैसा इसने भी किया यावत् गंगा महानदी से निकलकर जहां अशोक वृक्ष था वहां आया, आकर दर्भ कलश स्थापन किया बालु की वेदिका बनाइ बनाकर भरणी काष्ठ ग्रहण किया यावत् बलिदेवा विसर्जन की पूजा की कर के काष्ठ की मुखपत्ति से मुखबंधन किया करके मौनस्थ रहा॥१४॥ तब उस सोमल महाऋषि के पास अर्ध रात्रि में एक देवता आया यह देवता सोमिल ब्राह्मण से यों बोला—अहो सोमिलब्राह्मण! तेरी प्रव्रज्या है वह दुःप्रव्रज्या है अर्थात् तेरा दीक्षितपना खराब है तब सोमिल उस देवता का दो तीन वक्त वक्त वचन श्रवण कर उस वचन का आदर नहीं किया वरन्‌ता भी

तुसिणिए सचिट्ठुति ॥ ततेण सदेवे सामिलेण माहणरिसिणा ॥ अणाढाइज्जमाणे जामेवदिसंपाउभूए तामेवदिसिं पाडगते ॥ १५ ॥ तत्तेण से सोमिले कल्लं जाव जलंत वागलवत्थ काढिणसंकाइय गहियहत्थे मडाथकरणे कट्ठमुद्दाए मुहंबधाति २ त्ता उत्तराभिमुहं सपत्थिए ॥ १६ ॥ तत्तेण सोमिल बितिय दिवसासि पच्छावरणहकाल समयंसि जेणव सतिवन्न अह काढिण संकाइय ठवेति २ त्ता वदिंवधति जहा असो गवरपायवे जाव अग्गिहुणेति कट्ठामुद्दाए मुहंबधाति तुसणीए सचिट्ठुति ॥१७॥ तत्तेण तस्स सोमलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि एगदेवे आतिय पाउभूए, तत्तेण से देवे

माना मौनस्थ रहा तब वह देव सोमिल ब्राह्मण से अनादर पाया जिस दिशा से आया था उस दिशा पीछा चला गया ॥ १८ ॥ तब सोमिल प्रातःकाल होते यावत् सूर्योदय होते वकल के वस्त्र पहन कर खोके कावड ग्रहण कर मडापकरण हाथ में ग्रहण कर काष्ठ की मुहपती से मुंह बांध कर उत्तर की तरफ चला ॥ १९ ॥ तब सोमिल दूसरे दिन की दो पहर दिन आया तब जहां सप्तवर्ण वृक्ष था उस के नीचे बांस की कावड स्थापन की, वेदीका बनाइ और सब जैसा अशोक प्रधान वृक्ष के नीचे किया था वैसा ही किया यावत् अग्नि हामकर काष्ठ की पाटथीसे मुहबंध कर मौनस्थ रहा ॥ २० ॥ तब सोमल के पास आधीरात्रि में एक देवता आया वह देवता आकाश में ही रहा हुवा जैसा अशोक वृक्ष के स्थान

अतालिखपडिवस अहा असागवरपायवे जाव पडिगत ॥ १८ ॥ तत्तण स सोमिल कल्ल जाव जलते वागलवत्थनियात्थ किढिण सकाय गिण्हति २ त्ता कट्ठमुद्दाए मुहंबधति २ त्ता उत्तरदिशाए उत्तराभिमुहे सपत्थिते ॥ १९ ॥ तत्तेण से सोमिल ततियदिवसमि पच्छावरण्हकाल समयसी जणेव असोगवरपायवे तेणव उवागच्छइ २ त्ता असोगवरपायवस्स अहे काढिणसकाइय ठवति वेदिंवधति गगा तरइमहानइ पच्चुत्तरत्ति २ जणेव आसोगवर पायव तणव उवागच्छइ २त्ता वेदिएरएति २ त्ता जाग कट्ठमुद्दाए मुहबधति २ तुसिणिए सचिट्ठति ॥ २० ॥ तत्तण से सामलस्स पुव्व

करा था वैसा यहां ही करा यावत् मनोहर पाया हुवा पीछा गया ॥ १८ ॥ तब फिर वह सोमिल प्रात काल वल्कल के वस्त्र पहनकर कावड धारन करके भंडोपगरण ग्रहण कर काष्ट मुखपती से मुख बंध कर उत्तर दिशा के सन्मुख चला ॥ १९ ॥ तब सोमिल ब्राह्मण तीसरे दिन दो प्रहर दिन के अवसर में जहां अशोक वृक्ष था उस के नीचे आकर कावड स्थापन की गंगा में स्नान किया, पीछा अशोक वृक्ष के नीचे आया वेदी बनाई यावत् काष्ट की मुखपती मुख पर बंध कर मौनस्थ रहा ॥ २० ॥ तब सोमल के पास आधी

रत्तावरत्तकालसमयसी एगेदेवे अतिए पाउभूए तचेव भणति जाव पडिगए॥२१॥ तत्तेण से सोमिल जाव जलते वागलवत्थनियत्थि कढिण सकाइय जाव कट्ठमुद्दाए मुहबंधति २ त्ता उत्तराए दिसाए उतराए सपत्थिट्ठे ॥ २२ ॥ तत्तेण सोमिल चउत्थ दिवस पच्छावरण्ह कालसमयासि जेणव वडपायवे तणेव उवागए वडपायवस्स अह किढिणसठवेति २ त्ता वेइवढाति उवलेवण समज्जण करति जाव कट्ठमुद्दाएमुह बधति तुसिणीए सचिट्ठति २ त्ता ॥ २३ ॥ तत्तेण सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल समयसि एगदेवे अतिय पाभूउए तचेव भणति जाव पडिगए॥२४॥ तत्तेण से सोमिल जाव जलत वागलवत्थनित्थ कढिण सकाइय जाव कट्ठमुद्दाएमुहमुहबधति,उत्तरादिसाए

रात्रि में एक देवता आया पूर्वोक्त प्रकार कहकर निरादर पाया पीछा गया ॥ २१ ॥ तब सोमिल यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय हुवे वकल के वस्त्र पहनकर कावड ग्रहण कर यावत् काष्ठ मुहपती बंध कर उत्तर दिशा की तरफ उत्तराभिमुख चला ॥ २२ ॥ तब वह सोमिल चौथ दिन दो प्रहर दिन आये जहां वडका वृक्ष था वहां आया वहां आकर वट के नीचे कावड स्थापन की वदीका बनाइ गोबर से लीपी झाडकर साफ की यावत् काष्ठ की मुहपति बंधकर मौनस्थ रहा ॥ २३ ॥ तब सोमिल के पास आधीरात्रि में एक देवता आया, पूर्वोक्त प्रकार कह कर पीछा गया ॥ २४ ॥ तब सोमिल प्रात काल हुवे यावत् जाज्वल्यमान

उत्तराभिमुहे सपत्थिए २ त्ता ॥ २५ ॥ तएणं से सोमिल पढमदिवससि पव्वारण्ह काल समयसि जणेव उत्तरपायवे उत्तरपायवस्स अहे किढिण संकाइय ठवेति वेइ वड्ढेति जाव कट्ठमुद्दाए मुहंबंधति तुसिणिए सचिट्ठति ॥ २६ ॥ तत्तेणं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले समयसी एगदेवे जाव एवं वयासी-हंमो सोमिला! पव्वइया दुपव्वइय पढमभणति तहेव तुसिणिए सचिट्ठति ॥देव दोच्चपि तच्चपि वदति सोमिला! पव्वइया दुपव्वइय॥ २७ ॥ तत्तेणं ते तस्स सोमिलस्स तेण देवेण दोच्चपि तच्चपि एवं वुत्तसमाणे तहेव एवं वयासी कहण देवाणुप्पिया!मम पव्वइया दुपव्वइय?

सूर्योदय हुवे वल्कलके वस्त्रपहने कावड पारनकी काष्टकी मुखपत्तीसे मुखपत्ता उत्तरदिशाकी तरफ चला ॥२५॥ तब सोमिल पांचवे दिन दो प्रहर दिन आये वहां उम्बर (गुलर) वृक्ष था उस के नीचे आया, कावड स्थापन की वेदीका बनाइ पातर् काष्ट मुखपत्ति स मुह बांधकर मौनस्थ रहा ॥ २६ ॥ तब उस सोमिलब्राह्मण के पास मध्यरात्रि में एक देवता आया यह यों कहने लगा—अहो सोमिल ! तेरी प्रवज्या है यह दुः [खार्थी] प्रवज्या है ॥ २७ ॥ तब उस सोमिल ने उस देवता के मुख से दो तीन वक्त उक्त वचन श्रवणकर उस देवता से यों बोला हे देवानुप्रिया ! किस कारण मेरी

॥ २८ ॥ तचेणं से देवे सोमिलमाहण एवं वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! तुमे पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स आतिए पंचाणुव्वए सत्तसिक्खावए दुवालसविहे सावगधम्मपडिवन्ने तएणं तव अण्णयाकयाइ असाहुदंसणेणं पुव्वरत्ताकुडंब जाव पुव्वचिंततदवो उच्चारेति जाव जणव असोगवरपायव तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कढिण सकाइय जाव तुसिणीए संचिट्ठति तएणं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसी तव अंति २ पाउभवामि सोमिला पव्वइया दुपव्वतियते तहाचेव देवोनूयय भणाति , जाव पचमदिवसंसि पुव्वावरत्तकालसमयसी जेणव उवरपायव तणव उवागच्छाति २ त्ता ॥

मवज्यों यह दुष्ट मवज्यों है ? ॥ २८ ॥ तब वह देवता सोमिल ब्राह्मण से इस प्रकार बोला-यों निश्चय अहो देवानुप्रिया ! तेने पार्श्वनाथअर्हन्त पुरुषोत्तम के पास पांच अणुव्रत सात शिक्षाव्रत बारा प्रकार का श्रावक धर्म अंगीकार किया था फिर तुमने सदा किसी वक्त साधु के दर्शन नहीं करने से सम्यक्त्व की हानीहुई और मिथ्यात्व की वृद्धि हुई यावत् कुटुम्बजागरना कर तुमने अम्बाराम वगैरा लगाया, लोह कुडछा वगैरा कराया तपास हुवा यावत् अभिग्रह धारने कर उत्तर दिशा की तरफ चलो आशोक वृक्ष के नीचे रहा कावड स्थापन कर यावत् मौनस्थरहा तब अर्धरात्रि को तेरे पास मैं आया और बोला अहो सोमिल तेरी प्रवज्या दुष्ट प्रवज्या है यावत् आज पांचवा दिन है आधीरातको यहां उम्बर वृक्ष तहां

तेकिहिण सघाय ठात्रहिति वर्दिमढवि उवल्त्वण समज्जण करेतिरत्ता जाव कट्ठमुहाए मुहयधति २ त्ता तुसिणिए संचिट्ठंति त एव खलु देवाणुप्पिया! तम दुपवधइया॥२९॥ तत्तण तदेव सोमिल एव वयासी—जइण तुम देवाणुप्पियाणि पुव्वपडिवन्नाइ पच-अणुवयाइ सत्तसिक्खावयाइ सयमव उवसपज्जित्ताण विहरसि, तोण तुब्भइदाणिसु पव्वइय भविज्जा ॥ ३० ॥ तत्तेण सदेवे सोमिल वदइ नमसइ जामेवदिसि पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगते ॥ ३१ ॥ तत्तण सोमिले माहणरिसिं तेण देवेण एववुत्ते समाणे पुव्वपडि वन्नाइ पचअणुवयाइ सयमव जाव उवसपज्जित्ताण विहरति ॥ ३२ ॥

माया माकर काष्ट स्थापनकरी वेदीका बनाइ गोवर से लिपी झाडकर साफकरी, यावत् काष्टकी मुहपती मुखपरबंधकर मौनस्थरहा यों निश्चय अहो देवानुप्रिया! तेरी प्रव्रज्या दुष्ट प्रव्रज्या है! ॥ २९ ॥ तब वह देवता सोमिल ब्राह्मण से यों कहता भया अहो देवानुप्रिया! प्रथम अंगीकार किये पांच अणुव्रत सात शिक्षाव्रत स्वयमेव अंगीकार कर विचरो तो तुमारी इस वक्त सुप्रव्रज्या होवे (सोमिल ब्राह्मण का पुनः श्रावकपर्व अंगीकार करने के भाव जानकर) तब वह देवता सोमिल ब्राह्मणको वन्दना नमस्कारकर जिसदिशा से प्रगट हुआ था जिस दिशा आया था उसदिशा पीछागया ॥ ३१ ॥ तब सोमिल ब्राह्मणऋषि उस देवता का ऐसा वचन श्रवण कर के प्रथम अंगीकार किये हुवे पांचअणुव्रतादि श्रावक के बाराव्रत स्वयमेव अंगीकार

तत्तेण से सोमिले माहणे बहुहिं चउत्थ छट्ठ अट्ठम जाव मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेण अप्पाणं भावेमाणे बहुइंवासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेति २ त्ता तीसभत्ताइं अणसणाए छेदिति २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइए अप्पडिकंते विराहिय सम्मत्ते कालमासे कालंकिच्चा सुक्कवडिंसए विमाणे उववाअसभाए देवसयणिज्जंसि जाव सुक्कमहग्गहत्ताए उववन्ने ॥ ३३ ॥ तत्तेणं से सुक्कमहग्गहे अहुणो ववन्ने समाणे जाव भासामण पज्जत्तिए, एवं खलु गोयमा ! सुक्केणं महग्गहेणं सा दिव्वा देविड्ढि जाव अभिसमन्नागया, एगं पलिओमं ठिती, सुक्केणं भंते ! महग्गहाताओ देवलोगाओ आउक्खएणं कहिं गच्छिहिति

कर विचरने लगा ॥ ३२ ॥ तब सोमिल ब्राह्मण बहुत उपवास बेला तेला चौला यावत् मास क्षमन अर्धमासक्षमनादि तपश्चर्या कर विचित्र प्रकार तप से [अपनी आत्मा को भावता श्रावकपने की स्थापना कर तीसभक्त अनशन का छेदन कर पहिले जो व्रत का भंग किया उस की आलोचना प्रतिक्रमण किये बिना विराधिक हो काल के अवसर में काल पूर्णकर शुक्रावतंसक विमान की उपपात देव शैया में यावत शुक्र महाग्रहपने उत्पन्न हुवा ॥ ३३ ॥ तब शुक्र महाग्रह तत्काल का उत्पन्न हुवा यावत् भाषा मन पर्याप्तिबन्धो यों निश्चय अहो गौतम ! शुक्र नामक महाग्रह दिव्य देवता सम्बन्धी ऋद्धि को प्राप्त की है शुक्रदेव की एक पल्योपम की

तेकिट्ठिण सकाय ठाणहिति वदिंवढवि उवल्वण समज्जण करेति२त्ता जाव कट्ठमुद्दाए मुहपधति २ त्ता तुसिणिए साचट्ठति त एव खलु दवाणुप्पया! तम दुपव्वइया॥२९॥ तत्तण तंदव सामिल एव वयासी -जइण तुम दवाणुप्पयाणि पुव्वपडिवज्जाइ पच-अणुवयाइ सत्तसिक्खावयाइ सयमव उवसपज्जित्ताण विहरसि, ताण तुज्झइदाणिसु पव्वइय भविज्जा ॥ ३० ॥ तत्तण सदवे सामिल वदइ नमसइ जामवदिसि पाउभूए तामेवदिसि पाडगत ॥ ३१ ॥ तत्तण सोमिल माहणरिसि तेण दवेण एववुत्ते समाणे पुव्वपाडि वसाइवचअणुवयाइ सयमव जाव उवसपज्जित्ताण विहरति ॥ ३२ ॥

भापा भाकर कावड स्थापनकरी वेदीका बनाई गोबर से लिपी झाडकर साफकरी, यावत् काष्टकी मुखपती मुखपरबंधकर मौनस्थरहा यों निश्चय अहो देवानुप्रिया ! तेरी प्रवज्या दुष्ट प्रवज्या है ! ॥ २९ ॥ तब वह देवता सोमिल ब्राह्मण से यों कहता भया अहो देवानुप्रिया ! प्रथम अंगीकार किये पांच अणुव्रत सात शिक्षाव्रत स्वयमेव अंगीकार कर विचरो तो तुमारी इस वक्त सुप्रवज्या होवे (सोमिल ब्राह्मण का पुनः श्रावकधर्म अंगीकार करने के भाव जानकर)तब वह देवता सोमिल ब्राह्मणको वन्दना नमस्कारकर जिसदिशा से प्रगट हुवा था जिस दिशासे आया था उसदिशा पीछागया॥३१॥ तब सोमिल ब्राह्मणऋषि उस देवता का एसा वचन श्रवण कर के प्रथम अंगीकार किये हुवे पांचअनुव्रतादि श्रावक के बाराव्रत स्वयमेव अंगीकार

॥ चतुर्थ अध्ययन-बहुपुत्तिया देवीका ॥

जइण भंते ! उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहेणामं णयरे गुणसिलए चेइए, सेणिएराया, सामीसमोसढे परिसानिग्गया ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं बहुपत्तियादेवी सोहम्मकप्पे बहुपुत्तिएविमाणे सभाएसुहम्माए बहुपुत्तियासि सीहासणंसि, चउहिं सामाणिय सहस्सेहिं, चउहिं महत्तरियाहिं, जहेव सुरियाभे जाव भुंजमाणे विहरइ ॥ २ ॥ इमंचणं केवलकप्पं जम्बूदीवंदीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासती, समणं भगवं जहा सुरियाभो जाव

यदि अहो भगवन् ! चौथे अध्ययन का क्या अधिकार कहा है ? यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी गुणशील बगीचा, श्रेणिक राजा, भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आई ॥ १ ॥ उस काल उस समय में बहुपुत्तिका देवी सौधर्म कल्प बहुपुत्रिका विमान में सौधर्मीसभा में बहुपुत्रिक सिंहासनपर चार हजार सामानिक देवता चार हजार महत्तरिकादेवी जिस प्रकार सूर्याभ देव यावत् भोग भोगवतीहुई विचर रही थी॥२॥ उसने इस सम्पूर्ण जम्बूद्वीप नामक द्वीपको विस्तीर्ण अवधिज्ञान करके देखा, देख कर श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामी को जैसे सूरियाभ देव वैसे नमस्कार

कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहवासे सिज्झिहिति जाव सव्व दुक्खाणमंतं करेति ॥२५॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं निक्खेवओ॥ तत्तिय अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ * * * *

स्थिति जानना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! शुक्र महाग्रह देवलोक से आयुष्य का भव का स्थिति का क्षय करके कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा बुद्ध होगा मुक्त होगा सब दुःख का अंत करेगा ॥ २५ ॥ यों निश्चय अहो जम्बू ! तीसरे अध्ययन के इस प्रकार भाव कहे यह तीसरा शुक्र देव का अध्ययन सम्पूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ०

॥ चतुर्थ अध्ययन—बहुपुत्तिया देवीका ॥

अट्ठण भंते ! उक्खवओ एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहेणाम णयरे गुणसिलए चेइए, सेणिएराया, सामीसमोसढे परिसानिग्गया ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएण बहुपत्तियादेवी सोहम्मकप्प बहुपुत्तिएविमाणे सभाएसुहमाए बहुपुत्तियासि सीहासणंसि, चउहिं सामाणिय सहस्सहिं, चउहिं महत्तरियाहिं, जहेव सुरियाभे जाव भुजमाण विहरइ ॥ २ ॥ इमचण केवलकप्प जबुद्दीवदीव विउलण ओहिणा आभोएमाणी २ पासती, समण भगव जहा सुरियाभो जाव

यदि अहो भगवन् ! चौथे अध्ययन का क्या अधिकार कहा है ? यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी गुणशील बगीचा, श्रेणिक राजा, भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आई ॥ १ ॥ उस काल उस समय में बहुपुत्रीका देवी सौधर्म कल्प बहुपुत्रिकाविमान में सौधर्मीसभा में बहुपुत्रिक सिंहासनपर चार हजार सामानिक देवता चारहजार महत्तरिकादेवी जिस प्रकार सूर्याभ देव यावत् भोग भोगवतीहुई विचर रही थी॥२॥ उसने इस सम्पूर्ण जम्बूद्वीप नामक द्वीपको विस्तीर्ण अवधिज्ञान करके देखा, देख कर श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामी को जैसे सुरियाभ देव वैसे नमस्कार

भंतेति भगवं गोयमे ! समण भगवं कुडागारसाला ॥ ५ ॥ बहुपुत्तियाणं भंते ! देवी साविज्झा देवड्ढी अभिसमन्नागया पुच्छा? एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसीणामं णयरी होत्था अंबसालवणे चइए ॥ ६ ॥ तत्थणं वाणारसीएनयरीए भद्देणाम सत्थवाह होत्था अड्डेदित्ते जाव अपरिभूए ॥ ७ ॥ तस्सणं भद्दस्स सुभद्दाणामभारिया सुकुमाला वञ्झा अवियाउरि जाणुकोपर मातायाविहोत्था ॥ ८ ॥ तत्तेणं तीसे सुभद्दाएसत्थवाहिए अण्णयाकयाई पुव्वरत्ता

श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का वन्दना नमस्कार कर प्रश्न किया, भगवंत महावीरस्वामी ने कुटाकार शाला के दृष्टान्त से समाधान किया ॥ ५ ॥ अहो भगवन ! बहुपुत्रिका देवी को एसी देवी सम्बन्धी ऋद्धि किस के प्रभाव से प्राप्त हुई ? यों निश्चय अहो गौतम ! उस काल उस समय में वाणारसी नामक नगरी थी उस के बाहिर ईशान कौन में अम्बशाल नामक वन चैत्यथा ॥ ६ ॥ तहां वाणारसी नगरी में भद्रा नामक सार्थवाह रहता था वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभवित था ॥ ७ ॥ उस भद्र सार्थवाही के सुभद्रा नाम की भार्या थी वह सुकुमाल यावत् सुरूपथी परंतु वन्ध्या थी बालक प्रसूती नहीं होतय घुटने के कोपर(कोन) की ही माता थी ॥ ८ ॥ अब उस सुभद्रा सार्थवाहिनी को अन्यदा किसी

अरत्तकाल समयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणी इमेयारूवे जाव संकप्पे समुप्पज्जि त्था। एवं खलु अहं अहण्णं सम्मं वाहणसद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि ना चेवणं अहं दारगंवा दारियंवा पयामी तंधन्नाओणं ताओ अम्मयाओ जाव सुलद्धेणं तासिं अम्मयाणं मणुयजम्मजीवियफले जासिं मन्नं नियगकुच्छि संभूयाइं थणदुद्धलुद्धाइं महुर समुल्लावगाणि मम्मणपयंपियाणि थणमूल कक्खदेस भाग अभिसरमाणाणि, पण्हयंति पुणोय कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिंगिण्हिउणं,

एक मार्धरात्रि बीते बाद कुटुम्बजागरणा जागते हुवे इस प्रकार का अध्यवसाय मन में उत्पन्न हुवा यों निश्चय मैं भद्रा सार्थ के साथ विस्तीर्ण भोगभोगवती विचर रही हूं परंतु निश्चय मैंने बालक अथवा बालिका जनी नहीं इसलिये धन्य है उस माता को जो अपने उदर से उत्पन्न हुवे बालकों का अपने स्तन के दूध से लुब्ध करती है उस माता का जन्म जीवित फल सफल है जो मधुर-मिष्ट वचन कर मम्माप करती है, उन की मंजुलवाणी का श्रवण करती है, स्तन के मूल में काख के देश विभाग में भरणकर फिरती है बच्चों का सिंगार यथासुक हो दूधका पान माता है अर्थात् मुख मे स्तन पूर्ण भराते हैं बच्चा के कोमल कमल समान हाथो अपने हाथमे

उछंगनीवेसियाणि दितिसमुल्लावए सुमहुरे पुणो २ समप्पमाणियाए, अहअधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना एत्ताएमवि नपत्त आहय जाव झियाति ॥ १ ॥ तए कालेण तेण समएण सुव्वयाउण अज्जाओ इरियासमियाओ भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाणभंडमत्तनिक्खवणासमियाओ उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणिया समियाओ, मणगुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिंदियाओ गुत्तबंभचारिणीओ बहुसुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विंचरमाणीओ गामाणुगामदूयज्जमाणीओ जेणेव

भ्रमण करती है भपन उत्संग मस्तित (खोले) मे बैठाती है, उनको गुनगुन शब्दकर कर प्यार बोलाती है, धन्य है उसे मैं अधन्य हूं मैंने पूर्व जन्म में पुण्य नहीं किये हैं इस से एक भी बालक का मात नहीं हुई इस प्रकार आर्त ध्यान ध्याती हुई विचरने लगी ॥ १ ॥ उस काल उस समय में सुव्रतानाम की आर्जिका ईर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति भंडोपकरण (ग्रहण करना) मलोपकरण पात्रादि नक्षेप (रखनकी) समिति, बडीनीत लघुनीत खेंखार श्लेष्म इत्यादि परिठावणया समिति इत्यादि समिति कर समित, मनगुप्त वचनगुप्त कायागुप्त, इन तीनोंगुप्ती कर गुप्त इन्द्रियों को गुप्त रखनेवाली, गुप्त ब्रह्मचर्य की पालने वाली, बहुत शास्त्र की जान, बहुत आर्जिका के परिवार से परिवरी हुई पूर्वानुपूर्व चलती हुई ग्रामानुग्राम

वाणारसीणयरी तणव उवागच्छइ २त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिहि२त्ता संजमेण तवसा जाव विहरति॥१०॥ तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसिए णयरीए उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणिस्स भिक्खायारियाए अडमाणे भद्दासत्थ वाहस्स गिहं अणुपविट्ठा ॥ ११ ॥ तएणं सा सुभद्दा सत्थवाही ताओ अज्जयाओ एज्जमाणीओ पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठइ२ त्ता सत्तट्ठप याइं अणुगच्छइ २ त्ता वंदइ णमंसइ २ त्ता विउलेणं असण पाणं खाइमं साइमं

रहती हुई, सुख सुख से विचरती हुई जहां बानारसी नगरी थी वहां आई आकर यथाप्रतिरूप अवग्रह ग्रहण कर सत्तरह प्रकार संयम बारह प्रकार के तप कर अपनी आत्मा को भावती हुई विचरने लगी॥१०॥ उन वक्त उन सुव्रता आर्यिकाजीकी आर्यिका का एक संघाडा वाणारसी नगरी में ऊंच समीपादि मध्यम बाणकादि नीच भिक्षुकादि के कुलों में बहुत घरों की सामुदानी भिक्षाचरी के लिये फिरते हुए भद्रा सार्थवाहिनी के घर में प्रवेश किया ॥ ११ ॥ तब वह भद्रासार्थवाहिनी उन आर्यिका को आती हुई देखकर हृष्ट तुष्ट हुई, शीघ्र मन आसन से खडी होकर आर्यिका के सामने आठ पांव सामे गई, वंदना नमस्कार किया वंदना नमस्कार कर विस्तीर्ण अन्न पानी खादिम-पक्वान्न, स्वादिम मुखवास बहराया,

मेण पडिलाभित्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ भद्दणसत्थवाहेण सार्द्धं विउलाइं भागभोगाइं भुञ्जमाणी विहरामि, नो चेवणं अहं दारगंवा दारियंवा पयामि तंधन्नाओणं ताओ अम्मयाओ जाव एत्था एगमवि न पत्ता, तं तुम्भे अज्जा! बहुनायाओ बहुपढियाओ, बहुणि गामागरनगर जाव सन्निवेसाइं आहिंडइ, बहुणयराईसर तलवर जाव सत्थवाहप्पभितीण गिहाइं अणुपविसह अत्थिमे कइं विज्जाएपउएवा मंतप्पउएवा वमणवा विरेयणंवा वत्थिकम्मंवा उसहे भेसज्जेवा उवलद्धेजेण अहं दारवा दारियंवा पयाएज्जा ॥ १२ ॥ तएणं ताओ अज्जाओ सुभद्दा सात्थवाहिं एवं वयासी—अम्हेण

बहराकर यों कहने लगी—यों निश्चय अहो आर्जिकाओ! मैं भद्रा सार्थवाहि के साथ विस्तीर्ण भागोपभाग भोगवती विचरती हूं परंतु निश्चय मेरे बालक किंवा बालिका हुई नहीं इस लिये धन्य है उस माता को जो माता बालक को खिलाती है इस लिये अहो आर्जिका! आप बहुत शास्त्रों की जान हो बहुत प्रकार ग्रन्थादि पढी हुई हो बहुत ग्राम नगर यावत् सन्निवेश में फिरती हो, बहुत राजा ईश्वर तलवर यावत् सार्थवाहि प्रमुखिक के घर में प्रवेश करती हो, इसलिये कोई विद्या प्रयोग से मंत्र प्रयोग से वमन प्रयोग से विरेचन (रेच) के प्रयोग से वस्तिकर्म तथादि गुह्य स्थान में प्रवेश से औषधकर भेषधकर जो आपको प्राप्त हुआ हो उस उपाय कर मेरे एक भी बालक बालिका होवे ऐसा उपाय बताइये ॥ १२ ॥

देवाणुप्पिए समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ णो खलु कप्पति अम्हं एयं अट्ठं कण्णेहिंवि निसामित्तए किं मगपुण उवदिसित्तए वा समायरित्तए वा अम्हणं देवाणुप्पिए णवरं विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहमो ॥ १३ ॥ तत्तेणं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ ताओ अज्जाओ तिक्खुत्तो वदति णमंसति एवं वयासी—सद्दहामिणं अज्जाओ! निग्गंथं पावयणं पत्तियामिणं अज्जाओ! णिग्गंथं पावयणं रोएमिणं अज्जाओ! निग्गंथं पावयणं, एवामेयं

तब वे आर्जिका सुभद्रा सार्थवाहिनी से यों बोली अहो देवानुप्रिया ! हम सब ही निर्ग्रन्थनी हैं इर्या समिति यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी हैं इस लिये निश्चय से तुमने कही सो कथा कान से श्रवण करनी भी नहीं कल्पती है, तो फिर उपदेश करना और करने की तो कहना ही क्या? अहो देवानुप्रिया! हम तेरे को केवली प्रणीत धर्मोपदेश करेंगी ॥ १३ ॥ तब वह सुभद्रा सार्थवाहिनी उन आर्जिका के पास धर्मोपदेश श्रवण कर हृष्ट तुष्ट हुई उन आर्जिका को तीन वक्त वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी अहो आर्जिकाओ! मैंने निर्ग्रन्थ के प्रवचन का श्रद्धान किया, निर्ग्रन्थ प्रवचन की प्रतीत हुई निर्ग्रन्थ प्रवचन ग्रहण करनेकी रुचि जगी आप कहती हो वैसाही है आपके वचन अविनाशी सत्य हैं मुझे श्रावक धर्म अंगीकार

अवितहमेयं सावगधम्मं पडिवज्जए ? अहासुहं देवाणुप्पिए ! मापडिबंधंकरेह ॥ १४ ॥ तत्तेणं सा सभद्दासत्थवाहिणी तासिं अज्जाणं अंतिए जाव पडिवज्जति, ततो अज्जाओ वंदइ नमसइ पडिविसज्जेति ॥ १५ ॥ तत्तेणं सासुभद्दा सत्थवाही समणोवासीयाजाया जाव विहरति ॥ १६ ॥ तएणं तीसे सुभद्दाए समणो वासीयाए अण्णयाकयाइ पुव्वरत्ता काल समयंसी कुडुंबजागरणाजागरमाणे अयमेया जाव समुपज्जित्था एवं खलु अहं भद्दण सात्थवाहसर्द्धि विउलाइ जाव विहरामि नो चेवणं अहं दारगंवा दारियंवा तसेयं खलुमम कल्लं पाउ जाव जलंते भद्दस्स

कराये आर्जिका सीने कहा महो देवानुप्रिया तुमारे को सुख हो करो धर्म कार्य में विलम्ब मत करो ॥ १४ ॥ तब वह सुभद्रा सार्थवाहिनी उन आर्जिका के पास श्रावक के बारह व्रत रूप धर्म अंगीकार किया फिर उन आर्जिका को वंदना नमस्कार कर विसर्जन किये ॥ १५ ॥ तब सुभद्रा श्रमणोपासिका हुई यावत् साधु साध्वी को प्रतिलाभती हुई विचरने लगी ॥ १६ ॥ तब सुभद्रा श्रमणोपासिका को एकदा आधी रात्रि व्यतीत हुवे कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय हुवा, यों निश्चय में भद्रा सार्थवाही के साथ विस्तीर्ण भोग भोगते विचरती हूं परंतु निश्चय मे बालक बालिका प्रसवी नहीं, इस लिये श्रेय है मुझे काल प्रभातकाल हुवे यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय हुवे, भद्र सार्थवाही को पूछकर सुव्रता आर्जिका के

देवाणुप्पिए समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ णो खलु कप्पति अम्ह एवं अट्ठकन्नेहिंविनिसामित्तए किं मगपुण उवदिसित्तएवा समायरित्तएवा अम्हण्णं देवाणुप्पिए णवरं विचित्त केवलिपन्नत्त धम्मं परिकहेमो ॥१३॥ तत्तेण सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ तओ अज्जाओ तिक्खुत्तो वंदति णमंसति एवं वयासी—सद्दहामिणं अज्जाओ! निग्गंथंपावयणं पत्तियामिणं अज्जाओ! णिग्गंथपावयणं, रोएमिणं अज्जाओ! निग्गंथपावयणं, एवमेव

तब वे आर्जिका सुभद्रा सार्थवाहिनी से यों बोली अहो देवाणुप्रिया! हमसाध्वी है निग्रंथनी है इर्या समीति यक्त यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी है इस लिये निश्चय से तुमने कही सो कथा कान से श्रवण करनी भी नहीं करती है, तो फिर उपदेश देना और करने की क्यों कहना ही क्या? अहो देवानुप्रिया! हम तेरे को केवली प्ररूपित धर्म कहेंगी ॥ १३ ॥ तब वह सुभद्रा सार्थ वाहिनी उन आर्जिका के पास धर्मोपदेश श्रवण कर हर्ष संतोष पाई उन आर्जिका को तीन वक्त वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी अहो आर्जिकाजी! मैंने निर्ग्रन्थ के प्रवचन का श्रद्धान किया, निर्ग्रन्थ प्रवचन की प्रतीत हुई निर्ग्रंथ प्रवचन ग्रहण करने की रुचि जगी आप कहती हो वैसा ही है आपके वचन अवितथ सत्य हैं मुझे श्रावक धर्म अंगीकार

अवितहमेयं सावगधम्म पडिवज्जए ? अहासुह देवाणुप्पिए ! मापडिबंधंकरेह ॥ १४ ॥ तत्तेण सा सुभद्दासत्थवाहीनी तासिं अज्जाण अतिय जाव पडिवज्जति, ततो अज्जाओ वंदइ नमंसइ पडिविसज्जाति ॥ १५ ॥ तत्तेण सासुभद्दा सत्थवा ही समणोवासीयाजाया जाव विहरति ॥ १६ ॥ तत्तेण तीसे सुभद्दाए समणो वासीयाए अण्णयाकयाइ पुव्वरत्ता काल समयंसी कुडंबजागरणाजागरमाणे अयमेया जाव समुपज्जित्था एवं खलु अहं भद्दण सात्थवाहेणर्द्धि विउलाइ जाव विहरामि नो चेवण अहं दारगंवा दारियंवा तंसेय खलु मम कल्लं पाउ जाव जलंत भद्दस्स

कराओ आर्जिका जीने कहा अहो देवानुप्रिया तुमारे को सुख हो वैसा करो धर्म कार्य में विलम्ब मत करो ॥ १४ ॥ तब वह सुभद्रा सार्थवाहिनी उन आर्जिका के पास श्रावक के बारह व्रत रूप धर्म अंगीकार किया फिर उन आर्जिका को वन्दना नमस्कार कर विसर्जन किये ॥ १५ ॥ तब सुभद्रा श्रमणोपासिका हुई यावत् साधु साध्वी को प्रतिलाभती हुई विचरने लगी ॥ १६ ॥ उस सुभद्रा श्रमणोपासिका को एकदा आधी रात्रि व्यतीत हुवे कुटम्ब जागरणा जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय हुवा, यों निश्चय में भद्रा सार्थवाही के साथ विस्तीर्ण भोग भोगते विचरती हूं परन्तु निश्चय मे बालक बालिका प्रसवी नहीं, इस लिये श्रेय है मुझ काल प्रात:काल हुवे यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय हुवे, भद्रा सार्थवाही को पूछकर सुव्रता आर्जिका के

देवाणुप्पिए समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारणीओ णो खलु कप्पति अम्हं एवं अट्ठस्स हिंयीनिमामित्तए किं मगपुण उवादिसित्तए वा समायरित्तए वा अम्हण देवाणुप्पिया तव चित्त कव लिपन्नत्त धम्म परिकहमो ॥ १३ ॥ तत्तेण सासुभद्दामत्थवाही ताओ अज्जाण अंतिए धम्मसोच्चा निसम हट्ठ तुट्ठ तओ अज्जाओतिक्खुत्तो वदति णमसति एवं वयासी—सद्दहामिण अज्जाओ! निग्गंथपावयणं, पत्तियामीणं अज्जाओ! णिग्गंथपावयण, रोएमिण अज्जाओ! निग्गंथपावयण, एवामेव

तब व आर्जिका सुभद्रासार्थवाहीनी से यों बोली अहो देवाणुप्रिया! हमसाध्वी है निर्ग्रन्थनी हैं इर्या समीति युक्त यावत गुप्तब्रह्मचारिणी हैं इस लिये निश्चय से तुमने कहा सो कथा कान से श्रवण करनी भी नहीं कल्पती है,ना फिर उपदेशना और करने की सो कहना ही क्या? अहो देवानुप्रिया! हम तेरे को केवलज्ञानी प्रणित धर्मोपदेश करेंगी ॥ १३ ॥ तब वह सुभद्रा सार्थवाहिनी उन आर्जिका के पास धर्मोपदेश श्रवण कर हर्ष संतोष पाइ उन आर्जिका को तीन वक्त वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी अहो आर्जिकाजी! मैंने निर्ग्रन्थ के प्रवचन का श्रद्धान किया, निर्ग्रन्थ प्रवचन की प्रतीत हुइ निर्ग्रन्थ प्रवचन ग्रहण करनेकी रुचिमेरी भावकहतो सा वैसही है भावक बचन भावितहोमय सत्य है मुझ श्रावकधर्म अंगीकार

अवितहमेयं सावगधम्म पडिवज्जए ? अहासुह देवाणुप्पिए ! मापडिबंधकरेह ॥ १४ ॥ तत्तेणं सा सुभद्दासत्थवाहिनी तासिं अज्जाणं अंतियं जाव पडिवज्जति, ततो अज्जाओ वंदइ नमंसइ पडिविसज्जति ॥ १५ ॥ तत्तेणं सासुभद्दा सत्थवाही समणोवासीयाजाया जाव विहरति ॥ १६ ॥ तएणं तीसे सुभद्दाए समणोवासीयाए अण्णयाकयाइ पुव्वरत्ता काल समयंसी कुडंबजागरणाजागरमाण अयमेया जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं भद्देणं सात्थवाहेणंसद्धिं विउलाइं जाव विहरामि नो चेवणं अहं दारगंवा दारियंवा तंसेयं खलु मम कल्लं पाउ जाव जलंते भद्दस्स

कराने वाली का जीवन क्या भावे? अनुराग तुमारे को सुख हो करो परन्तु धर्म कार्य में विलम्ब मत करो ॥ १४ ॥ तब वह सुभद्रा सार्थवाहिनी उन आर्जिका के पास श्रावक के बारह व्रत रूप धर्म अंगीकार किया फिर उन आर्जिका को वन्दना नमस्कार कर विसर्जन किये ॥ १५ ॥ तब सुभद्रा श्रमणोपासिका हुई यावत् साधु साध्वी को प्रतिलाभती हुई विचरने लगी ॥ १६ ॥ तब सुभद्रा श्रमणोपासिका को एकदा अर्ध रात्रि व्यतीत हुवे कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय हुए, यों निश्चय मैं भद्रा सार्थवाही के साथ विस्तीर्ण भोग भोगती विचरती हूं परन्तु निश्चय मैं पालक बालिका जनी नहीं, इस लिए श्रेय है मुझ कल प्रातःकाल हुवे यावत् सूर्योदय हुवे, भद्र सार्थवाही को पूछकर सुव्रता आर्जिका के

मीगिइ ततोपच्छा भुतभागाइं सुव्वयाण अज्जण जाव पव्वइहिस ॥ १८ ॥ तत्तेण साभुभद्दा समणोवासिया भद्दस्स एयमट्ठ णा अढाति णो परिजाणाति दुच्चपि तच्चपि भद्दस्स एव वयासी—इच्छामिण दवाणुप्पिया ! तुब्भेहि अब्भणुणाय समाणी जाव पव्वइत्तए ॥ १९ ॥ तत्तेण स भद्दस जहे नोसचाएति बहुहिं आघवणाहिय पन्नवणाहिय सन्नवणाहिय विन्नावणाहिय आघवीतएवा जाव विन्नविचएवा ताहे अकामएच्चव सुभद्दा निक्खमण अणुमन्नित्था ॥ २० ॥ तत्तेण से भद्दसत्थवाहे विउल असण पाण खाईम साइम जाव उवक्खडावेति मित्तनाइ तओपच्छा भोयण वेलाए

सधना भार्गिका के पास मराउर्ग लना ॥ १८ ॥ तब सुभद्रा श्रावणापासिका भद्रासार्थवाहि के उक्त कथन का आदर नहीं किया अच्छा भी नहीं जाना दावक तीनवक्त भद्रासार्थवाहि स यों कहने लगी, भद्रा देवानुप्रिय ! मैं चहाती हू तुमारी आज्ञा होता यावत् दीक्षा अंगीकार करू ॥ १९ ॥ तब व भद्राथ पा । सुभद्रा को भगर में रखना समथ नहीं हुए बहुत प्रकार मान सन्मानकर यावत् साधु पना का कठिनता की मरूपना कर धनादि के लालचकर माता उत्पातक विनतीकर समझाने न यावत् रखनक नहीं, तब उन अभिलाषा रहित जान सुभद्रा का दीक्षा उत्सव करन की आज्ञादी ॥ २० ॥ तब वह भदसाथ वाहीन विहीर्ण भशन पानी खादिम स्वादिम चारों प्रकार का आहार तैयार कराकर मित्र ज्ञाती को

आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए अज्जाभवित्ता आगाराओ जाव पव्वइत्तए, एवं सपेहेति २ त्ता कलं जाव सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव भद्दसत्थवाहे तेणेव उवागए करयल जाव एवं वयासी एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुम्हेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं विउलाइं भोगभोगाइं जाव विहरामि नो चेव णं दारगं वा दारियं वा पयासि तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए ॥ १७ ॥ तएणं से भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी–माणं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणिं मुंडा जाव पव्वयाहिं भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोग

पास आर्जिका हो मूं गृहस्थपना छोडकर प्रव्रजित बनूं इसप्रकार विचार किया, विचारकर प्रातःकाल होते सूर्योदय होने पर भद्र सार्थवाही के पास आई आकर हाथ जोडकर यों कहने लगी—यों निश्चय अहो देवानुप्रिय ! मैं तुम्हारे साथ बहुत वर्ष तक विस्तीर्ण भोगोपभोग भोगती विचरती हूं परन्तु एक भी बालक बालिका प्रसवी नहीं इस लिये अहो देवानुप्रिय ! तुमारी आज्ञा हो तो सुव्रता आर्जिका के पास दीक्षा लेना चाहती हूं ॥ १७ ॥ तब वह भद्र सार्थवाही सुभद्रा सार्थवाहिनी से यों बोला—अहो देवानुप्रिय ! इस वक्त तुम दीक्षा मत लेवो परन्तु मेरे साथ विस्तीर्ण भोगोपभोग भोगव कर फिर भुक्त भोगी होकर

मीगेइ ततोपच्छा भुतभोगाई सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइहिसि ॥ १८ ॥ तत्तेणं सा सुभद्दा समणोवासिया भद्दस्स एयमट्ठं णो अढाति णो परिजाणाति दुच्चपि तच्चपि भद्दस्स एवं वयासी—इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुणाय समाणी जाव पव्वइत्तए ॥ १९ ॥ तत्तेणं से भद्दे जाहे नोसचाएति बहुहिं आघवणाहिय पन्नवणाहिय सन्नवणाहिय विन्नवणाहिय आघवीतएवा जाव विन्नवित्तएवा ताहे अकामएचेव सुभद्दा निक्खमणं अणुमन्नित्था ॥ २० ॥ तत्तेणं से भद्दसत्थवाहे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं जाव उवक्खडावेति मित्तनाइ तओपच्छा भोयणवेलाए

श्रमणी आर्जिका के पास प्रव्रज्या लूंगी ॥ १८ ॥ तब सुभद्रा श्रमणोपासिका भद्रसार्थवाहि के उक्त कथन का आदर नहीं किया अच्छा भी नहीं जाना दोवक्त तीनवक्त भद्रसार्थवाहि से यों कहने लगी, अहो देवानुप्रिय ! मैं चहाती हूं तुमारी आज्ञा होतो यावत् दीक्षा अंगीकार करूं ॥ १९ ॥ तब वह भद्रसार्थवाही सुभद्रा को संसार में रखने समर्थ नहीं हुए बहुत प्रकार मान सन्मानकर यावत् साधु पना की कठिनता की प्ररूपना कर भगादि के लालचकर माहा उत्पातक विपरीतकर समझाने न पाये समझी नहीं, तब उस अभिलाषा रहित जान सुभद्रा को दीक्षा धारन करने की आज्ञा दी ॥ २० ॥ तब वह भद्रसार्थ वाहिन विस्तीर्ण अशन पानी खादिम स्वादिम चारों प्रकार का आहार वैगरह कराकर मित्र ज्ञाती को,

जाव मित्तनाति सक्कारेति सम्माणेत्ति २ सा सुभद्दे सत्थवाहिं ण्हाय जाव पायच्छित्त सव्वालंकार विभूसिय पुरिससहस्स वाहिणिसीय दुरुहेति ॥ २१ ॥ ततेण सासुभद्दा समित्तनाति जाव सबंधिपरिवुडा जाव सव्विड्ढिए जाव रवेण वाणारसीणयरिं मज्झमज्झेण जेणव सुव्वयाण अज्जाण उवस्सएतेणेव उवागच्छ २ त्ता, पुरिससहस्स वाहिणि सीयठवेति सुभद्दसत्थवाहिं सीयाओ पच्चोरुहेति ॥ २२ ॥ ततेण से भद्दे सात्थवाहे सुभद्दसत्थवाही पुरओकाओ जेणव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ २

भोजनकर भोजनकरा कर यावत् मित्र ज्ञाती का सत्कार सन्मानकर सुभद्रा को स्नान कराया यावत् शुद्ध पवित्र कर सर्व वस्त्रालंकार भूषणालंकार कर अलङ्कृत की विभूषित की एक हजार पुरुष उठावे ऐसी शिबिका में बैठाइ ॥ २१ ॥ तब वह सुभद्रा मित्र ज्ञाती यावत् सम्बन्धीयों के परिवार से परिवरी हुई यावत् सब ऋद्धि यावत् वादित्र के नादकर बानारसी नगरी के मध्य में हो जहां सुव्रता आर्यिका का उपाश्रय था वहां आइ, हजार पुरुष उठावे ऐसी शिविका को स्थापन की सुभद्रासार्थ वाहिनी शिविका से नीचे उतरी ॥ २२ ॥ तब सार्थवाही सुभद्रा सार्थ वाहिनी को अपने आगे करके जहां सुव्रताआर्यिका थी वहां आकर सुव्रता आर्यिका को वन्दना नमस्कार किया, यों कहने लगा यों निश्चय अहो देवानुप्रिया

२ एसा सुव्वयाओ अज्जाओ वदति नमसति वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! सुभद्दासत्थवाहीणी ममभारिया इट्ठा कता जाव माणत्ताखिया पिविया सभिया सन्निवाया विविहारोयातका फुसति, एसण देवाणुप्पिया ! ससारभीउव्वगामीया जामणमरणाण देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वयाति, तएण त अह देवाणुप्पियाण सीसणिभिक्ख दलयामि पडिछ तुम देवाणुप्पिया ! सिसणिभिक्ख ? अहासुह देवाणुप्पिया ! मापडिवध ॥ २२ ॥ तत्तेणसा सुभद्दा सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्तासमाणी हट्ठतुट्ठा सयमेव आभरणमल्लालकार उमूइ २ त्ता सयमेव पचमुट्ठिय

सुभद्रा सार्थवाहीनी मेरी भार्या मुझे इष्टकारी कान्तकारी यावत् रत्न पट वादी पित सर्पापादादि विविध रोग कर स्पर्शे इस प्रकार इस की रक्षा की अहो देवानुप्रिया ! आज यह ससार के भय से उद्वेगपाइ है, जन्म जरा मृत्यु के दुःख से डरी है, इसलिये देवानुप्रिया के पास मुंडित हो यावत् दीक्षा लेना चाहती है, इसलिए मैं देवानुप्रिया को शिष्यनीरूप भिक्षादेता हूं आप प्रतिच्छो-ग्रहण करो ? अहो देवानुप्रिया ! यह शिष्यनीरूप भिक्षा (आर्जिका जीने स्वीकारदिया) जैसे सुख हो वैसे करो धर्म कार्य में प्रतिबंध—विलम्ब मतकरो । ॥ २२ ॥ तब वह सुभद्रा सुव्रता आर्जिकाजी का उक्त वचन श्रवण कर हर्ष सतोषपाइ, स्वयमेव अपने हाथ से सब भूषण आभरण अलंकार उतारे, स्वयमेव पांचमुष्टि लोच किया, कर सुव्रता

जाव मित्तनाति सक्कारेति सम्माणेत्ति २ त्ता सुभद्दं सत्थवाहिं ण्हाय जाव पायच्छित्त सव्वालंकार विभूसिय पुरिससहस्स वाहिणिसीय दुरुहिंति ॥ २१ ॥ तएणं सासुभद्दा समित्तनाति जाव सबंधिसपरिवुडा जाव सव्विड्ढीए जाव रवेण वाणारसीणयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छ २ त्ता पुरिससहस्स वाहिणि सीयठवेति सुभद्दसत्थवाहिं सीयाओ पच्चोरुहेति ॥ २२ ॥ तएणं से भद्दे सत्थवाहे सुभद्दसत्थवाही पुरओकाओ जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ २

बोलाकर भोजनकरा कर यावत् मित्र ज्ञाती का सत्कार सन्मानकर सुभद्रा को स्नान कराया यावत् शुद्ध पवित्र कर सर्व वस्त्रालंकार भूषणालंकार कर अलंकृत की विभूषित की एक हजार पुरुष उठावे ऐसी शिबिका में बैठाइ ॥ २१ ॥ तब वह सुभद्रा मित्र ज्ञाती यावत् सम्बंधीयों के परिवार से परिवरी हुई यावत् सब ऋद्धि यावत् वादित्र के नादकर बानारसी नगरी के मध्य में हो जहां सुव्रता आर्यिका का उपाश्रय था तहां आइ, हजार पुरुष उठावे ऐसी शिबिका का स्थापन की सुभद्रासार्थ वाहिनी शिबिका से नीचे उतरीत २२ ॥ तब वहभद्रसार्थवाही सुभद्रा सार्थ वाहिनी को अपने आग करके जहां सुव्रताआर्यिका थी वहां आकर सुव्रता आर्यिका को वंदना नमस्कार किया, यों कहने लगा यों निश्चय अहो देवानुप्रिया '

बहुजणस्स दारएत्रा दारिएवा कुमारेय कुमारियाएय डिंभयाओ यडिंभरियाओ अप्पेगइयओ अब्भिगइ अप्पेगइयाओ उबट्टेति, एत्र अप्पेगइया फासुएपाणएण ण्हावेति, अप्पेगइया पाएरणति अप्पेगइया उट्ठेरणति, अप्पेगइया अत्थीर्सि अञ्जेति, अप्पगइयाओ उसुप्पकराति, अप्पेगइया तिलएकरेति, अप्पेगइया दिंगिचलकराति, अप्पेगइआपंतियाओकरेति अप्पेगइयाओ छिञ्जाइकरति, अप्पेगइया रनएणसमालभइ, अप्पेगइया चुन्नएण समालभइ, अप्पेगइया खेलणगाइदलयति, अप्पगइयाखजलगाइदलयति अप्पगइया खीरभोमण भुञ्जावेति,

चूर्णचूर्णादी लगाने लगी, सीखाने से सिखानेलगी, खाजे पुडी सिलाने लगी, सीरमलाइ सिलानेलगी, इत्यादि वस्तुओं बहुत स लोगों के घर स गवेसना [मांग] करके लाने लगी, बहुत लागों के छोटे लडके लडकी कुमर (८ वर्ष के) कुमारिका डिंभक डिंभकी (आठ वर्ष के कमीके) कितनेक का तेलादि लगावे, कितनेक के पीठीआदि उगटना करे, प्रेस ही फ़ासुक पानी कर स्नान करावे, कितनक के पांव रंगे, कितनेक के होठ रंगे, कितनेक की आखों में काजल अंजे, कितनक को गोदी में शयन करावे, कितनक के तिलक करे, कितनेक पर सूर्य चक्र करे, कितनेक को पंक्ति मेंच बैठावे, कितनेक को अलग २ बैठावे, कितनक के इत्वालादिण लगावे, कितनेक के अबीरादिचूर्ण लगावे, कितनेक को खिलोने देवे, कितनक को खारे खाजे देवे, कितनेक को दूध पीलावे,

तए णं तीसे २ सा अन्नया कयाइं अज्जाओ तत्थ उवागच्छइ २ त्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदाइ नमसइ २ त्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते! लोए पलित्ते णं भंते! लोए जहा देवाणंदा तहा पव्वइया जाव अज्जा जाया जाव गुत्तबंभयारिणी॥२४॥ तएणं सा सुभद्दा अज्जा अन्नया कयाइं बहुजणस्स चेडरूवे संमुच्छिया जाव अज्झोववन्ना अब्भंगणं च उव्वट्टणं च फासुयपाणं च अलत्तगं च कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेल्लगाणि य खज्जल्लगाणि य खीरं च पुप्फाणि य गवेसति २ त्ता

भाविता थी तदा भाइ सुव्रता आर्यिकाजी को तीन वक्त उठबैठ दोनों हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिरा वंदना नमस्कार की वंदना नमस्कार कर यों बोली—अहो भगवन्! इस लोक में संयोग वियोग कर प्रदीप्त बन रहा है यों भगवती सूत्र में देवानंद ब्राह्मणी ने जिस प्रकार दीक्षा धारण की वैसे ही सुभद्रा ने भी दीक्षा धारण की यावत् आर्यिका हुई ईर्या समिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी बनी॥२४॥ तब वह सुभद्रा आर्यिका अन्यदा किसी वक्त बहुत लोगों के छोटे २ बालकों बालकी में मूर्छित बनी यावत् अध्योपन्न हो गई, उन सब का उन बालक बालकों की बाधादि का अवलोकन करने लगी, छोहारी का वाटना करन लगी, प्रासुक अचित्त पानी से स्नान कराने लगी, अलीता के रंग से हाथ पांव रंगने लगी, सुपारी आदि देने लगी, आंखों में अंजन आंजने लगी, शरीर प्रमुख पर्यन्त लगाने लगी, शरीरादि

देवाणुप्पिए ! बहुजणस्स चेडरूवेसुमुच्छिया जाव अज्झोववन्ना अभंगण जाव नत्तुपि वासच पच्चणुभवमाणी विहराति, तन्न तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्सठाणस्स आलोएहिं जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहिं ॥ २६ ॥ ततेण सा सुभद्दाअज्जा सुव्वयाण अज्जाण एयमट्ठं नो अढाति नो परिजाणति, अणाढायमाणी अपरिजाणेमाणी विहराति॥ २७ ॥ ततेण ताओ समणीओ निग्गंथीओ सुभद्दअज्जं हीलंति निंदंति खिंसंति गरहंति अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारंति ॥ २८ ॥ तएतेणं तीसे सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलेज्जमाणी जाव अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारिजमाणीए अपमेयारूवे

अभ्योपन-पूर्वक यावत् अर्भगन करती हो यावत् अपनी पिपासा को पोषती हो मत्यक्षानुभव लेती विचरती हो इसलिए अहो देवानुप्रिया! तुम इस स्थानक की आलोचना निंदना करो यावत् प्रायश्चित्त अंगीकार करो ॥२६॥तब वह सुभद्रा आर्यिका का वचन सुभद्रा आर्यिकाने आदर नहीं किया भला नहीं माना पहिले की तरह ही वर्तने लगी॥२७॥तब वे साध्वी निग्रन्थनी सुभद्रा आर्यिका की हीलना निंदना करने लगी, खिझाने लगी गरहण करने लगी, वारम्वार उस कार्य से हटकने लगी, मना करने लगी ॥ २८ ॥तब वह सुभद्रा आर्यिका साध्वी निग्रन्थनी से हीलना पाई हुई यावत् वारम्वार उस कार्य करने से हटकाई हुई इस प्रकार विचार

अप्पगइया पुत्ताणि आसुव्रति, अप्पगइयाओ पादसुठवति अप्पेगइयाओ अघसुठवति एवं उरुनु उच्छगसु कडिए पीठ उदरसि अथ सीस करतलपुडेणगहाय हलुउलमाणी२ आगयमाणी २ परिहायमाणी २ पुत्तपिवासय धूयपिवासय नत्तुपिवासय नतिपिवासय पचणुब्भवमाणी विहरति ॥ २५ ॥ ततण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सुभद्दाअज्ज एवं वयासी अम्हेण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पति धातिकम्म करीत्तए ॥ सुभद्दाण

कितनेक का फूल पहनावे, कितनेक को पांव पर बैठावे, कितनक को जंघापर बैठावे, कितनक का साथी पर बैठावे, कितनेक को कमर पर बैठावे, कितनेक को पृष्ट पर बैठावे, कितनेक का स्तन पर बैठावे, कितनक का स्कन्ध पर बैठावे, कितनक का सिरपर बैठावे, कितनक को हथेली पर बैठावे, कितनक का हलरावा हुलरावे, गीत गावे, अन्य के पास गीत गवावे, इस प्रकार पुत्र की पिपासी, पुत्री की पिपासी नातु की पिपासी, पोते की पीपासी, इन का प्रत्यक्षानुभव करती हुई विचरने लगी ॥ २८ ॥ तब वह सुव्रता आर्यिका सुभद्रा आर्यिका से ऐसा बोली अहो देवानुप्रिया ! अपन साध्वी हैं, इर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारनी है इसलिये निश्चय अपने को धात्रीकर्म (बालकों का खिलाने का कर्म) करना कल्पता नहीं है अहो देवानुप्रिया ! तुम बहुत लोगों के लडके लडकीयों में मूर्च्छित हो रही हो यावत

देवाणुप्पिए ! बहुजणस्स चेडरूवेसुमुच्छिया जाव अज्झोववन्ना अभंगण जाव नत्तुपि वासत्त पच्चणुभवमाणी विहराति तमं तुम देवाणुप्पिए ! एयस्सठाणस्स आलोएहिं जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहिं ॥ २६ ॥ ततेण सा सुभद्दाअज्जा सुव्वयाण अज्जाण एयमट्ठ नो अढति नो परिजाणति, अणाढायमाणी अपरिजाणेमाणी विहरति॥ २७ ॥ ततेण ताओ समणीओ णिग्गथीओ सुभद्दअज्ज हीलति निंदति खिसति गरहति अभिक्खण २ एयमट्ठ निवाराति ॥ २८ ॥ ततेण तीसे सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गथीहिं हीलेजमाणी जाव अभिक्खणं २ एयमट्ठ निवारिजमाणीए अयमेयारूवे

अभ्योपन-मूर्छित बन ममत्व करती हो यावत् अपनी पिपासा को पोषती हो प्रत्यक्षानुभव लेती विचरती हो इसलिये अहो देवानुप्रिया! तुम इस स्थानक की आलोचना निन्दाकरो यावत् प्रायश्चित्त अंगीकार करो ॥ २६ ॥ तब वह सुभद्रा आर्यिका का वचन सुभद्रा आर्यिकाने आदर नहीं किया भला नहीं माना पहिले की तरह ही प्रवर्तने लगी॥ २७॥ तब वे साध्वी निग्रन्थनी सुभद्रा आर्यिका की हीलना निन्दा करनेलगी, खिंसाने लगी गरहण करने लगी, वारम्वार उस कार्य से हटकने लगी, मना करने लगी ॥ २८ ॥ तब वह सुभद्रा आर्यिका साध्वी निग्रन्थनी से हीलना पाई हुई यावत् वारम्वार उस कार्य करने से हटकाई हुई इस प्रकार विचार

अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था जयाणं अहं अगारवासं वसामि तयाणं अहं अप्पवसा, जप्पभियं चणं अहं मुंडा भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभियं चणं अहं परवसा, पुव्विंच समणाओ निग्गंथीओ आढांति परिजाणंति इयाणिं नो आढाति नो परिजाणंति तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिणिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए एवं संपेहेइ २त्ता कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ २त्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥ २१ ॥ तत्तेणं सा भद्दा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमति बहुजणस्स बहुरूवे समुच्छिया जाव

करने लगी—जब मैं गृहस्थावास में रहती थी तब तो स्वच्छंदचारी थी और जब से मुण्डित हो गृहस्थपना छोड़ अणगारपना अंगीकार किया है तब से मैं परवश पड़गई हूं, प्रथम तो मुझ साध्वीयों निग्रन्थनीयों आदर करती थी अच्छी जानती थी अब न आदर करती है न अच्छा मानती है इस लिये मुझे कल प्रातःकाल होते सुव्रता आर्यिका के पास से निकलकर एक अलग २ उपाश्रय याचकर उस में रहकर इच्छा चार प्रवर्तना श्रेय है ऐसा विचार कर प्रात होते हुए सुव्रता आर्यिका के पास से निकलकर एक अलग उपाश्रय ग्रहण कर इच्छा चार विचरने लगी ॥ २० ॥ तब वह सुभद्रा किसी की हटक बिना किसी भी निवारण करनेवाले बिना स्वच्छंदा अपनी इच्छा प्रमाण बहुत लोगों के बालकों में मूर्च्छित

नातु पिवासम पच्चाणुभवमाणी विहरति ॥ ३० ॥ तत्तेण सासुभद्दा अज्जा पासत्था पासत्थ विहारी एव उसन्ना उसन्नविहारि, कुसीला कुसालीविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी अहछंदा, अहछंदा विहारी बहुर्द्विवासाइं सामन्नपरियाग पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीसभत्ताइं अणसाए छेदित्ता तस्सठाणस्स अणालोइय अप्पडिकंता कालमास कालंकिच्चा सोहम्मेकप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदुसचरिया अगुलस्स असंखेज्ज भागेमेतिएठगाहणाए बहुपुत्तीयदेवीताए उववन्ना ॥ ३१ ॥ तत्तेण सा बहुपुत्तीयादेवी अहुणोववणमित्तासमाणी पचविहाए

हुई पावत् नाद की पिपासी पनी हुई मत्यक्षानुभव करती विचरने लगी ॥ ३० ॥ तब वह सुभद्रा आर्यिका पासत्थ शिथिलाचारनी हुई, शिथिलाचार में विचरन लगी, संयम पालन मे कायर बनी यों उसन्न-कायर विचार करनेवाली बनी कुशीलनी-कुगचारनी बनी दुराचारों में विहार करने लगी संसिक्त (ज्ञानादि की विराधना करनेवाली) बनी, संसक्त विहारी बनी स्वच्छंदी स्वच्छंदाचारी बनी, स्वच्छंद विहारनी बनी इस प्रकार बहुत वर्ष संयम पालकर, आध मासिक की संलेखना कर तीस भक्त अनशन छेदा उक्त दोष सेवन किया जिस की आलोचना निन्दना बिना किये काल के अवसर में काल पूर्ण कर प्रथम सौधर्म देवलोक के बहुपुत्रीक विमान में उत्पन्न हुई ॥ ३१ ॥ तब बहुपुत्रीका देवी तत्काल उत्पन्न हुई पांच

चत्तारिपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ३४ ॥ बहुपुत्तियाणं भंते! देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिंगच्छिहिंति कहिंउववज्जिहिंति? गोयमा! इहेव जंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे विंझगिरिपायमूले विभेलनामं सन्निवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति ॥ तत्तेणं तीसे दारीयाए अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वितिक्कंते जाव बारसहिं दिवसे अयमेयारूवं नामधिज्जं करंति होउणं अम्हं इमिसे दारियाए नामधिज्जं सोमा ॥ ३५ ॥ ततेणं सा सोमा उम्मुक्कबालभावे विन्नाय-परिणायमित्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेणय जोव्वणेणय लावण्णेणय उक्किट्ठ सरीरए जाव

स्थिति कही है ॥ ३४ ॥ अहो भगवन्! बहुपुत्रिकादेवी उस देवलोक से आयुष्य का भव का स्थिति का क्षय करके अंतर रहित चवकर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा? अहो गौतम! इस ही जंबूद्वीप नामक द्वीप के भरतक्षेत्र के विन्ध्याचल पर्वत के मूल में विभेलनामक सन्निवेश में ब्राह्मण के कुल में पुत्रीपने उत्पन्न होगा वहां उस के माता पिता इग्यारवा दिन व्यतिक्रान्त हुए यावत् बारवे दिन इस प्रकार का नाम स्थापन करेंगे हमारी इस पुत्री का नाम 'सोमा' होवो ॥ ३५ ॥ तब वह सोमा बाल भाव से मुक्त होकर यौवन अवस्था को प्राप्त होगी, रूप यौवन लावण्यता कर उत्कृष्ट शरीर की धारक होगी ॥ ३६ ॥

अविरसति ॥ २६ ॥ तएण त सामादारिये अम्मापियरो उमुक्कबालभाव विन्नाय जोव्वणगमणुपत्त पडिकुविएण सुक्कण पडिरूवएण णियग भाइणेज्ज रट्ठकूडस्स भारियत्ताए दलयमति ॥ २७ ॥ साण ता भारिया अविरमति इट्ठा कता जाव भंडकरडग समाणा तेलकेलाइवा सुसगोविया चेलपेलाइवा, सुसपारिहिता रयणकर डग समाणाउवीव सुसरक्खिया सुसगोविता मागसिय जाव विविहा-रोगायका फुसतु ॥ २८ ॥ ततण सा सोमा माहणी रट्ठकुडेणसद्धि विउलाइ भोग भोगाइ भुजमाणी सवच्छर जुयलग पयायमाणी सोलसएहिं सवच्छरहिं बत्तीस

तब उस सोमा पुत्री के मात पिता सोमा को यौवन अवस्था प्राप्त हुई देखकर उस का जो शुल्क (मूल्य) योग्य था वह देकर अतिरूप सुन्दराकार अपना भानेज (बहन का पुत्र) 'राष्ट्रकुट' नामक को भार्यापने देवेंगे ॥ २७ ॥ उस राष्ट्रकुट की वह भार्या होगी, इष्टकारी कान्तकारी यावत् रत्नों के करंडिये समान, तैल के सीसे समान, अच्छी तरह सगोपकर रखेंगे, सुंदर वस्त्र युक्त, अच्छे भोगोंयुक्त, रत्नों के करंड के समान अच्छी तरह रक्षण अच्छी तरह गोपने शीततापस संरक्षण करते यावत् विविध प्रकार के रोगादि संरक्षण करते रहेंगे ॥ २८ ॥ तब वह सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकुट के साथ विस्तीर्ण भोगोपभोग भोगवती विचरने लगेगी प्रतिवर्ष एक युगल (जोडा) बालक का प्रसवने लगेगी यों सोलह

चेडगरूवे पयाय ॥२१॥ ततेणं सा सोमा माहणी तहिं बहुहिं दारएहिय दारियाहिय कुमारहिं कुमारीयाहिय डिंभएहिय डिंभयाहिय, अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहिं अप्पेगइएहिय थणियएहिं अप्पगएहिं अप्पगएहिं पीहगपाएहिं अप्पगएहिं परंगणेहिं, अप्पगएहिं कममाणहिं, अप्पगएहिं पखालणएहिं अप्पगएहिं थणगमग्गमाणेहिं, अप्पेगएहिं खीरमग्ग माणेहिं अप्पेगएहिं तल्लमग्गमाणेहिं, अप्पगइएहिं खिलणय मग्गमाणेहिं अप्पेगएहिं खजभग्गमाणेहिं अप्पगएकूरमग्गमाणेहिं, अप्पगएहिं पाणियमग्गमाणहिं हसमाणेहिं रूसमा अक्कोसमाणेहिं, अकुसमाणेहिं हणमाणेहिं, हममाणहिं, विपलायमाणेहिं, अनुगममाणेहिं, रोवमाणेहिं कंदमाणहिं, विलवमाणहिं, कुवमाणेहिं, उकुवमाणहिं निद्धायमाणेहिं पलवमाणेहिं

वर्ष में बत्तीस बालक प्रसवती ॥ २१ ॥ तब वह सोमा ब्राह्मणी उन बहुत बालक बालिका कुमार कुमारिका डिंभ डिंभिका को कितनेक को स्तनपान करती-दूध पिलाती, कितनेक को स्तनसे लगाती, कितनेक को पत्नीयों चढाती, एकेक का हाथ पकड चलाती कितनेक को खोले में खिलाती, कितनेक स्तन पान करती, कितनेक गोमयी का दूध मांगे कितनेक घृत मांगे, कितनेक तेल मांगे, कितनेक खिलान मांगे, कितनेक खाने मांगे, कितनेक चावल मांगे, कितनेक पानी मांगे, कितनेक हंसे, कितनेक रोवे, कितनेक आक्रोश वचन बोले, आपस में वस्तु छिनावे, आपस में मार मार, कितनेक रुठी भगार करे, कितनेक भग जावे, कितनेक जाप करे, कितनेक पीछ २ भावे, कितनेक वस्त्र खींचे, कितनेक विम-

वमाणीहिं छहमाणीहिं मुत्तमाणीहिं मुत्तपुरीसवमिय सुलित्ता वलित्ता मियल वसण पुव्वड जाव असुयबीभत्सा परमदुग्गंधा नो संचाएति रट्ठकुडेणसद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए ॥ ४० ॥ ततेणं तीसे सोमाए माहणीए अन्नयाकयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियजागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं इमेहिं बहूहिं दारगाहिय जाव डिंभीयाहिय अप्पेगइएहिं उत्ताणसिज्जएहिं जाव अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं दुज्जम्मएहिं दुज्जाएहिं विप्पहिय भग्गेहिं

विहार करें, कितनेक निद्रा करे, कितनेक वमन करे, कितनेक दस्त जावें, कितनेक मूते, कितनेक वस्त्र में मूते, विष्टा करें मूत्र विष्टा कर शरीर लिप्त होवे कितनेक के पोतड़े धोवे, यावत् इस अशुची से विकल बनी हुई परम दुर्गंधी बनी हुई राष्ट्रकूट ठाकुरके साथ भोगोपभोग विचरने को असमर्थ बनी ॥ ४० ॥ तब उस सोमा ब्राह्मणी को अन्यदा किसी वक्त आधीरात्रि व्यतीत होने से कुटुम्ब जागरणा जागती हुई इस प्रकार का अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवा यों निश्चय में इन बहुत बालक बालकी के परिवार करके यावत् डिंभकडिंभकी के परिवार कर कितनेक को स्तनपान कराती यावत् कितनेक मूतते हुवे हैं इस लिये दुष्ट मेरा दुष्ट कर्म मेरे सदैव गर्भ के भार से भारभूत बनीहुई रहती हूं सदैव बालकों के भरण पोषण में पचती हुई एक पल मात्र भी मुझे चैन नहीं है, मैं सदैव मूत्रकर विष्टाकर भरीहुई रहती हूं

एगप्पहारनेडिशहिं जेण मुत्तपुरिस वमिय सुलेछाशलिता जाव परमबुभिमणधा नो सचाएमि रट्ठकुडेणसद्धिं जाव भुंजमाणाविहरित्तए तधन्नाओण ताओ अम्मयाओ जाव जीवियफले जाओण मज्झाओ आत्तियाउरियाओ जाणुक्कपरमायाओ सुरभिसुगंध गंधियाओ विउलाइ माणुसगाइ भोगभोगाइ भुंजमाणीओ विहरति अहं अधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना नो सचाएमि रट्ठकुडेणसद्धिं विउलाइ जाव विहरित्तए ॥ ४१ ॥ तेण कालेण तेण समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ इरियासमियाओ जाव बहुहिं परिवारियाओ पुव्वाणुपुव्विं चरेमाणे जेणेव बमले सन्निवेसे तणेव उवागच्छइ २ ता अहापडिरूव

यावत् मेरा शरीर वमन युक्त मल दुर्गंध वाला है जिस कर मैं राष्ट्रकुट के साथ यावत् भोगोपभोग भोगवती विचरने समर्थ नहीं हूं इस लिये धन्य है उस माता को उस ही का जन्म जीवित फल सफल है कि जो बंध्या है जिस के कभी बालक उत्पन्न नहीं होता है जो फक्त अपने पति के प्रेम की भागी है सदैव सुगंधी सुरभागेभी वस्त्र भूषणों से सजी हुई रहती है, अपने पति के साथ विस्तीर्ण मनुष्य-सम्बन्धी भोगोपभोग भोगवती हुई विचरती है. मैं अधन्य हूं अपुन्य हूं मैंने पूर्व जन्म में पुण्य नहीं किये हैं क्योंकि राष्ट्रकुट के साथ विस्तीर्ण भोग भोगवती विचरने समर्थ नहीं हूं ॥ ४१ ॥ उस काल उस समय में सुव्रता नामक आर्यिका इर्यासमिति युक्त यावत् बहुत परिवार से परिवरी हुई पूर्वानुपूर्व चलती हुई जहां बमल सन्निवेश

बहुगमणाहिं छरमाणहिं मुत्तमाणहिं मुत्तपुरिसरवामिय सुलत्ता बलिता मियल बलग पुष्वड जाव अपुयत्तीमच्छा परमदुगधा ना भचाएति रट्ठकुडेणसद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरित्तए ॥ ४० ॥ ततण तीसे सामाए माहणीए अन्नयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुबजागरियजागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था एव खलु अह इमाह बहूहिं दारगाहिय जाव डिंभीयाहिय अप्पेगइएहिं उत्ताणसिज्जएहिं जाव अप्पेगइएहिं मुत्तमाणहिं दुज्जम्मएहिं दुज्जएहिं पिण्णाहिय मरेहिं

विचार करें, कितनेक निद्रा करे कितनेक वमन करें, कितनेक दहन मांगें, कितनेक मूते, कितनेक वस्त्र में मूत, विष्टा करें मूत्र विष्टा कर शरीर खरिंट होवे कितनेक के पोतड़े धोवे, यावत् इस अशुची से विभत्स बनी हुई परम दुर्गधी बनी हुई राष्ट्रकूट ठाकुरके साथ भोगोपभोग विचरने को असमर्थ बनी ॥ ४० ॥ तब उस सोमा ब्राह्मणी को अन्यदा किसी वक्त आधीरात्रि व्यतीत होने से कुटुम्ब जागरणा जागती हुई इस प्रकार का अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवा यों निश्चय में इन बहुत बालक बालकी के परिवार करके यावत् डिम्भडिम्भकी के परिवार कर कितनेक को स्तनपान कराती यावत् कितनेक मूतते हुवे हैं इस लिये दुष्ट जन्म मेरा दुष्ट कर्म मेरे सदैव मर्म के मार से भारभूत बनीहुई रहती हुं सदैव बालकों के भरण पोषण में व्यग्र हुई एक पल मात्र भी मुझे चैन नहीं है, मैं सदैव मूतकर विष्टाकर भरीहुई रहती हूं

एगप्पहारवडियाहिं - जेण मुत्तपुरिस वमिय- सुलेचावलिसा जाव परमदुब्भिगंधो या समत्थए।मि रट्ठकूडेणसद्धिं जाव भुंजमाणाविहरित्तए तधन्नाओण ताओ अम्मयाओ जाव जीवियफले आओण नज्झाओ आवियाउरियाओ जाणुकपरमायाओ सुरभिसुगंध गंधियाओ विउलाइ माणुसगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति अहं अधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना नो समत्थएमि रट्ठकूडेणसद्धिं विउलाइ जाव विहरित्तए ॥४१॥ तण कालण तेणं समएणं सुव्वयाओ णाम अज्जाओ इरियासमियाओ जाव बहुहिं परिवारि-याओ पुव्वाणुपुव्विं चरेमाणे जेणेव वभेलै सन्निवेसे तणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूव

यावत् मेरा शरीर वक्र मल दुर्गंध मारत है जिस कर मैं राष्ट्रकुट के साथ यावत भोगोपभोग भोगवती विचरने समर्थ नहीं हूं इस लिये धन्य है उस माता को उस ही का जन्म जीवित फल सफल है कि जो वांझ है जिस के कमी बालक उत्पन्न नहीं होता है जो फक्त अपने पुत्र के कौन की माता है सदैव सगधी सुरभीगंधों वस्त्र भूषणों से सजी हुई रहती है, अपने पति के साथ विस्तीर्ण मनुष्य-सम्बन्धी भोगोपभोग भोगवती हुई विचरती है. मैं अधन्य हूं अपुन्य हूं मैंने पूर्व जन्म में पुण्य नहीं किये हैं क्योंकि राष्ट्रकुट के साथ विस्तीर्ण भोग भोगवती विचरने समर्थ नहीं हूं ॥ ४१ ॥ उस काल उस समय में सुव्रता नायक आर्यिका इर्यासमिती युक्त यावत् बहुत परिवार से परिवरि हुई पूर्वानुपूर्व चलती हुई जहां वभेल सन्निवेश

एहिं उवाणसेज्जाहिं जाव सुत्तमामिहिं तुआएहिं जाव मी संवएमि विहरित्तए तं इच्छामिणं अज्जाओ तुम्हं अंतियं धम्मं निसामित्तए ॥ ४४ ॥ ततेणं सासोमामाहणी तासिं अज्जाण अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव हियाओ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी—सद्दहामिणं अज्जाओ! निग्गंथपावयणं जाव अब्भु-ट्ठेमिणं अज्जाओ! निग्गंथपावयणं एवमेयं अज्जाओ जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जणवरं अज्जाओ रट्ठकूडं आपुच्छामि ततेणं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि ॥

को यावत् दिवसविभक्ती को कितनेक को स्तनपान कराती यावत् कितनेक सूते हुवे जिससे मेरा जन्म सफल है मैं राष्ट्रकूट साथ भोग भोगवने समर्थ नहीं हूं इसलिये मैं चाहती हूं आप के पास धर्म श्रवण करना ॥५७॥ तब उन आर्यिकाने सोमा ब्राह्मणी को विविध प्रकार की केवली भाषित धर्म देशना सुनाई ॥ ५८ ॥ तब सोमा ब्राह्मणी उन आर्यिका के पास धर्म श्रवणकर अवधारणकर हर्ष संतोष पायी यावत् हृदय में धारन कर उन आर्यिकाजी को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी—अहो आर्यिका मैंने निग्रन्थ के प्रवचन का श्रद्धान किया, यावत् अहो आर्यकाजी! मैं निग्रन्थ प्रवचन ग्रहण करने सावधान हुई हूं अहो आर्यकाजी जैसा तुम कहते हो वैसा ही है इतना विशेष मैं राष्ट्रकूट को पूछकर तुम्हारी के पास दीक्षा धारन

एहिं उच्चाणसेज्जाहिं जाव सुत्तमाणिहिं दुआएहिं जाव भी संथएहिं विहरित्तए तं इच्छामिणं अज्जाओ तुब्भं अंतियं धम्मं निसामित्तए ॥ ४४ ॥ ततेणं सासोमामाहणी तासिं अज्जाण अंतिए धम्मसोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव हियाओ, ताओ अज्जाओ, वंदइ नमंसइ२ त्ता एवं वयासी—सद्दहामिणं अज्जाओ! निग्गंथपावयण जाव अब्भु ट्ठेमिणं अज्जाओ! निग्गंथपावयाणं एवमेय अज्जाओ जाव से जहेहिं तुब्भवदह,जणवरं अज्जाओ रट्ठकुडं आपुच्छामि ततेणं देवाणुप्पियाण अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि ॥

को यावत् डिम्भडिम्भी को कितनेक को स्तनपान कराती यावत् कितनेक मूतते हुवे जिससे मेरा जन्म सफल है मैं राष्ट्रकुट साथ भोग भोगवने समर्थ नहीं हूं इसलिये मैं चाहती हूं आप के पास धर्म श्रवण करना ॥५७॥ तब उन आर्यिकाने नाना प्रकार का विविध प्रकार की केवली भाषित धर्म देशना सुनाई ॥ ५८ ॥ तब सोमा ब्राह्मणी उन आर्यिका के पास धर्म श्रवणकर अवधारनकर हर्ष संतोष पायी यावत् हृदय में धारन कर उन आर्यिकाजी को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी—अहो आर्यिका मैंने निग्रन्थ के प्रवचन का श्रद्धान किया, यावत् अहो आर्यकाजी! मैं निग्रन्थ प्रवचन ग्रहण करने सावधान हुई हूं अहो आर्यकाजी जैसा तुम कहते हो वैसा ही है एवम् विशेष में राष्ट्रकुट को पूछकर देवानुप्रिया के पास दीक्षा धारन

सुव्वयाण अज्जाण अतिय मुंडा जाव पव्वयामि ॥ ४९ ॥ ततेण सा सोमा माहणी रट्ठकुडस्स एयमट्ठं पडिसुणेति ॥ ५० ॥ ततेण सा सोमा माहणी ण्हाया जाव सरीरा चिडिया चक्कवाल परिकिण्णा साओगिहाओ निक्खमति २ त्ता वभाल सन्निवेस मज्झं मज्झेण जेणव सुव्वयाण अज्जाण उवस्सए तेणव उवागच्छइ २ त्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वदइ नमसइ पज्जुवासइ २ त्ता ॥ ५१ ॥ ततेण ताओ अज्जाओ सोमा माहणीए विचित्त केवलि पन्नत्तधम्म कहेति जहा जीवा बज्झति जहा जीवा मुच्चति ॥ ५२ ॥

तुम दर साथ विस्तीर्ण भोग भोगवते रहो, फिर भुक्तभोगी होकर सुव्रता आर्जिका क पास दीक्षा लूंगा ॥ ४९ ॥ तब सोमाब्राह्मणीने राष्ट्रकुट क उक्त वचन मान्य किये ॥ ५० ॥ तब वह सोमा ब्राह्मणीने स्नानकिया यावत वस्त्र भूषण से विभूषित हुई, दासीयों के चक्रवाल स घीरीहुई अपने घर स निकलकर बभेल सन्निवेश के मध्य २ में होकर जहां सुव्रता आर्जिका का उपाश्रय था तहां आई वहां आकर सुव्रता आर्जिका को वंदना नमस्कार किया सेवा करने लगी ॥ ५१ ॥ तब सुव्रता आर्जिकाने सोमा ब्राह्मणी को विविध प्रकार से केवली भाषित धर्मोपदेश सुनाया, जिस प्रकार जीव कर्मबन्ध कर बन्धाता है और जिस प्रकार जीव कर्मबन्ध स मुक्त होता है सो कह समझाया ॥ ५२ ॥ तब

ण्हाया तहेव निग्गया जाव वंदइ नमसइ २ त्ता धम्मसोच्चा जाव नवरं रट्ठकुडं आपुच्छामि ततेणं पव्वयामि अहासुहं ॥ ५१ ॥ तमेणं सा सोमामाहणी सुव्वय अज्ज वदइ नमंसइ २ त्ता सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ २त्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकुडे तणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल परिग्गहे तहेव आपुच्छइ जाव पव्वइत्तए? अहासुह देवाणुप्पिए ! मापडिबंध ॥ ५८ ॥ तएणं रट्ठकुडे विउल असणं पाण खाइम साइमं तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा जाव अज्जाजाया इरियासमिया जाव गुत्त

ब्राह्मणी धर्म कथा सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् स्नान किया वैसे ही निकली यावत् धर्मोपदेश श्रवण किया इतना विशेष र राष्ट्रकुट को पूछकर फिर मैं दीक्षा ग्रहण करूंगी आर्यिका बोली—यथासुख अहो देवानुप्रिय ! ॥ ५७ ॥ तब वह सोमा ब्राह्मणी सुव्रता आर्यिका को वंदना नमस्कार कर सुव्रता आर्यिका के पास से निकलकर जहां अपना घर था जहां राष्ट्रकूट था तहां आई हाथ जोड़कर यावत् कहा—सुव्रता आर्यिका के पास दीक्षा ग्रहण करूं. राष्ट्रकुट बोला—अहो देवानुप्रिय ! जिस प्रकार सुख हो उस प्रकार करो विलम्ब मत करो ॥ ५८ ॥ तब राष्ट्रकुटने अशनादि चारों प्रकार का आहार निष्पन्न कराया, जिस प्रकार पूर्व भव में सुभद्रा के भव में दीक्षा ली थी उस ही प्रकार दीक्षा ली यावत् आर्यिका हुई, ईर्या

ततेणं सा सोमा माहणी सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिय जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जति २ त्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ २ त्ता जामेवदिसि पाउब्भूया तामेव दिसिपडिगया॥ ५३ ॥ ततेणं सा सोमामाहणी समणोवासिया जाया अभिगय जीवा जीव जाव अप्पाणं भावमाणे विहरति ॥ ५४ ॥ ततेणं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णयाकयाइ वेभेलाओ संनिवेसाओ पडिनिक्खमंति बहिया जणवय विहरंति ॥ ५५ ॥ ततेणं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णयाकयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे जाव वेभेलसंनिवेसे जाव विहरंति ॥ ५६ ॥ ततेणं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठा

तब सोमा ब्राह्मणी सुव्रता आर्यिका के पास यावत् बारा प्रकारका श्रावक धर्म अंगीकार किया अंगीकार कर सुव्रता आर्यिका को वंदना नमस्कार कर जिस दिशा से आई थी, उस दिशा में पीछी गई ॥ ५३ ॥ तब सोमाब्राह्मणी श्रमणोपासिका हुई जीवाजीव की जान हुई यावत् अपनी आत्मा को भावती हुई विचरने लगी ॥ ५४ ॥ तब वह सुव्रता आर्यिका अन्यदा किसी वक्त समय बेभेल संनिवेश से निकल बाहिर जनपद देश में विहार करने लगी ॥ ५५ ॥ तब वह सुव्रता आर्यिका अन्यदा किसी वक्त पूर्वानुपूर्व चलते यावत् पुनः बेभेल संनिवेश आये तप संयम से आत्मा भावते विचरने लगी ॥ ५६ ॥ तब वह सोमा

ण्हाया तहेव निग्गया जाव वंदइ नमसइ २ त्ता धम्मं सोच्चा जाव नवरं रट्ठकूडं आपुच्छामि ततेणं पव्वयामि, अहासुहं ॥ ५१ ॥ तमेण सा सोमामाहणी तुव्वय अज्जं वंदइ नमसइ २ त्ता सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ २त्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे तणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल परिग्गहे तहेव आपुच्छइ जाव पव्वइत्तए? अहासुहं देवाणुप्पिए ! मापडिबंधं ॥ ५८ ॥ ततेणं रट्ठकूडे विउलं असणं पाणं खाइम साइमं तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा जाव अज्जाजाया इरियासमिया जाव गुत्त

ब्राह्मणी यह कथा सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् स्नान किया वैसे ही निकली यावत् धर्मोपदेश श्रवण किया इतना विशेष राष्ट्रकूट को पूछकर फिर मैं दीक्षा ग्रहण करूंगी आर्यिका बोली—यथासुख अहो देवानुप्रिय ! ॥ ५७ ॥ तब वह ... ब्राह्मणी सुव्रता आर्यिका ... सुव्रता आर्यिका के पास से निकलकर जहां राष्ट्रकूट का गृह था वहां आई ... आर्यिका के पास दीक्षा ग्रहण करूं. राष्ट्रकूट बोला—अहो देवानुप्रिय ! जिस प्रकार सुख हो उस प्रकार करो विलम्ब मत करो ॥ ५८ ॥ तब राष्ट्रकूटने अशनादि चारों प्रकार का आहार निष्पन्न कराया, जिस प्रकार पूर्व भव में सुभद्रा के भव में दीक्षा ली थी उस ही प्रकार दीक्षा ली यावत् आर्यिका हुई, ईर्या

घेभपारिणी ॥ ५९ ॥ ततणं सा सामा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाण अतिए सामाइय
मादियाइ इक्कारस अंगाइ अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ छट्ठ अट्ठम दुवालस जाव भावे
माणी बहूहिं वासाइ सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं
अणसणाए छेदइ २ त्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ता कालमासे कालकिच्चा सक्कस्स
देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववज्जिहिति तत्थण अत्थेगइया देवाणं
दोसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थण सोमस्सविदेवस्स दोसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता
॥६०॥ सेणं भंते ! सोमादेवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं जाव

न मणी पुक्त पावन् गुप्त ब्रह्मचारिणी बनी ॥५९॥ वह सोमा आर्जिका सुव्रता आर्जिका समीप सामायिकादि इग्यार अंग पढी बहुत उपवास बेला तेला चोला पचोला यावत् आत्मा को भावती सामान्य बहुत वर्ष पर्याय पालकर एक महिना की संलेषणा कर साठ भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण कर समाधी युक्त काल के अवसर में काल कर, शक्रेन्द्र देवता के राजा के सामानिक देवपने उत्पन्न हुए वहां कितनेक देवता की दो सागरोपम स्थिति है वहां सोमदेव की भी दो सागरोपम की स्थिति कही ॥६०॥ अहो भगवन् ! वह सोम देवता उस देवलोक से आयुष्य स्थिति भवका क्षयकर कहां जावेगा कहां उत्पन्न

चयपइत्ता कहिंगच्छाति कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेह वासे जाव अंतं काहिति ॥ ६१ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ चउत्थ अज्झयण सम्मत्तं ॥ ४ ॥ *

होगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में जन्म ले संयम ले करणी कर कर्मों का क्षय कर यावत् सब दुःखों का अन्त करेगा ॥ ६१ ॥ यों निश्चय अहो जंबू ! श्रमण भगवन्त ने चौथा अध्ययन का यह अर्थ कहा ॥ यह चौथा बहुपुत्रिया देवी का अध्ययन समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे मणिवइया णामं णयरी होत्था, रिद्धित्थमियसमिद्धा, चंदोत्तरायणे चेइए ॥ २ ॥ तत्थणं मणिवइयाए णयरीए पुण्णभद्दणामं गाहावइ परिवसति, अड्ढे दित्ते ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं थेराभगवंता जातिसंपन्ना जाव जीवियास मरणभयविप्पमुक्का बहुसुया बहुपरिवारा पुव्वाणुपुव्विं जाव समोसढा परिसा णिग्गया ॥ ५ ॥ ततेणं से पुण्णभद्दे गाहावइ इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठा जहा पण्णत्तीए गंगदत्तो तहेव णिगच्छति जाव णिक्खंतो जाव गुत्तबंभयारी ॥ ६ ॥ ततेणं से पुण्णभद्दे अणगारे

समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में मणिवतीका नामकी नगरी थी वह ऋद्धि युक्त थी ईशान कोन में चन्द्रोत्तरा [illegible] था ॥ ३ ॥ वहां मणिवतीका नगरी में पूर्णभद्र नामक गाथापति रहता था, वह ऋद्धिवंत [illegible] ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में स्थविर भगवंत जाति-संपन्न [illegible] जीवन की आशा [illegible] बहुत सूत्र के पारगामी बहुत साधुओं के परिवार से परिवरे इस पूर्वानुपूर्वी [illegible] मणिवतीका नगरी के चन्द्रोत्तर उद्यान में पधारे परिषदा वंदने गई ॥ ५ ॥ तब पूर्णभद्र नामक गाथापति इस प्रकार कथा [illegible] जिस प्रकार भगवती में गंगदत्त का कथन कहा वैसे ही दीक्षा धारण की यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य के पालक बने ॥ ६ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बूदीवे दीवे भारहेवासे मणिवइया णामं णयरी होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धा, चन्दोत्तरायणे चइए ॥ १ ॥ तत्थणं मणिवइयाए णयरीए पुण्णभद्दे णामं गाहावई परिवसति, अड्ढे दित्ते ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा भगवंता जाइसंपन्ना जाव जीवियास मरणभयविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पुव्वाणुपुव्विं जाव समोसढा परिसा णिग्गया ॥ ५ ॥ तएणं से पुण्णभद्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठा जहा पण्णत्तीए गंगदत्तो तहेव णिग्गच्छति जाव णिक्खंतो जाव गुत्तबंभयारी ॥ ६ ॥ तएणं से पुण्णभद्दे अणगारे

समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में मणिवतीया नामकी नगरी थी वह ऋद्धि युक्त थी ईशान कोन में चन्द्रोत्तरा नामक उद्यान था ॥ २ ॥ वहां मणिवतीया नगरी में पूर्णभद्र नामक गाथापति रहता था, वह आढ्य दीप्त यावत् अपराभूत था ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में स्थविर भगवंत जाति-संपन्न यावत् जीवन की आशा मरण के भय रहित बहुत सूत्र के पारगामी बहुत साधुओं के परिवार से परिवरे हुए पूर्वानुपूर्वी चलते हुए यावत् मणिवतीया नगरी के चन्द्रोत्तर उद्यान में पधारे परिषदा वंदने गई ॥ ५ ॥ तब पूर्णभद्र नामक गाथापति इस प्रकार कथा वार्ता सुनके हृष्ट तुष्ट हुआ जिस प्रकार भगवती में गंगदत्त का कथन कहा वैसे ही दीक्षा धारण की यावत् गुप्त-ब्रह्मचर्य के पालक बने ॥ ६ ॥

॥ पंचम अध्ययन-पूर्णभद्र देवका ॥

जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं उक्खेवओ, तं एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था गुणसीलए चइए, सेणिए राया, सामी समोसढे परिसा णिग्गया ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पुण्णभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभद्दंसि सिंहासणंसि चउहिं सामाणिय साहस्सीहिं जहा सूरियाभो जाव बत्तीसविहं नट्टविहिं उवदंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ जहा कूडागार साला ॥ २ ॥ पुण्णभद्द पुच्छा ? एवं खलु गोयमा

अहो भगवन् ! पांचवे अध्ययन के भगवंतने क्या भाव कहे हैं ? यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी गुनसील बाग श्रेणिक राजा भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन गई ॥ १ ॥ उस काल उस समय में पूर्णभद्र विमान में सौधर्मिक सभा में पूर्णभद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक देव जिस प्रकार सूर्याभ देव यावत् बत्तीस प्रकार का नाटक बताकर जिस दिशा से आया था उस दिशा पीछा गया गौतम स्वामीने प्रश्न पूछा भगवंतने कूडागारशाला के दृष्टान्त से समाधान किया ॥ २ ॥ पूर्णभद्र की पृच्छा की—यों निश्चय अहो गौतम ! उस काल उस

पुण्णभद्देण भंते ! देवताओ देवलोगाओ जाव कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति? गोयमा ! महाविदेहवासे सिज्झिहिति जाव अंत काहिति ॥ ११ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेण जाव संपत्तेण निक्खेवओ पचंम अज्झयण सम्मत्त ॥ ५ ॥

कहा है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! पूर्णभद्र देव देवलोक से आयुष्य पूर्णकर कहाँ जावेगा कहाँ उत्पन्न होगा? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में जन्म ले संयम ले यावत् सिद्ध होगा यावत् सब दुःख का अंत करेगा ॥ १० ॥ यों निश्चय अहो जम्बू पांचवा अध्ययन का यह अर्थ कहा इति पांचवा पूर्णभद्र देवका अध्ययन समाप्तम् ॥ ५ ॥

तहा रूवाण थराणं भगवंताणं अंतिए सामाइयमाइ एक्कारसम अगाइ अहिज्जइ२ त्ता बहूइ चउत्थ छट्ठ अट्ठम जाव भावित्ता बहूइं वासाइ सामण्णपरियागं पाउ णित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिक्कमिए समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मकप्पे पुण्णभद्देविमाणे उववाए समाए देवसयणिज्जसि जाव भासामण पज्जत्तीए ॥ ७ ॥ एवं खलु गोयमा ! पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढि जाव अभिसमन्ना गया॥ ८ ॥ पुण्णभद्दस्सणं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥ ९ ॥

तब वे पूर्णभद्र अनगार तथारूप स्थविर भगवंत के पास सामायिकादि इग्यारह अंग पढकर बहुत उप-वास बेला तेला आदि तप से आत्मा को भावते विचरने लगे एक महिने की संलेखना साठ भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण युक्त समाधी सहित काल के अवसर में काल पूर्ण कर सौधर्म देवलोक में पूर्णभद्र विमान में उपपात सभा में देवता की शय्या में यावत् भाषा मनपर्याप्त सहित हुवे ॥७॥ यों निश्चय अहो गौतम! पूर्णभद्र देवता की यह दिव्य देवऋद्धि यावत् भोगोपभोग में आइ है सन्मुख हुइ है॥८॥ अहो भगवन् ! पूर्ण भद्रदेव की कितने काल की स्थिति कही है ! अहो गौतम ! दो सागरोपम की स्थिति

पुण्णभद्देण भंते ! देवताओ देवलोगाओ जाव कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति? गोयमा ! महाविदेहवासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति ॥ ११ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेण जाव संपत्तेण निक्खेवओ पंचम अज्झयण सम्मत्तं ॥ ५ ॥ *

कही है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! पूर्णभद्र देव देवलोक से आयुष्य पूर्णकर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न हो संयम से यावत् सिद्ध होगा यावत् सब दुःख का अंत करेगा ॥ १० ॥ यों निश्चय जम्बू पांचवा अध्ययन का यह अर्थ कहा इति पांचवा पूर्णभद्र देवका का अध्ययन समाप्तम् ॥ ५ ॥

॥ षष्ठ अध्ययन—माणिभद्र देवका ॥

जइण भंत ! समणेण भगव ! महावीरेण जाव संपत्तेण उक्खेवओ ॥ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहेणाम णयरे होत्था गुणसीलए चेइए सेणिए राया सामी समोसरिए ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं माणिभद्द देवे सभाए सुहम्माए माणिभद्दसि सिंहासणंसि चउहिं सामाणिय साहस्सीहिं जहा पुण्णभद्द तहेव आगमणं नट्टविहं ॥ २ ॥ पुव्वभव पुच्छा मणिवइणगरी माणिभद्दगाहावई थेराणं अंतिए पव्वज्जा एक्कारस अंगाइं अहिज्जति बहूहिं वासाइं सामण्णपरियागं, मासिय संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता माणिभद्देविमाणे उववाओ,दो सागरोवमाइं

अहो भगवन् ! छठे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? अहो जंबू ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी गुणशीला बाग, श्रेणिक राजा, भगवन् पधारे ॥ १ ॥ उस काल उस समय में माणीभद्र देव सौधर्मिक सभा में माणिभद्र सिंहासनपर चार हजार सामानिकदेव साथ जैसे पूर्णभद्र देव वैसे ही आया नाटक कर, कर पीछा गया ॥ २ ॥ पूर्व भव की पृच्छा की अहो भगवन् ! मणिवती नगरी, माणिभद्र गाथापति, स्थविर के पास दीक्षाली, इग्यारे अंग पढ़, बहुत वर्ष संयम पाला, एक महिने की संलेषना साठ भक्त अनशनकर

ठिइ महाविदेहवासे सिज्झिहिति ॥ एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ ॥ छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥

* * *

च्यवकर, माणिभद्र विमान में देवता पने उत्पन्न हुवे दो सागरोपम की स्थिति महाविदेह क्षेत्र में से मोक्ष जावेंगे ॥ यों निक्षेप छठा अध्ययन कहा ॥ इति छठा माणिभद्र देवता का अध्ययन समाप्त ॥ ६ ॥

॥ एकादश उपाङ्ग. पुष्पचूला सूत्र ॥

॥ प्रथम अध्ययन-श्रीदेवका ॥

जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं उक्खेवओ ॥ जाव दस अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा (गाहा) सिरि हिरि धिति, कित्ति बुधि, लच्छीय होइ बोधव्वा। इलादेवी, सुरादेवी, रसदेवी गंधदेवी ॥ १ ॥ जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चउत्थ स्स वग्गस्स पुप्फचूलाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता ॥ पढमस्सणं

यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने पुष्पचूलिया के यह भाव कहे तो अहो भगवन् ! पुष्पचूला के क्या भाव कहे हैं ? अहो जम्बू ! पुष्प चूला के दश अध्ययन कहे हैं तद्यथा-१ सिरी देवी का, २ हिरिदेवी का ३ धृति देवी का ४ कीर्ति देवी का, ५ बुद्धि देवी का, ६ लक्ष्मी देवी का ७ इला देवी का ८ सुरा देवी का, ९ रस देवी का और १० गंध देवी का ॥ १ ॥ यदि अहो भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोंने चौथा वर्ग पुष्पचूला के दश अध्याय कहे हैं तो अहो भगवन् ! प्रथम

॥ एकादश उपाङ्ग. पुष्पचूला सूत्र ॥

॥ प्रथम अध्ययन-श्रीदेवका ॥

जइणं भंते ! समणेण भगवया महावीरेण उक्खेवओ ॥ जाव दस अज्झयणा पण्णत्ता तजहा (गाहा) सिरि हिरि धिति, कित्ति बुधि, लच्छीय होइ बोधव्वा, इलादेवी, सुरादेवी, रसदेवी गंधदेवी ॥ १ ॥ जइणं भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तणं चउत्थ वग्गस्स पुप्फचूलाण दस अज्झयणा पण्णत्ता ॥ पढमस्सण

यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने पुष्पीया के यह भाव कहे तो अहो भगवन् ! पुष्पचूला के क्या भाव कहे हैं ? अहो जम्बू ! पुष्प चूला के दश अध्ययन कहे हैं तद्यथा—१ सिरी देवी का, २ हिरिदेवी का ३ धृति देवी का ४ कीर्ति देवी का, ५ बुद्धि देवी का, ६ लक्ष्मी देवी का ७ इला देवी का ८ सुरा देवी का, ९ रस देवी का और १० गंध देवी का ॥ १ ॥ यदि अहो भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उन्होंने चौथा वर्ग पुष्प चूला के दश अध्याय कहे हैं तो अहो भगवन् ! प्रथम

जियसत्तू राया ॥ ५ ॥ तत्थणं रायगिहे णगरे सुदसणे नाम गाहावई परिवसति, अड्ढे ॥ ६ ॥ तस्सण सुदसणस्स गाहावइस्स पिया नाम भारिया होत्था सुकुमाला ॥ ७ ॥ तस्सण सुदसणस्स गाहावइस्स धूया पियाए गाहावइणीए अतए भूया णाम दारिया होत्था बुड्ढा बुड्ढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडिय पुत्तथणी वरगपरिवज्जिया यावि होत्था ॥ ८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरसादाणीए जाव नवरयणी उच्चत्ते सोचेव समोसरण, परिसा निग्गया ॥ ९ ॥ ततेणं सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी

च था, जितशत्रु राजा ॥ ५ ॥ तहां राजगृही नगरी में सुदर्शन नामक गाथापति रहता था, वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभवित था ॥ ६ ॥ उस सुदर्शन गाथापति के प्रिया नामक भार्या थी, वह सुकुमाल थी ॥ ७ ॥ उस सुदर्शन गाथापति की पुत्री प्रिया पत्नी की अंगजात भूता नाम की लडकी थी वह जन्म से ही वृद्धा, कुमारपन में ही वृद्ध देखाती थी ॥ जीर्ण शरीर, कुमारपन से जीर्ण शरीर की धारक, जिस के स्तन नीचे ढलके हुवे व सर्वांग शिथिल बना था कोइ भी पुरुष उस ग्रहण नहीं करे इसलिये पतिकर वर्जित थी ॥ ८ ॥ उस समय में पार्श्वनाथ अर्हत पुरुषों में आदान नाम कर्म के धारक यावत् नव हस्त ऊंचे शरीर के धारक वहां पधारे, परिषदा वंदनेगई ॥ ९ ॥ तब वह भूता लडकी इस प्रकार की

भते ! उक्खेवओ ॥ २ ॥ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे
णगरे गुणसिलए चेइए, सेणियराया सामी समोसढे परिसा निग्गया ॥ ३ ॥ तेणं
कालेणं तेणं समएणं सिरिदेवी सोहम्मकप्पे सिरिवडिंसए विमाणे सुहम्माए सभाए,
सिरिसि सीहासणंसि, चउहिं सामाणिय सहस्सेहिं चउहिं महत्तरियाहिं, सपरिवाराहिं,
जहा बहुपुत्तिया जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगया णवरं दारिया नत्थि॥ ४ ॥ पुव्व
भव पुच्छा एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं रायगिहे णगरे, गुणसिलए चेइए

अध्याय का श्रमण भगवंतने क्या अर्थ कहा है ? ॥ २ ॥ यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में
राजगृही नगरी गुणशिला चैत्य श्रेणिक राजा, भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन आई ॥३॥
उस काल उस समय में सिरीदेवी सौधर्म देवलोक में श्रीवतंसक विमान की सौधर्मिक सभा में श्री
सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवता चार हजार महत्तरिका देवीयों और भी अपने परिवार से
परिवरी जिस प्रकार बहुपुत्रिका देवी का कथन कहा तैसाहि सब इसी का भी जानना । यावत् भगवंत के
पास आई नाटक बतलाकर पीछी गई जिस में फरक इतना-इसने बालक बालिका वैक्रय नहीं किये ॥ ४ ॥
पूर्व भव की पृच्छा की ? यों निश्चय अहो गौतम ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी गुणसिला

रायगिहणयरं मज्झं मज्झे गं निगच्छइ २ त्ता जेणेव गुणसिलए चेईए तणेव उवागच्छइ २ त्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए पासति धम्मियाओ जाणपवरा ओ पच्च रुहइ २ त्ता चाडचक्कवाल परिकिन्ना जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणिए तेणव उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ २ त्ता जाव पज्जुवासति॥ १ २॥ ततेण पासअरहा पुरिसा दाणिए भूयाए दारियाए तीसमहती धम्मकहाए॥ १ ३॥ धम्मसोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामिणं भंते निग्गंथ पावयणं जाव अब्भुट्ठामिणं भंते निग्गंथ पावयणं से जहेव तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिया अम्मापियरो आपुच्छामि ततेण अहं जाव पव्वइत्तए अहासुहं देवाणुप्पिए। १ ४।

से परिवार युक्त राजगृही नगरी के मध्य मध्य में होकर निकलकर जहां गुणसिला बाग था तहां आ आकर छत्रादि तीर्थंकरों के अतिशय देख वहां धार्मिक प्रधान रथ को खड़ा किया धार्मिक रथ से नीचे उतरी दासियों के समुदाय से घिरी हुई जहां पार्श्वनाथ अर्हंत पुरुषादानी थे तहां आकर तीन वक्त उठ बैठ वन्दना नमस्कार कर सेवा करने लगी ॥ १ २ ॥ तब श्री पार्श्वनाथ अर्हंत पुरुषादानी भूता लड़की को और बड़ी बड़ी परिषद् का धर्म कथा कही॥ १ ३ ॥ भूता लड़की धर्म कथा श्रवण कर अवधारकर हर्ष संतोष पाई यावत् वन्दना नमस्कार यों कहने लगी—अहो भगवन ! मैंने निर्ग्रन्थ के प्रवचन का श्रद्धान किया यावत् सावधान हुई मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन में, जिस प्रकार आप कहते हो वैसा ही है इतना विशे

रायगिहणयरं मज्झं मज्झेणं निगच्छइ २ त्ता जेणेव गुणसिलए चईए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए पासति धम्मियाओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ २ त्ता चाडचक्कवाल परिकिन्ना जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणिए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ २ त्ता जाव पज्जुवासति॥ १२॥ ततेणं पासअरहा पुरिसा दाणिए भूयाए दारियाए तीसमहती धम्मकहाए॥ १३॥धम्मसोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव वंदित्तानमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामिणं भंते निग्गंथपावयणं जाव अब्भुट्ठामिणं भंते निग्गंथपावयणं से जहेयं तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिया अम्मापियरो आपुच्छामि ततेणं अहं जाव पव्वइत्तए अहासुहं देवाणुप्पिए। १४।

स परिवार हुई राजगृही नगरी के मध्य मध्य में होकर निकलकर जहां गुणसिला बाग था तहां आ आकर छत्रादि तीर्थंकरों के अतिशय देख वहां धार्मिक प्रधान रथ को खड़ा किया धार्मिक रथ से नीचे उतरी दासियों के समुदाय से घिरी हुई जहां पार्श्वनाथ अर्हंत पुरुषादानी थे तहां आकर तीन वक्त उठ बैठ वन्दना नमस्कार किया नमस्कार कर सेवा करने लगी॥ १२॥ तब श्री पार्श्वनाथ अर्हंत पुरुषादानी भूता लड़की को और वह महती परिषद् को धर्म कथा कही॥ १३॥ भूता लड़की धर्म कथा श्रवण कर अवधारकर हर्ष संतोष पाई यावत् वन्दना नमस्कार यों कहने लगी—अहो भगवन्! मैंने निर्ग्रन्थ के प्रवचन का श्रद्धान किया यावत् सावधान हुई मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन में, जिस प्रकार आप कहते हो वैसे ही है इतना विशे

उवट्ठावेहइ २ त्ता जाव पच्चुप्पिणइ॥ ततेण से कोडुंबिय जाव पच्चुप्पिणति॥ १६॥ ततेण से सुदसणे गाहावई भूयदारियं ण्हाय जाव विभूसियसरिरं पुरिससहस्सवाहणिय सीयं दुरुहति २ त्ता मित्तनाइ जाव रवेणं रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव गुणसिलए चइए तणेव उवागच्छइ २ त्ता तित्थगरे पासइ २ त्ता सीयं ठवेति २ त्ता भूय दारिय सीयाओ पच्चोरुहइ २ त्ता ॥ १७॥ ततेण भूयदारिय अम्मापियरो पुरओकाओ जेणेव पासअरहा पुरिसादाणिए तेणेव उवागए तिक्खुत्तो वंदइ नमसइ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! भूया दारिया अम्हं एगा धूया इट्ठा कंता, एसणं देवाणुप्पिया ! संसार

मेरे सुमत करो तब वह कौटुम्बिक पुरुष शिविका तैयार कर आज्ञा पीछी सुप्रत की ॥ १६ ॥ तब सुदर्शन गाथापति भूता लड़की को स्नान यावत् वस्त्राभूषण कर भूषित की, हजार पुरुष उठावे ऐसी शिविका में बैठाकर मित्र ज्ञाति के परिवार से परिवरे यावत् वादित्र के नाद कर राजगृही नगरी के मध्य २ में होकर जहां गुणसिला चैत्य था तहां आकर तीर्थंकर के अतीशय देखकर शिविका स्थापन की, भूता लड़की शिविका से नीचे उतरी ॥ १७ ॥ तब भूता लड़की के माता पिता भूता लड़की को आगे करके पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानी के पास आये तिखुत्ता के पाठ से वंदना नमस्कार किया यों कहने लगा—यों निश्चय यह भूता लड़की हमारे एक ही पुत्री है, यह इष्टकारी कांतकारी प्रियकारी है अहो

ततेणं सा मया दारिया तामवत्थामेव जाणंय २ जाव दुरुहित्ता २ जेणेव रायगिहे नगरं तेणेव उवागच्छइ २त्ता रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं मएगिहे तेणेव उवागया रहाओ पच्चोरुहति २त्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागया जहा जमाली आपुच्छते अहासुहं देवाणुप्पिए ॥ १५ ॥ ततेणं से सुदंसणे गाहावई विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति मित्तनाति आमंतति २त्ता जाव जिमिय भुत्तुत्तर कालं सुइभूए उवक्खमाणत्ता कोडंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावइत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मूयाए दारियाए पुरिससहस्सवाहिणीए

मेरा देवानुप्रिया! माता पिता को पूछकर मैं यावत् दीक्षा धारन करूंगी भगवतने कहा अहो देवानुप्रिया! जिस प्रकार सुख हो उस प्रकार करो ॥ १४ ॥ तब वह मृगा लडकी उस प्रधान धार्मिक रथारूढ होकर जहां राजगृही नगरी थी वहां आई, राजगृही नगरी के मध्य में हो भवन पर आई रथ से नीचे उतरकर जहां माता पिता थे वहां आई, हाथ जोडकर जैसे भगवती सूत्र में जमालीने आज्ञा मांगी है वैसे ही इसने भी मांगी तब माता पिता बोले तुम सुख हो उस प्रकार करो ॥ १५ ॥ तब सुदर्शन गाथापतिने विस्तीर्ण असनपान खादिम स्वादिम तैयार कराया, मित्र ज्ञातीयों को आमंत्रण दे बोलाये, जीमकर तृप्त हुए, मुख शुद्ध कर पवित्र हुवे, फिर कौटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा—अहो देवानुप्रिय! शीघ्रता से मृगा लडकी के लिये सहस्र पुरुष उठावे एसी शिबिका तैयार करके लावो यह मेरी आज्ञा

से कोडुंबिय जाव पच्चुप्पिणंति॥१६॥ततेणं से उवट्ठावेइइ२त्ता जाव पच्चुप्पिणइ॥ततेणं से कोडुंबिय जाव पच्चुप्पिणंति॥ सीयं सुदंसणे गाहावई भूयदारियं ण्हाय जाव विभूसियसरिर पुरिससहस्सवाहणिय सीयं दुरुहति २ त्ता मित्तनाइ जाव रवेणं रायगिह नयर मज्झं मज्झेणं जेणेव गुणसिलए चेइए तणेव उवागच्छइ २ त्ता तित्थगर पासइ २ त्ता सीय ठवेति२ त्ता भूय दारियं सीयाओ पच्चारुहइ २ त्ता ॥ १७॥ ततेणं भूयदारिय अम्मापियरो पुरओकओ जेणेव पासअरहा पुरुसादाणिए तेणेव उवागए तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया! भूया दारिया अम्ह एग धूया इट्ठाकंता,एसणं देवाणुप्पिया! संसार

मेरे सुमत करो तब वह कोडुम्बिक पुरुष शिबिका तैयार कर आज्ञा पीछी सुमत की ॥ १६ ॥ तब सुदर्शन गाथापति भूता लड़की को न्हलाई यावत् वस्त्राभूषण कर भूषित की. हजार पुरुष उठावे ऐसी शिबिका में बैठाकर मित्र ज्ञाती के परिवार से परिवरे यावत् वादित्र के नाद कर राजगृही नगरी के मध्य २ में होकर जहां गुणसिला चैत्य था वहां आकर तीर्थंकर के अतीशय देखकर शिबिका स्थापन की, भूता लड़की शिबिका से नीचे उतरी ॥ १७ ॥ तब भूता लड़की के माता पिता भूता लड़की को आगे करके पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानी के पास आये तिक्खुत्ता के पाठ से वंदना नमस्कार किया यों कहने लगा—यों निश्चय यह भूता लड़की हमारे एक ही पुत्री है, यह इष्टकारी कांतकारी प्रियकारी है अहो

भीउविग्गा भीया जाव देवाणुप्पियाण अंतिए मुंडा जाव पव्वयति २ सा त एयण्णं देवाणुप्पिए! सिस्सणी भिक्खं दलयति पडिच्छंतम देवाणुप्पिया! सिस्सणीभिक्खं, अहा सुहं देवाणुप्पिया! ॥ १८ ॥ ततेण सा भूयादारिया पासेण अरहा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिम सयमेव आभरणमल्ल लंकार उम्मुयइ २ त्ता जहा देवाणंदा पुप्फचुलाणं अंतिए जाव गुत्तबंभयारिणी॥ १९॥ ततेण सा भूया अज्जा अन्नयाकयाइ सरीर पाउसिया जायाविं हात्था अभिक्खणं २ हत्थधावेति पायधावेति एव सीसं धोवेति, मुहं धोवेति, थणगतराय धोवेति, कक्खतराय धोवेति, गुज्झतराय धोवेति, जत्थ २

देवानुप्रिय! यह संसार के भय से उद्वेग पाई है, देवानुप्रिय के पास मुंडित हो दीक्षा लेना चाहती है, इस लिए अहो देवानुप्रिय! हम शिष्यनी रूप भिक्षा देते हैं आप स्वीकार—ग्रहण करो यह शिष्यनी भिक्षा तब भगवान बोले जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो ॥ १८॥ तब भूता लडकी पार्श्वनाथ भगवंत का वचन श्रवण कर हृष्ट तुष्ट पाई, ईशान कौन में आकर अपने हाथ से आभरण अलंकार उतारे, जिस प्रकार देवानन्दाने दीक्षा ली थी, इस ही प्रकार भूताने भी दीक्षा धारण की, यावत् पुष्पचुला आर्यिका की शिष्यनी हुई यावत् गुप्त ब्रह्मचारिनी बनी ॥ १९ ॥ तब भूता आर्यिका अन्यदा किसी वक्त स्वयं के शरीर पर प्रद्वेष करनेवाली बनी, वारम्वार हाथ धोती है, पांव धोती है, मस्तक धोती है, मुख धोती है, स्तन के

वियणं ठाणवा सिज्जवा निसिहियवा, तरथ २ विद्यणं पुव्वामेव पाणएणं अब्भुखेति ततोपच्छा ठाणवा सिज्जंवा निसिहियवा ॥ २० ॥ ततेण ताओ-पुप्फचुलाओ मुय अज्जं एवं वयासी अम्हेण देवाणुप्पिए ! समणीओ णिग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु कप्पति अम्ह सरीर पाउसीयार्ण होत्तए, तुम चणं देवाणुप्पिए ! सरीर पाउसिया ! अभिक्खणं २ हत्थे धोवेति जाव निसीहियंचेतेहि तेणं तुम देवाणुप्पिए ! एयस्सठ्ठाणस्स आलोएति, सेसं जहा सुभद्दाए जाव पाडियके उवसय

अन्दर पोती है कक्ष के अन्दर पोती है, गुह्यस्थान के अन्दर पोती है, जिस २ स्थान खड़ी रहे शयन कर बैठे उस २ स्थान को प्रथम पानी से छांटती है तब फिर खड़ी रहती है शयन करती है बैठती है ॥ २ ॥ तब यह पुष्पचूला आर्यिका मूता आर्यिका से इस प्रकार बोली अहो देवानुप्रिय ! अपन साध्वी हैं निर्ग्रंथनी हैं, ईर्या समिती युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी है इसलिये निश्चय ण अपन को शरीर बहुशी होना कल्पता नहीं है अहो देवानुप्रिय ! तुम शरीर बहुशनी बनकर वारम्बार हाथ धोती हो यावत् पानी छांटकर बैठती हो इस पाप को अहो देवानुप्रिया ! तुम आलोच कर प्रायश्चित ले शुद्ध होवो यों जिसप्रकार सुभद्रा आर्जिकाने अपनी गुरुणीकि हितशिक्षा मान्य नहीं की थी- तैसे ही इसने भी नहीं की

मीउव्विग्गा भीया जाव देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयति २ त्ता त एयण देवाणुप्पिए! सिस्सणी भिक्खं दलयति पडिच्छंतुणं देवाणुप्पिया! सिस्सणीभिक्खं अहा सुह देवाणुप्पिया ! ॥ १८ ॥ ततेण सा भूयादारिया पासेण अरहा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ २ त्ता जहा देवाणंदा पुप्फचूलाणं अंति० जाव गुत्तबंभयारिणी॥ १९॥ ततेणं सा भूया अज्जा अन्नयाकयाइ सरीर पाओसिया जायायावि होत्था अभिक्खणं २ हत्थधोवति पायधोवति, एवं सीसं धोवति मुहं धोवति, थणगंतराय धोवेति, कक्खंतराय धोवेति, गुज्झंतराय धोवेति, जत्थ २

देवानुप्रिय! यह संसार के भय से उद्वेग पाई है देवानुप्रिय के पास मुंडित हो दीक्षा लेना चाहती है, इस लिये अहो देवानुप्रिय ! हम शिष्यनी रूप भिक्षा देते हैं आप मतिक्षा—ग्रहण करो यह शिष्यनी भिक्षा तब भगवान बोले जैसे सुख को सुख होवे वैसे करो ॥ १८॥ तब भूता लडकी पार्श्वनाथ भगवंत का वचन श्रवण कर हृष्ट तुष्ट पाई, ईशान कौन में जाकर अपने हाथ से आभरण अलंकार उतारे, जिस प्रकार देवानन्दाने दीक्षा ली थी, इस ही प्रकार भूताने भी दीक्षा धारण की, यावत् पुष्पचूला आर्यिका की शिष्यनी हुई यावत् गुप्त ब्रह्मचारिनी बनी ॥ १९ ॥ तब भूता आर्यिका अन्यदा किसी वक्त स्वयं के शरीर पर प्रद्वेष करनेवाली बनी, वारम्बार हाथ धोती है, पांव धोती है, मस्तक धोती है, मुख धोती है, स्तन के

लद्धापत्ता, ठिई एगं पलिओवमं ॥ २४ ॥ सिरीणं भंते! देवी जाव कहिं गमिहिंति?
महाविदेहवासे सिज्झिहिंति ॥ एव खलु जंबू णिक्खेवओ पढमं अज्झयण सम्मत्त ॥१॥

प्राप्त हुई है श्रीदेवी की एक पल्योपम की स्थिति है ॥ २४ ॥ यावत् महाविदेह क्षेत्र में जन्मके सिद्ध होकर सब दुःख का अंत करेगी ॥ २५ ॥ यों निश्चय जंबू प्रथम श्रीदेवी का अध्याय कहा ॥ इति पुष्पचूला का प्रथम अध्ययन समाप्तम् ॥ १ ॥

• • • •

उवसपज्जित्ताणं विहरति ॥ २१ ॥ ततेणं सा भूया अज्जा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवति जाव चेति॥ २२ ॥ ततेण सा भूया अज्जा बहुहिं चउत्थ छट्ठ अट्ठम बहु वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कता कालमासे कालंकिच्चा सोहम्मेकप्पे सिरिवडिंसए विमाणए उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव उगाहणाए सिरिदेवत्ताए उववन्ना पंचविहाए पज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए पज्जत्ता ॥ २३ ॥ एवं खलु गोयमा ! सिरिएदेवीए सा दिव्वा देविड्ढी

यावत् एक उपाश्रय अलग रहे यावत् स्वेच्छाचारी हो विचरने लगी ॥ २१ ॥ तब वह भूता आर्यिका किसी की बरज बिना कोई भी मना करनेवाला नहीं इस से स्वच्छन्दाचारिणी बनी हुई वारम्वार हाथ धोती है यावत् पानी छांटकर बैठती है ॥ २२ ॥ तब भूता आर्यिका बहुत उपवास, बेले, तेले, आदि तपश्चर्याकर बहुत वर्ष संयम पाल उक्त पाप स्थानक की आलोचना निंदना बिना किये ही काल के अवसर में काल कर सौधर्म देवलोक के श्रीवतंसक विमान की उपपात सभा में देवशैया में यावत् अंगुल के असंख्यातवे अवगाहनापने श्रीदेवीपने उत्पन्न हुई, फिर पांच पर्याप्ती कर पूर्ण हुई मन और भाषापर्याप्ति एक साथ ही बन्धी इत्यादि ॥ २३ ॥ यों निश्चय श्रीदेवी को दिव्य देवता सम्बन्धी ऋद्धि मिली

लद्धापच्चा, ठिई एगं पलिओवमं ॥ २४ ॥ सिरीणं भंते! देवी जाव कहिं गमिहिति? महाविदेहवासे सिज्झिहिंति ॥ एवं खलु जंबू णिक्खेवओ पढमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥

प्राप्त हुई है श्रीदेवी की एक पल्योपम की स्थिति है ॥ २४ ॥ यावत् महाविदेह क्षेत्र में जन्मके सिद्ध होकर सब दुःख का अंत करेगी ॥ २५ ॥ यों निश्चय जंबू प्रथम श्रीदेवी का अध्याय कहा ॥ इति पुष्पचूला का प्रथम अध्ययन समाप्तम् ॥ १ ॥

॥ दो म दश पर्यंत नव अध्ययन ॥

एवं सेसाणवि नवण्हं भाणियव्वं सरिसणामा विमाणा, सोहम्मकप्पे ॥ पुव्वभव नगर चेइय पियमाईण अप्पणोय नामाइ जहा संगहणीए सव्वासपासस्स अंतिए निक्खंताओ पुप्फचूलाण सिस्सीणीयाओ सरीर पाउसिणियाओ सव्वाओ, अणंतर चइंचइत्ता महाविदेहेवासे सिज्झिहिंति ॥ एवं खलु निक्खेवओ ॥ पुप्फचूलाओ सम्मत्ताओ ॥ १० ॥ चउत्थो वग्गो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ २२ ॥

जिसप्रकार प्रथम अध्यान में श्रीदेवी का कहा वैसे ही बाकी रहे नवही का कहना विमान का नाम देवी जैसे कहना, सब सौधर्म देवलोक की रहने वाली पूर्वभव के नगर बाग माता पिता सब ही गाथा जैसे जानना, (गाथा अप्रेज़ देखाती है) सब पार्श्वनाथ भगवान की पास निकली, पुष्पचूला आर्जिका की शिष्यनी हुई अपने शरीर की शुश्रुषा की मर देवलोक से निकल चवकर महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होगी इति दशोंअध्ययन ॥ इति पुष्फचुला नाम ॥ इति चौथावर्ग समाप्तम् ॥ २२ ॥

इति एकादशउपांग-पुष्फचूला सूत्र समाप्तम्॥

॥ द्वादश उपाङ्ग-वन्हि दशा सूत्र ॥

॥ प्रथम अध्ययन निषधकुमार ॥

जइण भते ! समणेणं भगवया महावीरेण उक्खेवओ उवगाण चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलाण अयमट्ठे पण्णत्ते पचमस्सण भते ! वग्गस्स उवगाण वण्हिदसाणं समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण वण्हिदसाण दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता तजहा निसढ, अणि, वह, वेह, पगती, जुत्ति, दसर हय, दढरहेय, महाधणु, सत्तधणु, दसधणुणामे, सयधणु ॥ १ ॥ जइण भंते ! समणेणं

यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी मुक्ति पधारे उनोंने पुप्फचूला का यह अर्थ कहा अहो भगवन् ! पांचवा उपांग वन्हिदशा का श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने क्या अर्थ कहा है ! यों निश्चय अहो जम्बू ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी यावत् मोक्ष पधार उनोंने पचम वन्हि दशा के बारा अध्याय कहे हैं उन के नाम—१ निषध कुमार का, २ आनिय कुमार का, ३ वह कुमार का, ४ वहे कुमार का, ५ प्रगति कुमार का, ६ मुक्ति कुमार का, ७ दशरथ कुमार का, ८ दढरथ कुमार का, ९ महा धनुष्य कुमार का, १० सप्त धनुष्य कुमार का, ११ दश धनुष्य कुमार का, और १२ शत धनुष्य

॥ दो स दश पर्यंत नव अध्ययन ॥

एव स्साणवि णवण्ह भाणियव्व सरिमणामा विमाणा, सोहम्मकप्प ॥ पुव्वभव नगर चइय पियमाईण अप्पणाय नामाइ जहा सगहणीए सव्वासपासस्स अंतिए निक्खताआ पुप्फचूलाण सिसाणीयाआ, सरीर पाउसिणियाआ सव्वाआ अणतर चइचइत्ता महाविदेहवासे सिज्झिहिंति ॥ एव खलु निक्खवआ ॥ पुप्फचूलाआ सम्मत्ताआ ॥ १ ॥ चउत्थो वग्गो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ २२ ॥

जिसप्रकार प्रथम अध्यान में श्रीदेवी का कहा वैसे ही बाकी रहे नवही का कहना विमान का नाम देवी जैस कहना, सब सौधर्म देवलोक की रहने वाली पूर्वभव क नगर बाग माता पिता संग्रही गाथा जैस जानना, (माता अपना देखाती है) सब पार्श्वनाथ भगवान की पास निकली, पुष्पचूला आर्यिका की शिष्यनी हुई बकुश शरीर की प्रमुख की सब देवलोक से निकल चवकर महाविदेह क्षत्र में सिद्ध होगी इति दियोबरप्पोप ॥ इति पुष्फचुला चाल ॥ इति चौथावर्ग समाप्तम् ॥ २२ ॥

इति एकादशउपाङ्ग पुष्फचूला सूत्र समाप्तम्॥

गुच्छगुम्मलयावल्लीपरिगयाभिरामे ॥ हंसमियमयूर कोंच सारस काग मयणसाल कोइलकुलोववेए तड कडग वियरि उज्झर पवाय सिहरं पउरे अच्छरगण देवसंघ विज्जाहर मिहुणं संनिवेते निच्च च्छणए, दसारवर वीर पुरिसतेलोक बलवगाण, सोमे सुभए पियदंसणे सुरूवे पासादिए जाव पडिरूवे॥ ३॥तस्सणं रेवयस्स पव्वयस्स अदूरसामंते एत्थणं नंदणवणे णामं उज्जाणे होत्था, सव्वउय पुप्फ जाव दरिसणिज्जे ॥ ४ ॥ तत्थणं नंदणवणे णामं उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खायणे होत्था सव्वुभे आगमन्नेति ॥५॥

ऊपर अनेक प्रकार के लताओं, कलकल करते पानी के निर्झरन, पर्वत शिखर से पानी का प्रचुर पड़ना, और भी वहां क्रीडा करने वाली अप्सराओं के गण देवताओं के समूह, विद्याधरों के युगलों, ऊपर से नीचे उतर रहे विविध प्रकार क्रीडा कर रहे हैं तैसे ही उस रेवति पर्वत पर दश दिसारों प्रद्युम्नादि वीरों, तीन लोक (खंड) के नायक कृष्ण बलभद्र और भी सौम्य मुद्रावाले शुभ दर्शनवाले सुरूप मनुष्यों का समूह बहुत वहां मिलता था जिस से यह पर्वत चित्त को प्रसन्न करता आंखों से देखने योग्य मन का हरण करनेवाला, प्रतिबिम्ब पडे वैसा था ॥ ३ ॥ उस रेवति पर्वत के बहुत दूर नहीं बहुत नजीक नहीं (पास ही) यहां नंदन वन नाम का बाग था उस में सर्व ऋतु के पत्र फूल फलादि सदैव उत्पन्न होते थे यावत् वह देखने योग्य था ॥ ४ ॥ वहां नंदन वन नामक उद्यान में, सुरप्रिय नामक यक्ष का यक्षायतन (देवालय) था वह बहुत पुराना बहुत लोगों को माननीय बहुत देता था ॥ ५ ॥ उस सूए

मगधया महावीरेण जाव दुवालसम अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सणं भंते ! उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारावई णामं नयरी होत्था दुवालस जोयणा यामा, णवजोयण विच्छिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोकभूया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥२॥ तीसेण बारावईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए एत्थणं रेवए णामं पव्वए होत्था तुंगे गगणतल मणुलिहतासिहरे, णाणाविह रुक्ख

कुमार का ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! पंचम वर्ग दशा के बारह अध्याय कहे हैं तो प्रथम अध्यायका क्या अर्थ कहा है ? अहो जम्बू ! उस काल उस समय में द्वारका नाम की नगरी थी वह बारह योजन (४८ कोश) लम्बी थी और नव योजन [३६ कोश] चौडी थी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक जैसी चित्त को प्रसन्न करनेवाली, आंखों से देखने योग्य, मनोहर, प्रतिबिम्ब पडे ऐसी थी ॥ २ ॥ उस द्वारका नगरी के बाहिर उत्तर पूर्व दिशा के बीच ईशान कौन में यहां रेवति नाम का पर्वत था, वह ऊंचा मानो गगनतल का ही अवलम्बन कर रहा है शिखर जिस का अनेक प्रकार के आम्रादि के वृक्ष, चम्पकादि के गुच्छे, चम्पेलीआदि की लता, तोरियादि की वल्ली इत्यादि अनेक प्रकार की वनस्पति के समूह कर परिवरा हुवा अभिराम है उस पर्वत पर हंस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, कम्मे, मैना, तार्कुकी, कोकिला इत्यादि विविध प्रकार के उत्पन्न हुवे पक्षीयों के समूह युगल मिल क्रीडाकर रहे थे उस पर्वत के मूल में व

गुच्छगुम्मलयावल्लीपरिगयाभिरामे ॥ हंसमियमयूर कोंच सारस काग मयणसाल कोइलकुलोववेए तड कडग वियरि उज्झर पवाय सिहरे पउरे अच्छरगण देवसंघ विज्जाहर मिहुण संनिचिते निच्च छणए, दसारवर वीर पुरिसतेलोक बलवगाण, सोमे सुभए पियदंसणे सुरूवे पासादिए जाव पडिरूवे॥३॥तस्सणं रेवयस्स पव्वयस्स अदूरसामंते एत्थणं नंदणवणे णामं उज्जाणे होत्था, सव्वउय पुप्फ जाव दरिसणिज्जे ॥ ४ ॥ तत्थणं नंदणवणे णामं उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खायणे होत्था बहुणे आगमच्चेति ॥५॥

ऊपर अनेक प्रकार के तलाव, करक खडे पानी के निर्झरन, पर्वत शिखर से पानी का प्रचुर पडना, और भी क्रीडा करने वाली अप्सराओं के गण, देवताओं के समूह, विद्याधरों के युगलों, ऊपर से नीचे उतर रहे विविध प्रकार क्रीडा कर रहे हैं, ऐसा ही इस रैवत पर्वत पर दश दिशारों मधु म्नादि वीरों, तीन लोक (खंड) के नायक कृष्ण बलभद्र और भी सौम्य मुद्रावाले शुभ दर्शनवाले पुरुष मनुष्यों का समूह बहुत वहां मिलता था जिस से यह पर्वत चित्त को प्रसन्न करता आंखों से देखने योग्य मन का हरन करनेवाला, प्रतिबिम्ब पडे वैसा था ॥ ३ ॥ उस रैवत पर्वत के बहुत दूर नहीं बहुत नजीक नहीं (पास ही) यहां नंदन वन नाम का बाग था उस में सर्व ऋतु के पत्र फूल फलादि सदैव उत्पन्न होते थे यावत् वह देखने योग्य था ॥ ४ ॥ वहां नंदन वन नामक उद्यान में, सुरप्रिय नामक यक्ष का यक्षायतन (देवालय) था वह बहुत पुराना बहुत लोगों को माननीय बहुत रूपा था ॥ ५ ॥ उस सूर

भगवया महावीरेण जाव दुम लस भज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सण भंते ! छक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णाम नयरी होत्था दुवालस जोयणा यामा, णवजोयण विच्छिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोकभूया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥२॥ तीसेणं बारावईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए एत्थणं रेवय णाम पव्वए होत्था तुंगे गगणतल मणुलिहंतसिहर, णाणाविह रुक्ख

कुमार का ॥ १ ॥ यदि अहो भगवन् ! प्रथम वर्ग दशा के बारह अध्याय कहे हैं तो प्रथम अध्याय का क्या अर्थ कहा है ? अहो जम्बू ! उस काल उस समय में द्वारका नाम की नगरी थी वह बारह योजन (४८ कोश) लम्बी थी और नव योजन (३६ कोश) चौडी थी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक जैसी चित्त को प्रस करनवाली, आंखों से देखने योग्य, मनोहर, प्रतिबिम्ब पड ऐसी थी ॥ २ ॥ उस द्वारका नगरी के बाहिर उत्तर पूर्व दिशा के बीच ईशान कौन में यहां रेवति नाम का पर्वत था, वह ऊंचा मानो गगनतल का ही अवलम्बन कर रहा है शिखर जिस का अनेक प्रकार के आम्रादि के वृक्ष, चम्पकादि के गुच्छे, चम्पेलीआदि की लता, तोरियादि की वल्ली इत्यादि अनेक प्रकार की वनस्पति के समूह कर परिवरा हुआ अभिराम है उस पर्वत पर हंस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, कम्बे, मैना, सालुंकी, कोकिला इत्यादि विविध प्रकार के उत्तम हुवे पक्षीयों के समूह युगल विस क्रीडाकर रहे थे। उस पर्वत के मूल में न

रूप्पिणिपामोक्खाण सोलसण्ह देवीसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाण अणेगाणं गणिय साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूण रायाइसर जाव सत्थवाहप्पमिईणं वेयड्ढगिरि सागरमेरागस्स दाहिणड्ढ भरहस्सय आहेवच्चं जाव विहरति ॥ ८ ॥ तत्थण बारावईए णयरीए बलदेवे णाम राया होत्था महया जाव रज्ज पसाहेमाणे विहरति ॥ ९ ॥ तस्सण बलदेवस्स रण्णो रेवई णामं देवी होत्था, सुकुमाला जाव विहरति ॥ १० ॥ सतेणंसा रेवई देवी अण्णयाकयाइ तंसी तारगसी सयणिज्जंसि जाव सीहं सुमिणे

गणिका नृत्यकरने वाली कही, इस सिवाय और भी बहुत से राजा ईश्वर यावत् सार्थवाही मभृतिक सहित उत्तर दिशा में वैताढ्यगिरी पर्वत के नितम्ब पर्यंत और तीनों दिशा में समुद्र के तट पर्यन्त दक्षिण दिशा में रहा हुवा आधा भरत क्षेत्र का अधिपति पना करते हुए, पालते हुवे यावत् विचरते हैं ॥ ८ ॥ उस द्वारिका नगरी में बलदेव नामक राजा भी रहते हैं वे भी महाहिमवंत समान यावत् राज्य का पालन करते विचरते हैं ॥ ९ ॥ उस बलदेव राजा के रेवती नामक रानी थी वह सुकुमार सुरूपी थी यावत् पांचों इन्द्रिय के सुख भोगवती हुवे थे ॥ १० ॥ उस वक्त वह रेवती देवी पुण्यवंत माणी के शयन करने योग्य शैय्या में मखसे सोतीहुई यावत् सिंहका स्वप्न देखकर तत्काल जाग्रत हुई स्वप्नादि पाठकों को पूछा, कुंवर हुवा,

तस्सिणं असोगवरपायवे एगेणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते जहा पुण्णभद्दे जाव सिलापट्टए ॥ ६ ॥ तत्थणं बारवईए कण्हेनामं वासुदेवे राया जाव पसाहेमाणे विहरइ ॥ ७ ॥ सेणं तत्थ समुद्दविजय पामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेव पामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं उग्गसेण पामोक्खाणं सोलसण्हं रायसहस्साणं पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संब पामोक्खाणं सट्ठीए दुइंत साहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सीणं

भिय असोकवृक्ष एक बडे बगीचे कर चारों तरफ घेरा हुवा था उस के मध्य में अशोक वृक्ष था उस के भी पृथ्वीशीलामय सिंहासन संस्थान शिलापट था इस सब ६ बगीचे का सब वर्णन उववाई शास्त्र में पूर्णभद्र यक्ष का वर्णन किया है वैसा सब कहना ॥ ६ ॥ उस द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव राज्य करते थे यावत् राज्य के अनेकोत्तमगुण सहित थे ॥ ७ ॥ उन कृष्ण वासुदेव के वहां समुद्रविजय प्रमुख दस हजार पुरुष थे, बलभद्र प्रमुख पांच महावीर थे, उग्रसेन प्रमुख सोला हजार मुकुट बंध महाराजा थे, प्रद्युम्न कुमार प्रमुख साडे तीन क्रोड कुमार थे, सांब प्रमुख साठ हजार दुरदांत थे, वीरसेन प्रमुख इक्कीस हजार सूरवीर राजा थे, रुक्मणी प्रमुख सोला हजार रानीयों की अनंगसेना प्रमुख अनेक गण

रूप्पिणिपामोक्खाणं सोळसण्हं देवीसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणिय साहस्सीणं, अन्नेसिंच बहूणं रायाईसर जाव सत्थवाहप्पभिईणं वेयड्ढगिरि सागरमेरागस्स दाहिणड्ढ भरहस्सय आहेवच्चं जाव विहरति ॥ ८ ॥ तत्थणं बारावईए णयरीए बलदेवे णाम राया होत्था महया जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरति ॥ ९ ॥ तस्सणं बलदेवस्स रण्णो रेवई णामं देवी होत्था, सुकुमाला जाव विहरति ॥ १० ॥ ततेणंसा रेवई देवी अन्नयाकयाइ तंसी तारगसी सयणिज्जंसि जाव सीहं सुमिणे

गणिका नृत्यकरने वाली कही, इन सिवाय और भी बहुत से राजा ईश्वर यावत् सार्थवाही प्रमुख सहित उत्तर दिशा में वैताढ्यगिरी पर्वत के नितम्ब पर्यंत और तीनों दिशा में समुद्र के तट पर्यन्त दक्षिण दिशा में रहा हुवा आधा भरत क्षेत्र का अधिपति पना करते हुए, पालते हुवे यावत् विचरते हैं ॥ ८ ॥ उस द्वारिका नगरी में बलदेव नामक राजा भी रहते थे वे भी महाहमवंत समान यावत् राज्य का पालन करते विचरते थे ॥ ९ ॥ उन बलदेव राजा के रेवती नामक रानी थी वह सुकुमार सुरूपी थी यावत् पांचों इन्द्रिय के सुख भोगवते हुवे थे ॥ १० ॥ वहाँ एक वह रेवती देवी पुण्यवंत प्राणी के शयन करने योग्य शैय्या में मध्यमें सोतीहुई यावत् सिंहका स्वप्न देखकर तत्काल जाग्रत हुई स्वप्नार्थ पाठकों को पूछा, पुत्र हुवा,

पासित्ताण परिवुडा ॥ एव सुमेणदसण परिकहण कलाओ, जहा महाबलस्स णवर पणासदाउ पण्णास रायवर कण्णगाण एगादिवसेणं पाणिग्गाहणं णवर निसढणाम जाव उप्पिं पासाय विहरति ॥ ११ ॥ तेण कालेण तेण समएणं अरहा अरिट्ठनमी आदिकर दसधणइ वण्णओ जाव समोसरिए परिसा निग्गया ॥ १२ ॥ ततण स कण्हवासुदेव इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेति २ त्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सासु

कथा यहां सब कथन भगवती में महाबल कुमार का कहा है वैसा सब कहना इतना विशेष इन के पचासवर्ष दायक की आइ, एक ही दिन पचास राज्य कन्याओं के साथ पाणिग्रहण कराया और इतना विशेष इनका नाम निषध कुमार स्थापन किया यावत् भासादों के ऊपर की मनकों में पांचों इन्द्रिय के सुख भोगवते सुख से विचर रहे हैं ॥ ११ ॥ उस काल उस समय में अर्हन्त अरिष्टनेमी भगवान धर्म की आदी के करता यावत् दसधनुष्य ऊंचे शरीर के धारक द्वारका नगरी पधारे, नंदनवन उद्यान में उतरे परिषदा वंदने गई ॥ १२ ॥ उस वक्त भगवंत के आगमन की बधाई कृष्ण वासुदेव को प्राप्त हुई, वह बहुत ही हर्ष सन्तोष पाये, कुटुम्बिक पुरुषको बोलाकर यों कहने लगे अहो देवानुप्रिया ! शीघ्रता से

दाणिय भेरिं तालेहि ॥ १३ ॥ ततेणं से कोडुम्बिय पुरिसे जाव पडिसुणेत्ता, जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाणिय भेरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सामुदाणियं भेरिं महया २ सद्देणं तालेहि ॥ १४ ॥ ततेणं तीसे सामुदाणियभेरीए महया २ सद्देण तालीयाए समाणी समुद्दविजयपामोक्खाण दस दसार देवीओ भाणियव्वाओ जाव अणंगसेणा पामोक्खाण अणेगा गणियासहस्सा अन्नेय बहवे राईसर जाव सत्थवाह प्पभइओ ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकार विभूसिया जहा विभव इड्डीसक्कार

सौधर्मिक सभा में जाओ वहां सामुदानिक (सब लोगों को होशियार करने की) भेरी है उसे बजाओ ॥१३॥ तब वह कौटुम्बिक पुरुष विनय युक्त यावत् जाकर सौधर्मिक सभा में जहां वह भेरीथी वहां आकर सामुदानी भेरी महा २ शब्द कर बजाई ॥ १४ ॥ उस वक्त उस सामुदानिक भेरी का महा २ शब्दानु पात का प्रतिशब्द समुद्र विजयजी प्रमुख दश ही दशारों और सब ही उक्त प्रकार कहना यावत् अनंगसेना प्रमुख सब गणिकाओं इन सिवाय और भी बहुत से राजा ईश्वर (युवराज) यावत् सार्थवाही प्रमुतिक सब लोगोंने स्नान किया यावत् शुद्ध पवित्र बने, सर्व वस्त्रालंकार कर भूषणालंकार से अलंकृत हुवे, जिस २ प्रकार जिन के वैभव-ऋद्धि समुदाय था, उन प्रभ से सत्कारिक बने हुवे कितनेक हाथी पर बैठकर, कितनेक घोड़े पर बैठकर यावत् यथा

समुद्दएण अप्पेगइया हयगया जाव पुरिसवगुरा परिक्खित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल कण्हं वासुदेवं जयेणं विजयेणं वद्धावेति २ त्ता ॥ १५ ॥ ततेणसे कण्हेवासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अभिसेक हत्थी कप्पेह हयगय रह पवर जाव पच्चप्पिणंति ॥ १६ ॥ ततेणं से कण्हे वासुदेवे मज्जणघरं जाव दुरूढे अट्ठट्ठमंगलगा जहा

वणिक स्वारी पर स्वार हो, तथा पांवों से ही चलते हुवे अपने २ परिवार से परिवरे हुवे जहां कृष्ण वासुदेव थे तहां आये आकर हाथ जोडकर कृष्णवासुदेव को स्वदेश में जय हो परदेश में विजय हो इस प्रकार बधाये ॥ १५ ॥ तब कृष्ण वासुदेव कौटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगे—अहो देवानुप्रिय! शीघ्रता से अभिषेक [पाटवी] हस्ति और बयालीस हजार हाथी, बयालीस हजार घोडे, बयालीस हजार रथ अडतालीस क्रोड पायदल, सब सज्ज करके यह मेरी आज्ञा पीछी तुरत मुझे सुप्रत करो यावत् कौटुम्बिक पुरुषने उस ही प्रकार करके आज्ञा पीछी सुप्रत की ॥ १६ ॥ तब कृष्ण वासुदेव मज्जन-घर में प्रवेशकर कसरत मज्जन किया, वस्त्राभूषण से शरीर अलंकृत कर कि बहुना कल्प वृक्ष समान बने, बादल की घटा के चन्द्रमा ग्रह नक्षत्र तारागणों के परिवार से निकलता है यों यावत् सामंतादि के सब परिवार से परिवरे निकलकर बाहिर की उपस्थान शाला में आये, आभिषेक के हस्तिपर आरूढ हुवे,

कूणिओ सेयवर चामराहिं उद्धुव्वमाणेहिं २ समुद्दविजय पामोक्खे दसहिं दसारेहिं जाव सत्थवाहप्पभिईहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढिए जाव रवेण बारावइनगरि मज्झं मज्झेण सेस जहा कूणियस्स जाव पज्जुवासइ ॥ १७ ॥ ततेण तस्स निसढकुमारस्स उप्पिपासायवरगयस्स त महया जणसद्दं च जहा जमाली जाव धम्मसोच्चा निसम्म वंदइ नमसइ २त्ता एवं वयासी सद्दहामिणं भंते ! निग्गंथपावयणं जहा चित्तो जाव सावग धम्मं पडिवज्जइ २ त्ता पडिगते ॥ १८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ

हुवे, भाट २ मगल भागे लगे, जिस प्रकार महावीर भगवान के दर्शन करने को कोणिक राजा गया उस का कथन उववाइ सूत्र में कहा है वैसा यहां सब कहना यावत् श्वेत प्रधान चारों समरदोलिये हुवे समुद्र विजय प्रमुख दशोंदशार यावत् सार्थवाही प्रमुतिक सब परिवारस परिवरे सर्व ऋद्धि युक्त यावत् वादित्र के निर्घोष कर द्वारका नगरी के मध्यमध्य में से निकल कर श्प जैसा कोणिक राजा की तरह यावत् सेवा करने लगे ॥ १७ ॥ तब उस निषध कुमार को उपर प्रासाद में रहे हुवे रास्ते आते लोगों का महा शब्द श्रवन करके जिस प्रकार जमाली यावत् धर्म श्रवण किया अवधारण किया भगवंत को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगा अहो भगवन् ! मैंने निर्ग्रन्थ के प्रवचन का श्रद्धा न किया है, जिस प्रकार चित्त प्रधान का रायप्रसेनी सूत्र में कहा है जैसे इतनेमी श्रावक का धर्म धारा प्रत अंगीकार किये, करके पीछा गया ॥ १८ ॥ उस काल उस समय में अर्हन्त अरिष्टनेमी भगवत के

अरिहनमिस्स अन्तासी वरदत्तनामे अणगारे उराले जाव विहरति ॥ १९ ॥
ततण से वरदत्त अणगारे निसढ कुमार पासति २ त्ता जाव पज्जुवासमाणे एवं
वयासी अहोणं भंते ! निसढकुमार इट्ठ इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुन्नए
मणुन्नरूवे मणामे मणामरूवे, सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे निसढेणं भंते !
कुमार अयमेयारूवे मणुयइड्ढी किण्णालद्धा किण्णा पत्ता पुच्छा जहा सूरियाभस्स
॥ २० ॥ एवं खलु वरदत्ता ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवेदीवे भारहे
वासे रोहिडए णामं णगरे होत्था रिद्धत्थिमिय समिद्धा, मेहवणे णामं उज्जाणे माणि

शिष्य (वह समय) वरदत्त नाम के साधु उदार प्रधान गुणों के धारक यावत् गौतम स्वामी समान ध्यानकोष्ठोपगत विचरते थे ॥१९॥ तब उन वरदत्त साधुने निषध कुमार को देखकर यावत् श्रद्धा उत्पन्न हुई भगवंत अरिष्टनेमी के पास जाकर वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे—अहो भगवन् ! निषध कुमार इष्ट वल्लभ वल्लभकारी रूप, कांत-मनोहर, मनोहर कारीरूप, प्रियकारी, प्रियकारीरूप, मनोज्ञ मनोज्ञ कारीरूप, सोमनारूप सौम्य, मनोभावकारक रूप, देखते ही प्रीति उत्पन्न होवे वैसा प्रिय दर्शनी अच्छा रूप, अहो भगवन् ! निषध कुमार का इन प्रकार का स्वरूप की सम्पदा मनुष्य सम्बन्धि ऋद्धि किस किसकरनीसे मिली है प्राप्त हुई जिस प्रकार सूर्याभदेव सम्बन्धी प्रश्न गौतम स्वामीने रायप्रसेनीसूत्र में किया वैसा यहां भी वरदत्त अनगारने किया ॥ २० ॥ भगवंत बोले-यों निश्चय अहो वरदत्त ! उस काल उस समय में इसही जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र में रोहिड नामका नगर था, वह ऋद्धिकर समृद्धियुक्त था उस के बाहिर मघवन

मणस्स जक्खस्स जक्खायणे ॥२१॥ तरेयण रोहिडे णामं णगरे महाबले णाम राया, पउमावइ नामदेवी ततेणं सा पउमावई देवी अन्नयाकयाई तसी तारसगासि सयणिज्जासि सीह सुमिणे एवं जमणं मामियव्वं जहा महाबलस्स नवर विरंगउणाम बत्तीसाउ पाओ बत्ती साए रायवर कन्नागाण पाणी जाव उवगिज्झमाणा २ पाउसे वरिसरत्ते सरय हमते वसंत गिम्हा पज्जवे छप्पिउऊ जहा विभवमाण कालगालेमाणे इट्ठसद्दे जाव विहरति ॥२२॥ तेण कालेणं तेणं समएणं सिद्धत्था नाम आयरिया जाइसंपन्ना जहा केसी;

नामा बगीचा (बाग) था उस में मणिदत्त नामक यक्ष का यक्षायतन था ॥ २१ ॥ वहाँ रोहीड नगर में महाबल नामक राजा राज्य करता था उनके पद्मावती नाम की रानी थी उस पद्मावती रानीने अन्यदा किसी वक्त पुण्य रूप के भाग्यवान करने योग्य शैया में सूती हुई सिंह का स्वप्न देखा यों यावत् जन्म पर्यंत का सब कथन करना, जिस प्रकार भगवती सूत्र में महाबल कुमार का कहा है, जिस में इतना विशेष इन का नाम विरंगदत्त दिया, इसने बत्तीस राजाओं की कन्याके साथ पाणिग्रहण किया इन के बत्तीस २ दात दायजा की आई यावत् सुखोपभाग में उपगृद्ध हो १ पाउस ऋतु, २ वर्षाद ऋतु, ३ शरद ऋतु, ४ हमंत ऋतु, ५ वसंत ऋतु, और ६ ग्रीष्म ऋतु इस प्रकार छहों ऋतु के उचित भोगोपभोग में काल निर्गमन करते इष्टकारी शब्द रूप गंध रस स्पर्श भोगवते विचरते हैं ॥ २२ ॥ उस काल उस समय में सिद्धार्थ नामक आचार्य जाति संपन्नादि केशी स्वामी के जैसे गुण के धारक जिन में इतना विशेष यह बहुत सूत्र के पारगामी, बहुत साधुओं के परिवार से परिवरे हुवे जहाँ रोहिड नगर जहाँ मेघवन नामक

अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी वरदत्तनामे अणगारे उराले जाव विहरति ॥ १९ ॥
तएण से वरदत्ते अणगारे निसढ कुमार पासति २ त्ता जाव पज्जुवासमाणे एवं
वयासी अहोणं भंते ! निसढकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे, पिए पियरूवे, मणुन्नए
मणुन्नरूवे मणामे मणामरूवे, सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे निसढेणं भंते !
कुमारे अयमेयारूवे मणुयइड्ढी किण्णालद्धा किण्णा पत्ता पच्छा जहा सूरियाभस्स
॥ २० ॥ एवं खलु वरदत्ता ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवेदीवे भारहे
वासे रोहिडए णामं णगरे होत्था रिद्धत्थमिय समिद्धा, मेहवण्णे णामं उज्जाणे माणि

शिष्य (वर दत्त) वरदत्त नाम के प्रभु उदार प्रधान गुणों के धारक यावत् गौतम स्वामी समान
ध्यानकोष्ठोपगत विचरते थे ॥१९॥ तब उन वरदत्त साधुने निषध कुमार को देखकर यावत् भक्ति
उत्पन्न हुई भगवंत अरिष्टनेमी के पास आकर वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे—अहो भगवन् ! निषध
कुमार इष्ट वल्लभ इष्टकारी रूप, कांत-मनोहर, मनोहर कारीरूप, प्रियकारी, प्रियकारीरूप, मनोज्ञ मनोज्ञ
कारीरूप, सोमपनाकारी सौम्य, मनमें आनंदकारक रूप, दर्शन ही प्रति उत्पन्न होवे ऐसा प्रिय दर्शनी अच्छा रूप, अहो
भगवन् ! निषध कुमार को इस प्रकार का रूपसम्प की सम्पदा मनुष्य सम्बन्धि ऋद्धि किस किसकरनीसे मिली
है प्राप्त हुई जिस प्रकार सूर्याभदेव सम्बन्धी प्रश्न गौतम स्वामीने रायप्रसेनी सूत्रमें किया वैसा यहां भी वरदत्त
अनगारने किया ॥ २० ॥ भगवंत बोले-यों निश्चय अहो वरदत्त ! उस काल उस समय में इसही जंबूद्वीप
नामक द्वीप के भरत क्षेत्र में रोहिड नामका नगर था, वह ऋद्धिकर समृद्धियुक्त था उस के बाहिर मेघवन

मंचस्स जक्खस्स जक्खायणे ॥२१॥ तत्थण रोहिडे णामं णगरे महाबले णामं राया, पउमावई नामदेवी ततेण सा पउमावई देवी अन्नयाकयाई तंसी तारसगंसि सयणिज्जंसि सीह सुमिणे एवं जमणं भाणियव्वं जहा महाबलस्स नवर विरगदत्तनाम बत्तीसाओ दाओ बत्ती साए रायवर कन्नागाण पाणी जाव उवगिज्जमाणा ६ पाउसे वासिरत्ते सरय हेमंते वसंत गिम्हा पज्जंते छप्पिउऊ जहा विभवमाण कालंगालेमाणे इट्ठसद्द जाव विहरति ॥२२॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सिद्धत्था नाम आयरिया जाइसंपन्ना जहा केसी;

नामा उद्यान (बाग) था उस में मणिदत्त नामक यक्ष का यक्षायतन था ॥ २१ ॥ वहाँ रोहीड नगर में महाबल नामक राजा राज्य करता था उनके पद्मावती नाम की रानी थी उस पद्मावती रानीने अन्यदा किसी वक्त पुण्य स्थ के शयन करने योग्य शैया में सूती हुई सिंह का स्वप्न देखा यों यावत् जन्म पर्यन्त का सब कथन करना, जिस प्रकार भगवती सूत्र में महाबल कुमार का कहा है, जिस में इतना विशेष इन का नाम विरगदत्त दिया, इसने बत्ती राजाओं की कन्याके साथ पाणिग्रहण किया इन के बत्तीस २ दात दायज की आई यावत् मुखोपभाग में वपगूढ हो १ पाउस ऋतु, २ वर्षाद ऋतु, ३ शरद ऋतु, ४ हेमंत ऋतु, ५ वसंत ऋतु, और ६ ग्रीष्म ऋतु इस प्रकार छही ऋतु के उचित भोगोपभोग में काल निर्गमन करते इष्टकारी शब्द रूप गंधरस स्पर्श भोगवते विचरते हैं ॥ २२ ॥ उस काल उस समय में सिद्धार्थ नामक आचार्य जाति संपन्नादि केशी स्वामी के जैसे गुण के धारक जिन में इतना विशेष यह बहुत सूत्र के पारगामी, बहुत साधुओं के परिवार से परिवर हुवे जहाँ रोहिड नगर जहाँ मेघवन नामक

णवर घट गा बहुवारआरा जणव गाहट्ठण णयर जणव मह्वन्न उज्जाण, जणव माणि°स जक्खस्स नक्खायण तणव उवागए अहा पडिरूव जाय विहराति परिसा निग्गया ॥ २३ ॥ ततण तस्स वारगतस्स कुमारस्स उप्पि पासायवरगयस्स त महया जणसद्दय जहा जमाली निग्गओ धम्म सोच्चा ज नवर दवाणुप्पिया ! आपुच्छामि जहा जमाली तहेव निक्खतो जाव अणगार जाए जाव गुत्तबम्भयारी ॥ २४ ॥ ततण वारगतस्स अणगार सिद्धत्थण आयारयाण आतए सामाइय माइयाइ जाव एक्कारस अगाइ आहिज्जति ॥ बहूइ जाव चउत्थ अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ

उपान महा माणि°स यक्ष का यक्षायतन था। भाये यथा प्रतिरूप साधु को कल्प ऐसी वस्तु का अवग्रह याचा ग्रहण कर तप संयम से आत्मा भावते विचरन लगे परिषदा वन्दन को आई ॥ २३ ॥ उस वक्त विरंगदत्त कुमार ऊपर प्रसादों में रहा हुवा रास्ते जाते बहुत लोगों का महा शब्द श्रवण कर जिस प्रकार जमाली दर्शन करन आया वैसे ही यह भी आया धर्म श्रवण करके कहन लगा—अहो देवानुप्रिय ! मेरे माता पिताको पुछकर दीक्षा लेवूंगा यावत् दीक्षा धारण कर साधु हुवे यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बने ॥२४॥ तब वे वीरंगदत्त अनगार सिद्धार्थ आचार्य के पास सामायिकादि यावत् इग्यारे अंग पढ, फिर बहुत उप वास बेले तेले यावत् तपश्चर्या से अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरन लगे इस प्रकार प्रतिपूर्ण पैंतालीस (४५) वर्ष संयम पाला, दो महिने का संथारा आया आत्मा को झोंसकर एकसोवीसभक्त अनशनका

पणयालीस वासाइं सामन्न परियाग पाउणित्ता, दो मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सत्तीसं भत्तसय अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिकंते समाहिपत्ते कालमासे कालकिच्चा बमलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिइ पण्णत्ता, तत्थणं वीरंगयस्सदेवस्स दससागरोवमाइं ठिइ पण्णत्ता ॥ २५ ॥ सेणं वीरंगए देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं जाव अणंतरं चयंचइत्ता इहेव बारावईए नयरीए बलदेवस्स रण्णो रेवइ देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने ॥ २६ ॥ ततेणं सा रेवई देवी तंसी तारिसगंसी सयणिज्जंसि सुमिणं दंसणं जाव उप्पिं पासायवरगए विहरति ॥ २७ ॥ एवं खलु वरदत्ता !

छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण कर समाधी सहित काल के अवसर में काल पूर्ण कर पांचवे ब्रह्मदेव लोक के मनोरम नामक विमान में देवतापने उत्पन्न हुए तहां कितनेक देवताओं का दश सागरोपम का आयुष्य है, वहां विरंगत देव का भी दश सागरोपम की स्थिति कही ॥ २५ ॥ यह विरंगत देव उस देव लोक का आयुष्य भव स्थिति का क्षय कर यावत् अंतर रहित चवकर यहां द्वारका नगरी में बलदेव राजा की रेवति नामक रानी की कुक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुआ ॥ २६ ॥ तब वह रेवति रानी पुण्यात्म के शयन करने योग्य शय्या में सूती सिंह स्वप्न देख कर जागी यावत् ऊपर प्रसाद में सुख भोगवत विचरते थे, यहां तक का सब अधिकार कहना ॥ २७ ॥ इस लिये निश्चय अहो वरदत्त ! निषध कुमार को इस

णवर यह-या बहुगारवारा जणव गाहेड णयर जणव महवय उज्जाण, जणब माणिदत्त जक्खस्स जक्खायण तणव उवागए अहा पडिरूव जाय विहराति परिसा निग्गया ॥ २३ ॥ ततण तस्स वीरगतस्स कुमारस्स उप्पि पासायवरगयस्स त महया जणसद्दस्स जहा जमाली निग्गओ धम्म सोच्चा ज नवर देवाणुप्पिया ! आपुच्छामि जहा जम्माली तहेव निक्खंता जाव अणगार जाए जाव गुत्तबंभयारी ॥ २४ ॥ ततण वीरगतस्स अणगार सिद्धत्थण आयारयाण अंतिए सामाइय माइयाइं जाव एक्कारस अगाइं आहिज्जति ॥ बहूइ जाव चउत्थ अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं

पधान भरा पाणिग्रस पक्ष का पक्षापतन ता। भाये पप, प्रतिरूप साधु का कल्प ऐसी वस्तु का अवग्रह आज्ञा ग्रहण कर तप संयम से आत्मा भावते विचरने लगे परिषदा वंदन को आई ॥ २३ ॥ तब वीरंगदत्त कुमार ऊपर प्रसादों में रहा हुवा रास्ते जाते बहुत लोगों का महा शब्द श्रवण कर जिस प्रकार जमाली दर्शन करने गया वैसे ही यह भी आया धर्म श्रवण करके कहने लगा—अहो देवानुप्रिय ! मेरे माता पिता को पूछकर दीक्षा लूंगा यावत् दीक्षा धारण कर साधु हुवे यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बने ॥२४॥ तब वे वीरंगदत्त अनगार सिद्धार्थ आचार्य के पास सामायिकादि यावत् इग्यारे अंग पढे, फिर बहुत तप साम वैसे तैसे यावत् तपश्चर्या से अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे इस प्रकार प्रतिपूर्ण पेंतालीस (४५) वर्ष संयम पाला, दो महीने का संथारा भाया आत्मा को झोंसकर एकसोबीसभक्त अनशनका

पणयालीस वासाइ सामन्न परियाग पाउणित्ता, दो मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता सत्तीस भत्तसय अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिकते समाहिपत्ते कालमासे कालकिच्चा बभलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने तत्थणं अत्थेगइयाण देवाण दस सागरोवमाइ ठिइ पण्णत्ता, तत्थण वीरगयस्सदेवस्स दससागरोवमाइ ठिइ पण्णत्ता ॥ २५ ॥ सेण वीरगए देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिई क्खएण जाव अणतर चयचइत्ता इहेव बारावईए नयरीए बलदेवस्स रण्णो रेवइ देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने ॥ २६ ॥ ततेण सा रेवई देवी तसी तारिसगसी सयणि-ज्जसि सुमिण दसण जाव उप्पि पासायवरगए विहरति ॥ २७ ॥ एव खलु वरदत्ता !

छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण कर समाधी सहित काल के अवसर में काल पूर्ण कर पांचवे ब्रह्मदेव लोक के मनोरम नामक विमान में देवतापने उत्पन्न हुए, तहां कितनेक देवताओं का दश सागरोपम का आयुष्य है, वहां विरंगत देव का भी दश सागरोपम की स्थिति कही ॥ २५ ॥ वह विरंगत देव उस देव लोक का आयुष्य भव स्थिति का क्षय कर यावत् अंतर रहित चवकर यहां द्वारका नगरी में बलदेव राजा की रेवति नामक रानी की कुक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुआ ॥ २६ ॥ तब वह रेवति रानी पुण्यात्म के शयन करने योग्य शय्या में सूती सिंह स्वप्न देख कर जागी यावत् ऊपर प्रसाद में सुख भोगवते विचरते थे, यहां तक का सब अधिकार कहना ॥ २७ ॥ इस लिये निश्चय अहो वरदत्त ! निषध कुमार को इस

अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था धण्णाण ते गामागर नगर जाव सन्निवेसा जत्थणं अरहा अरिट्ठनेमी विहरति । तं धण्णा ण ते राईसर जाव सत्थवाह प्पभिएउ जेण अरहा अरिट्ठनमी वंदइ नमसइ जाव पज्जुवासति॥ जतिण अरहा अरिट्ठनमी पुव्वाणु पुव्वि चरमाण नंदणवणे विहरज्जा तण अहं अरहा अरिट्ठनमिं वंदिज्जा जाव पज्जुवासिज्जा ? ॥ १३ ॥ ततेण अरहा अरिट्ठनमी निसढ कुमारस्स अयमय रूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता, अट्ठारसेहिं समणसहस्सेहिं जाव नंदणवणे उज्जाण विहरति ॥ १४॥परिसा॥निग्गया॥ततेणं से निसढेकुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठा चाउघं

ण्टा ॥ १२ ॥ तब एक निषध कुमारको आधी रात्रि व्यतीत हुए धर्म जागरणा जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुवा धन्य है वह ग्राम आगर नगर यावत् सन्निवेस जिस स्थान अरिहंत अरिष्ट नेमी विचरते हैं धन्य है उन ग्राम ईश्वर यावत् सार्थवाही प्रमुखिक को जो अरिहंत अरिष्टनमी भगवंत को वंदना नमस्कार कर यावत् पर्युपासना करते हैं यदि भगवन्त अरिष्टनमी पूर्वानुपूर्व चलते हुए यहां नंदन वन उद्यान में पधारें तो मैं भी अरिष्टनमी भगवंत को वन्दना नमस्कार कर यावत् पर्युपासना सेवा करूं ॥ १३ ॥ तब वे भगवन्त अरिष्टनेम भगवान् । निषध कुमार के उक्त अभिप्राय को जाने यावत् अठारा हजार साधु के परिवार से परिवरे हुए यावत् नंदन वन उद्यान में विचरने लगे, परिषदा वंदने गई ॥ १४ ॥ तब निषध कुमार भगवन्त पधारने की कथा सुनकर हर्ष संतोष पाया चार घंट

णिसढे कुमारेणं अयमयारूवे उराले मणुयड्डि लद्धापत्ता अभिसमण्णागया ॥ २८ ॥ पमूण भंते ! निसढ कुमार देवाणुप्पियाण अंतए मुंडा जाव पव्वइत्ता ? हंता पभू से एव भंते! इह वरदत्त अणगार जाव अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥ २९ ॥ ततेण अरहा अरिट्ठनेमी अन्नयाकयाइं बारवईओ णयरीओ जाव बहिया जणवय विहार विहरित्तए ॥ ३० ॥ ततेण से निसढ कुमार समणोवासए जाए अभिगय जीवाजीवे जाव विहरति ॥ ३१ ॥ ततणं से निसढेकुमारे अन्नयाकयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २त्ता जाव दब्भ संथारोवगए विहरति ॥ ३२ ॥ ततेणं तस्स निसढकुमारस्स पुव्वरत्ता धम्मजागरियं जागरमाणे इमेयारूवे

प्रकार उदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धि मिली प्राप्त हुई है सन्मुख आई है ॥२८॥ अहो भगवन्! निषध कुमार आपके पास मुंडित हो दीक्षा ग्रहण करने को समर्थ है क्या ? हां वरदत्त ! समर्थ है इसका प्रमाणपर पालन कर वरदत्त साधु यावत् तप संयम कर अपनी आत्मा को भावते हुवे सुख से विचरने लगे ॥ २९ ॥ तब अरिहंत अरिष्ट नेमी भगवान अन्यदा द्वारका नगरी से विहार कर बाहिर जनपद देश में विचरने लगे ॥ ३० ॥ तब निषध कुमार श्रमण पासक श्रावक हुवे जीवादि नव पदार्थ के ज्ञान युक्त यावत् प्रकार का दान साधुओं को प्रतिलाभते विचरने लगे ॥ ३१ ॥ तब वह निषध कुमार अन्यदा किसी वक्त जहां पौषधशाला है तहां आया दर्भ का संथारा (बिछोना) बिछाया यावत् पौषध ग्रहण कर विचरने

मज्झेरियए जाव समुप्पज्जित्था धन्नाण ते गामागर नगर जाव सन्निवेसा जत्थणं अरहा अरिट्ठनेमी विहराति । तं धन्नाण ते राईसर जाव सत्थवाह प्पभिएउ जेणं अरहा अरिट्ठनेमी वंदइ नमसइ जाव पज्जुवासति ॥ जतिण अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्वि चरमाण नंदणवणे विहरज्जा तणं अहं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदिज्जा जाव पज्जुवासिज्जा ? ॥ १३ ॥ ततेण अरहा अरिट्ठनेमी निसढ कुमारस्स अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता, अट्ठारसेहिं समणसहस्सेहिं जाव नंदणवणे उज्जाणे विहरति ॥ १४ ॥ परिसा निग्गया ॥ ततेणं से निसढेकुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठा चाउघ

क्षगा ॥ १२ ॥ तब उस निषध कुमार को आधी रात्रि व्यतीत हुए धर्म जागरणा जागते हुए इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुवा धन्य है वह ग्राम आगर नगर यावत् सन्निवेश जिस स्थान अरिहंत अरिष्ट नेमी विचरते हैं धन्य है उन राजा ईश्वर यावत् सार्थवाही प्रमुख का जो अरिहंत अरिष्टनेमी भगवंत को वंदना नमस्कार कर यावत् पर्युपासना करते हैं यदि भगवंत अरिष्टनेमी पूर्वानुपूर्व चलते हुए यहां नंदन वन उद्यान में पधारें तो मैं भी अरिष्टनेमी भगवान को वंदना नमस्कार करूं यावत् पर्युपासना सेवा करूं ॥ १३ ॥ तब वे अर्हन्त अरिष्टनेमी भगवान निषध कुमार के उक्त अभिप्राय को जाने यावत् अठारा हजार साधु के परिवार से परिवरे हुए यावत् नंदन वन उद्यान में विचरने लगे, परिषदा वंदने गई ॥ १४ ॥ तब निषध कुमार भगवंत पधारने की कथा सुनकर हर्ष संतोष पाया चार घंट

णिसढ कुमारेण अयमेयारूवे उराले मणुयड्ढि लद्धापत्ता अभिसमण्णागया ॥ २८ ॥ पभूण भंते ! निसढ कुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइत्तए ? हंता पभू से एवं भंते ! इह वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ २९ ॥ ततेणं अरहा अरिट्ठनेमी अण्णयाकयाइ बारवईओ णयरीओ जाव बहिया जणवय विहारं विहारेत्तए ॥ ३० ॥ ततेणं से निसढ कुमारे समणोवासए जाए अभिगय जीवाजीवे जाव विहरति ॥ ३१ ॥ ततेणं से निसढकुमारे अण्णयाकयाइ जणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २त्ता जाव दब्भ संथारोवगए विहरति ॥ ३२ ॥ ततेणं तस्स निसढकुमारस्स पुव्वरत्ता धम्मजागरियं जागरमाणे इमेयारूवे

प्रकार उदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धि किसी प्राप्त हुई है सन्मुख आई है ॥२८॥ अहो भगवन्! निषध कुमार आपके पास मुण्डित हो दीक्षा ग्रहण करने को समर्थ है क्या ? हां वरदत्त ! समर्थ है इतना प्रश्नोत्तर श्रवण कर वरदत्त साधु यावत् तप संयम कर अपनी आत्मा को भावते हुवे सुख से विचरने लगे ॥ २९ ॥ तब अरिहंत अरिष्ट नेमी भगवान अन्यदा द्वारका नगरी से विहार कर बाहिर जनपद देश में विचरने लगे ॥ ३० ॥ तब निषध कुमार श्रमण पासक श्रावक हुए जीवादि नव पदार्थ के जान हुए यावत् चौदह प्रकार का दान साधुओं को प्रतिलाभते विचरने लगे ॥ ३१ ॥ तब वह निषध कुमार अन्यदा किसी वक्त जहां पौषधशाला है वहां आया दर्भ का संथारा (बिछौना) बिछाया यावत् पौषध ग्रहण कर विचरने

निसढे नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणए से णं भंते ! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने ? वरदत्ताइ ! अरहा अरिट्ठनेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी एवं खलु वरदत्ता ! मम अंतेवासी निसढेनामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणिए मम तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुइं पडिपुन्नाइं नववासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता बयालीसभत्ताइं अणसणाए छेदइ २त्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालंकिच्चा उड्ढं चंदिम सूरिय णक्खत्त गहगण तारारूवाणं सोहम्मीसाण जाव अच्चुए तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्ज विमाणा वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ तत्थणं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ तत्थणं निसढ देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई ॥ २७ ॥

दुवा ? वरदत्तादि को अरिहंत अरिष्टनेमी वरदत्त अनगार से यों कहने लगे–यों निश्चय अहो वरदत्त ! मेरा अंतेवासी (शिष्य) निषध नामक अनगार प्रकृति का भद्रिक यावत् विनीत मेरे तथारूप स्थविर के पास सामायिकादि इग्यारे अंग पढकर बहुत प्रतिपूर्ण नव वर्ष संयम पालकर बयालीस भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण कर समाधी सहित काल के अवसर काल कर ऊपर चन्द्रमा सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा को उल्लंघ कर सौधर्म ईशान यावत् अच्युत देवलोक नवग्रैवेयक के तीन सो अठारा विमानको उल्लंघ कर सर्वार्थ सिद्ध विमान में देवतापने उत्पन्न हुवा है वहां देवता की तेंतीस सागरोपम की स्थिति

रण आमरहण निगए जहा समाली जाव अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वइए अणगारे जाए जाव गुत्तबंभयारी ॥३५॥ तएण से निसढे अणगारे अरहा अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाण थेराण अंतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अंगाइ अहिज्जति बहूहिं चउत्थ छट्ठ जाव विचित्ताह तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे बहुइ पडिपुण्णाइ नव वासाइ सामन्नपरियाग पाउणइ बायालीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेइ आलोइय पडिक्कत समाहिपत्ते आणुपुव्विए कालगए ॥३६॥ तएण से वरदत्ते अणगारे निसढे अणगारे कालगय जाणित्ता जणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ२त्ता जाव एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी

वाले सम्पूर्ण भाकर शाकर निकला जिस प्रकार जमाली भगवत के दर्शन करने आया वैसा आया यावत् मात पिता को पूछकर दीक्षा धारन की साधु गुप्तब्रह्मचारी बन ॥ ३५ ॥ तब वे निषध अनगार अरिहन्त अरिष्टनेमी के तथारूप स्थविरों के पास सामायिकादि इग्यार अंग पढ बहुत उपवास बेला तेला यावत् विविध प्रकार के तप कर्म कर अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे बहुत परिपूर्ण नव वर्ष साधु पना पाला, बयालीस भक्त (२१ दिन) अनशन का छेदन किया, आलोचना प्रतिक्रमण युक्त समाधी सहित अनुक्रम से काल प्राप्त हुए ॥ ३६ ॥ तब वरदत्त अनगार निषध अनगार का काल प्राप्त हुए जानकर जहां अरिहन्त अरिष्टनेमी भगवत थे तहां आये वहां आकर यावत् यों कहने लगे—यों निश्चय अहो देवानुप्रिय ! आपका अन्तेवासी निषध नामक साधु प्रकृति का भद्रिक यावत् विनीत काल के अवसर में काल पूर्ण कर कहां गया कहां उत्पन्न

निसढे नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणए सेण भंते ! निसढअणगारे कालमासे काल किचा कहिं गए कहिं उववन्ने ? वरदत्ताति ! अरहा अरिट्ठनमी वरदत्त अणगारं एवं वयासी एव खलु वरदत्ता! मम अतवासी निसढेनाम अणगार पगइभद्दए जाव विणिए मम तहारूवाणं थेराणं अतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, बहुइं पडिपुन्नाइं नववासाइं सामन्नपरियाग पाउणित्ता बयालीसभत्ताइं अणसणाए छेदइ २त्ता आलोइय पडिक्कते समाहिपत्त कालमासे कालकिच्चा उड्ढंचदिम सूरिय णक्खत्त गहगण तारारूवाणं सोहम्मीसाणं जाव अच्चुए तिन्निय अट्ठारसुत्तरे गवेज्ज विमाण। वीससए वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ तत्थण देवाणं तेत्तीसं सागरो वमाइं ठिइ पण्णत्ता ॥ तत्थण निसढ देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई ॥ २७ ॥

हुवा ? वरदत्तादि को भरिहंत भरिष्टनेमी वरदत्त अनगार से यों कहने लगे—यों निश्चय अहो वरदत्त ! मेरा अंतेवासी (शिष्य) निषध नामक अनगार प्रकृति का भद्रिक यावत् विनीत मेरे तथारूप स्थविर के पास सामायिकादि इग्यारे अंग पढकर बहुत प्रतिपूर्ण नव वर्ष संयम पालकर बयालीस भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण कर समाधी सहित काल के अवसर काल कर ऊपर चन्द्रमा सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा को उल्लंघ कर सौधर्म ईशान यावत् अच्युत देवलोक नवग्रैवेयक के तीन सो अठारा विमानको उल्लंघ कर सर्वार्थ सिद्ध विमान में देवतापने उत्पन्न हुवा है तहां देवता की तेत्तीस सागरोपम की स्थिति

अप्पाणं भावेमाण बहूई वासाइं सामन्न परियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेह-णाए अत्ताणं झूसीहिति २ त्ता सट्ठिभत्ताइ अणसणाए छेदिइ २ त्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभाव मुंडभावे अण्हाणए जाव अदंत धोवणाए, अछत्तए अणोवाहणाए, फलहसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोए, बंभचेरवासे, परघर पवेसे, लद्धावलद्धे उच्चावया गामकंटया अहियासिति, तमट्ठं आराहेहिति आराहित्ता चरमेहिं उसासनी सासेहिं सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाण मत काहिति ॥ २१ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव निक्खेवओ ॥ इति पढम अज्झयण सम्मत्त ॥ १ ॥ • •

बर्ष साधु पर्याय का पालन करके एक महिने की संलेखना कर आत्मा को झोंसकर साठ भक्त अनशन छेदन करेंगे जिन के लिये क्रियानुष्ठान में सावध हुवे उस निर्ममत्वपन नग्न भाव कर लोच लिया कर मुंडभाव कर स्नान रहित, दांत मंजन रहित, सिरपर छत्र रहित, पांव में पगरखी आदि रहित भूमि शयन, पाट, कमा पर्यंपर शयन, काष्ठ पर शयन, केश का लोच करना, ब्रह्मचर्य में बसते आहार आदि के लिये परघर में प्रवेश करना, आहार आदि प्राप्त हुवे दर्जनीय अवकाश से छोड़ाये हुवे, पचन-श्रोते न्द्रिय को कांटे समान समभाव से सहना, इत्यादि का उस अर्थ आराधन किया, अन्तिम श्वासोश्वास में सिद्ध हुवे यावत् सर्व दुःख का क्षय करेंगे ॥ १९ ॥ यों निश्चय अहो जम्बू ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने प्रथम अध्ययन कहा, यह प्रथम निषध कुमार का अध्ययन संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ •

अण्णाणं भावेमाणे बहूई वासाई सामण्ण परियाग पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेह-णाए अत्ताणं झूसीहिति २ त्ता सट्ठिभत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए जाव अदंत धोवणए, अछत्तए अणोवाहणए, फलहसेज्जा, कट्ठसज्जा, केसलोए, बंभचेरवासे, परघर पवेसे, लद्धावलद्धे उच्चावया गामकंटया अहियासिति, तमट्ठं आराहेहिति आराहित्ता चरमेहिं उसासनी सासेहिं सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥ २१ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव निक्खेवओ ॥ इति पढम अज्झयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥ * *

वर्ष साधु पर्याय का पालन करके एक महिने की संलेषना कर आत्मा को झोंसकर साठ भक्त अनशन छेदन करेंगे जिन के लिये क्रियानुष्ठान में सावध हुवे उस निर्ममत्वपने नग्न भाव कर योग निग्रह रूप मुंडभाव कर स्नान रहित, दांत प्रक्षालन रहित सिरपर छत्र रहित, पांव में पगरखी आदि रहित अण-वाण पांव, कभी पाटियेपर शयन, कभी काष्ठ पर शयन, केश का लोच करना, ब्रह्मचर्य में बसते आहार आदि के लिये परघर में प्रवेश करना, आहार आदि मिले हुवे ऊंचनीच प्रकार से बोलाये हुवे, वचन श्रोते न्द्रिय को कांटे समान समभाव से सहते, इत्यादि का उस अर्थ आराधन किया, अन्तिम श्वासोश्वास में सिद्ध हुवे यावत् सब दुःख का क्षय करेंगे ॥ १९ ॥ यों निश्चय अहो जम्बू ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने प्रथम अध्ययन कहा, यह प्रथम निषध कुमार का अध्ययन संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥

सेण भंते! तिलउ देव ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएणं अणंतरं चइत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! इहेव जम्बूद्वीवे महाविदेह वासे रयणाए नगर ले...इ पइया रायकुले पुत्ताए पच्चायाहिति ॥ १८ ॥ ततेणं से उम्मुक्क बालभावे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलपण्णत्तं धम्मं सोच्चा मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिति, सेणं तत्थ अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए जाव बंभयारी ॥ सेणं तत्थ बहूहिं चउत्थछट्ठ अट्ठम दसम दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवो कम्मेहिं

करी वहां तिलक देव की भी तीन सागरोपम की स्थिति कही है ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! वह तिलक देव उस देवलोक से आयुष्य का भव का स्थिति का क्षय करके कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! इस ही जम्बूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में रतन नामक नगर में विशुद्ध मातापिता के कुल में पुत्रपने उत्पन्न होगा ॥ १८ ॥ जब वह बालभाव से मुक्त हो विज्ञान अवस्था को प्राप्त हो यौवन को प्राप्त होगा तब तथारूप स्थविर के पास केवली भाषित धर्म सुनकर गृहस्थाश्रम छोड साधुपना अंगीकार करेगा वे वहां अनगार होवेंगा, ईर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी, होगा वे वहां बहुत उपवास बेले तेले चोले पचोले पासखमण मासखमणादि विविध प्रकार के तप कर्म से अपनी आत्मा को भावते हुवे बहुत

निरियावलिकादि पांचों सूत्रों की विषयानुक्रमणिका.

इत्यनुक्रमणिका

निरियावलिका सूत्र की प्रस्तावना,

प्रणम्य श्रीजिनाधिश श्रीसद्गुरुने नम ॥निरियावलिकादि उपांगस्य, वार्तिक लिख्यते मया १॥

सब जिनों के ईश्वर श्री जिनेश्वर को और श्री सद्गुरु महाराज को नमस्कार करके अष्टम अंग निरियावलिका आदि द्वादशम उपांग वन्हिदशा शास्त्र का हिन्दी भाषामय अनुवाद करता हूं ॥१॥ इस में निरियावलिका आदी पांचों उपांग सूत्रों का एक ही सूत्र है '१ उपासगदशा शास्त्र का उपांग निरियावलिका सूत्र है, इस के दश अध्ययन में नरक गति गामी काली आदि दशों कुमारों का तथा श्रेणिक और वेहल कुमार के संग्राम का कथन है २ अन्तगडदशांग का उपांग कप्पवडिंसीया सूत्र है इस के दश अध्ययन में श्रेणिक राजा के पोते पद्मादि दशों कुमारों का संक्षेप में कथन है ३ अनुत्तरोववाई का उपांग पुप्फिया सूत्र है इस के दश अध्ययन में चन्द्र सूर्य शुक्रादि देवों की पूर्व भव की करणी आदि का कथन है ४ प्रश्नव्याकरण सूत्र का उपांग पुप्फ चूलिया सूत्र है जिस के दश अध्ययन में श्री, ह्री, धृति, कीर्ति आदि देवीयों की पूर्व करणी का कथन है और ५ विपाकजी सूत्र का वन्हिदशा उपांग है इस के दश अध्ययन में बलभद्रजी के निषढादि दशों कुमारों का कथन है इस प्रकार पांचों सूत्रों का सबन्ध जानना इस का उतारा एक मेरे पास की हस्त लिखित प्रतपर से किया गया है जिस २ स्थान त्रुटी पूरी करने का उपयोग लगा उस २ स्थान त्रुटी पूरी की है तथापि जो अशुद्धीयों रहगइ है उसे शास्त्र विशारदजी ! सुधार लीजे

शास्त्रोद्धार प्रारम्भ वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

इति
निरियावलिकादि पांच सूत्र
समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति वीराब्द २४४६ विजयादशमी